

"वह उसे समझाना चाहती थी कि जो कुछ हुआ ग़लत हुआ और अभी सब कुछ नष्ट नहीं हुआ है, जीवन को अभी भी सुन्दर और आनन्दमय बनाया जा सकता है, वह एक असाधारण, अद्भुत, महान व्यक्ति है और वह जीवन भर उसकी पूजा करेगी, उसके आगे सिर झुकाएगी और सदैव उसका पवित्र भय मानेगी..."

चेख़व



पाँच बेहतरीन कहानियाँ

पाँच बेहतरीन कहानियाँ

चेख़व

क्लर्क की मौत



वह एक सुन्दर रात थी जब होशियार क्लर्क, इवान दिमीत्रिच चेरव्यकोव* अव्वल दर्जे की दूसरी पंक्ति में बैठकर दूरबीन की मदद से 'लक्लोचेस दकर्नविल' का आनन्द ले रहा था। वह खेल देख रहा था ओर अपने को सबसे सुखी मनुष्य समझ रहा था, जब यकायक—'यकायक' एक घिसा-पिटा मुहावरा हो गया है, किन्तु लेखकों के सामने उसका प्रयोग करने के अलावा चारा ही क्या है, क्योंकि ज़िन्दगी की अचम्भों से भरी है—तो, यकायक उसका चेहरा सिकुड़ गया, उसकी आँखें आसमान की ओर बढ़ गईं, उसकी साँस रुक गयी...वह दूरबीन से मुँह हटाकर अपने स्थान पर दोहरा हो गया। ओर आक छी!...कहने का मतलब यह कि उसे छींक आ गयी। यूँ तो हर किसी को जहाँ चाहे छींकने का हक है, किसान, थाने के दरोगा, यहाँ तक कि प्रिवी कौंसिल के मेम्बर तक छींकते हैं—हर कोई छींकता है, हर कोई। चेरव्यकोव को इसमें कोई झेंप नहीं नहीं लगी, रूमाल से उसने अपनी नाम पोंछी और एक शिष्ट व्यक्ति की भाँति, यह देखने के लिए कि उसकी छींक से किसी को असुविधा तो

नहीं हुई, उसने चारों ओर निगाह दौड़ाई और तब वह सचमुच घबड़ा गया क्योंकि उसने एक छोटे से वृद्ध व्यक्ति को पहली पंक्ति में अपने ठीक आगे बैठा हुआ देखा जो सावधानी से अपनी गंजी खोपड़ी में और गरदन को अपने दस्ताने से साफ़ कर रहा था और कुछ बड़बड़ाता जा रहा था। चेरव्यकोव ने उस बूढ़े को पहचान लिया कि वह यातायात मन्त्रालय में सिविल जनरल ब्रिजालोव हैं।

"मैंने उनके ऊपर छींका है!" चेरव्यकोव ने सोचा। "वह मेरे अफ़सर नहीं है, यह सही है, किन्तु, तब भी यह कितना भद्दा है! मुझे माफ़ी माँगनी चाहिए।"

हल्के से खाँसकर, चेरव्यकोव आगे झुका और जनरल के कान में फुसफसाया—"मैं क्षमा प्रार्थी हूँ, महानुभाव, मैं छींका, था...मेरा यह मतलब नहीं था कि..."

"अजी, कोई बात नहीं!"

"कृपया मुझे क्षमा कर दें। मैं...यह जान-बूझकर नहीं हुआ था..."

"ईश्वर के लिए क्या तुम चुप नहीं रह सकते? मुझे सुनने दो!"

कुछ घबड़ाया हुआ चेरव्यकोव झेंप में मुसकराया और खेल की तरफ़ मन लगाने की कोशिश की।

वह अभिनेताओं को देख रहा था किन्तु अब वह अपने को दुनिया का सबसे ज़्यादा सुखी इन्सान नहीं समझ पा रहा था।

पश्चात्ताप में वह डूबा हुआ था। इंटरवल (मध्यान्तर) में वह ब्रिजालोव के पास पहुँचा, एक क्षण असमंजस में गुमसुम खड़ा रहा, फिर साहस बटोकर वह मिनमिनाया— "हुज़ूर! मैंने आप के ऊपर छींक दिया...मुझे क्षमा करें...आप जानते हैं...मेरा यह मतलब नहीं..."

"अरे! बस...मैं तो उसे भूल भी गया था, क्या तुम छोड़ोगे नहीं इस बात को?" जनरल ने कहा। बेसब्री से उसका अधर फड़क रहा था।

"वह कहते हैं कि वह भूल गये हैं, लेकिन मुझे उनकी आँखों का भाव ठीक नहीं लगा" चरेव्यकोव जनरल की ओर अविश्वासपूर्वक ताकते हुए सोच रहा था।

"मुझसे बात नहीं करना चाहते! मुझे उन्हें अवश्य समझाना चाहिए कि मेरा यह मतलब नहीं था कि...यह प्रकृति का एक नियम है, अन्यथा शायद वह यह सोच बैठें कि मैं उन पर थूकना चाहता था। अभी भले ही वह ऐसा न सोचे, लेकिन बाद में शायद वह साचेने लगें..."

घर पहुँचकर चेरव्यकोव ने अपनी पत्नी को अपने अभद्र व्यवहार के बारे में बताया। उसे लगा कि उसकी बीवी ने इस घटना की बात बड़ी बेपरवाही से सुनी। यह ठीक है कि एक पल के लिए तो वह अवश्य सहमी, पर यह जानकर कि ब्रिजालोव हमारा अफ़सर नहीं है वह निश्चिन्त-सी हो गयी।

"लेकिन मेरा ख़्याल है कि तुम्हें जाकर माफ़ी माँग लेनी चाहिए," उसने कहा, "अन्यथा यह सोचेंगे कि तुम्हें भले आदमियों में बैठने का शऊर नहीं है।"

"यही तो! मैंने माफ़ी माँगने की कोशिश की थी, पर इसका ढंग ऐसा अजीब था। कोई क़ायदे की बात ही नहीं की। फिर वहाँ बात करने का मौक़ा भरी नहीं था।"

अगले दिन चेरव्यकोव ने अपना दफ़्तरवाला नया कोट पहना, बाल कटवाए और ब्रिजालोव से माफ़ी माँगने गया। जनरल का मुलाक़ाती कमरा प्रार्थियों से भरा हुआ था। और जनरल खुद उनकी अर्ज़ियाँ सुन रहा था। उनमें से कुछ से बात करने के बाद जनरल की निगाह उठी और चेरव्यकोव के चेहरे पर जा अटकी।

"हुज़ूर, कल रात, 'आर्केडिया' में, अगर आपको याद हो," क्लर्क ने कहना शुरू किया "मैं...आ...मुझे छींक आ गयी थी, और...आ... ऐसा हुआ...मैं क्षमा चाहता..."

"उफ़, क्या बकवास है।" जनरल ने कहा और दूसरे आदमी से

पूछने लगा "मैं आप के लिए क्या कर सकता हूँ?"

"मेरी बात सुनेंगे नहीं!" डर से पीले पड़ते हुए चेरव्यकोव ने सोचा, "इसका मतलब है कि वह मुझसे बहुत नाराज हैं। बात यहीं ख़त्म नहीं की जा सकती...मुझे यह बात उन्हें समझा ही देनी चाहिए।"

जब जनरल अन्तिम प्रार्थी से बात करके अपने निजी कमरे की ओर जाने के लिए मुड़ा, चेरव्यकोव उनके पीछे भिनभिनाता हुआ जा पहुँचा—

"हुज़ूर, मुझे माफ़ करें। हार्दिक पश्चाताप होने के कारण ही मैं आपको कष्ट देने का दुस्साहस कर पा रहा हूँ।"

ऐसा लगा मानों जनरल चीख़ पड़ेंगे। हाथ से उसे जाने का इशारा करते हुए उन्होंने कहा—

"तुम मेरा मज़ाक उड़ा रहे हो, जनाब!" और उसके सामने दरवाज़ा बन्द कर दिया।

"मज़ाक़" चेरव्यकोव ने सोचा, "मुझे तो इसमें कोई मज़ाक़ की बात दिखाई नहीं देती। क्या वह समझते नहीं? और वह बड़े जनरल हैं! बहुत अच्छा, मैं इस भले आदमी को अब अपनी क्षमा प्रार्थनाओं से परेशान नहीं करूँगा। भाड़ में जाएँ वह! मैं उन्हें एक पत्र लिख दूँगा, मैं अब उनके पास जाऊँगा नहीं, हाँ, मैं नहीं जाऊँगार-बस।"

ऐसे ही विचारों में डूबा चेरव्यकोव वापस घर पहुँचा, पर उसने पत्र नहीं लिखा। उसने बहुत सोचा-विचारा, लेकिन वह यह नहीं तय कर पाया कि बात किन शब्दों में लिखी जाए। अतः अगले दिन फिर उसे मामला साफ करने के लिए जनरल के पास जाना पड़ा।

"श्रीमान! मैंने कल आपको कष्ट देने की जो हिम्मत की थी..." जब जनरल ने उस पर प्रश्नसूचक निगाह डाली, तो उसने कहना शुरू किया, "आप पर हँसने के लिए नहीं, जैसा कि हुज़ूर ने कहा, मैं आपके पास माफ़ी माँगने आया था, कि आपकी मेरी छींक से कष्ट हुआ...यहाँ तक आपका मज़ाक़ उड़ाने की बात है, मैं ऐसी

बात कभी सोच भी नहीं सकता, मैं यह हिम्मत कैसे कर सकता हूँ? अगर हम लोगों के दिमाग में ऐसे लोगों का मज़ाक़ बनाने की बात घर कर जाए, तो फिर सम्मान की भावना कहाँ रह जाएगी...बड़ों की कोई इज़्ज़त ही नहीं रह जाएगी..."

"निकल जाओ, यहाँ से!!!" गुस्से से काँपते, लाल पीले हो, जनरल चीख़ा।

भय से स्तम्भित हो, चेरव्यकोव फुसफुसाया, "क-क-क्या?"

पैर पकटते हुए, जनरल ने दोहराया, "निकल जाओ!!!"

चेरव्यकोव को लगा जैसे उसके भीतर तड़ाक से कुछ टूट गया हो, दिल डूब रहा हो।

जब वह लड़खड़ाते हुए पीछे चलकर दरवाज़े तक पहुँचा, दरवाज़े से बाहर आया और सड़क पर चलने लगा, तब वह न कुछ देख रहा था, न सुन रहा था, संज्ञाशून्य, यन्त्रचालित-सा वह सड़क पर बढ़ता गया; घर पहुँचकर वह दफ़्तरवाला कोट पहने ही जैसे का तैसा, सोफ़े पर गिर पड़ा और मर गया।

गिरगिट



पुलिस का दारोग़ा ओचुमेलोव* अपना नया ओवरकोट पहने, बग़ल में एक बंडल दबाये बाज़ार से गुज़र रहा था। उसके पीछे-पीछे लाल बालोंवाला पुलिस का एक सिपाही हाथ में एक टोकरी लिए लपका हुआ चला आ रहा था। टोकरी ऊपर तक बेरों से भरी हुई थी, जिन्हें उन्होंने उसी वक़्त ज़ब्त किया था। चारों ओर ख़ामोशी थी। चौक में एक भी आदमी नहीं, भूखों के जबड़ों की तरह खुले हुए दुकानों व सरायों के दरवाज़ें ईश्वर की सृष्टि को उदासी से भरी निग़ाहों से ताक रहे थे। यहाँ तक कि कोई भिखारी भी आसपास दिखाई नहीं देता था।

"अच्छा! तो तू कोटेगा? क्यों बे! शैतान कहीं का!" ओचुमेलोव के कानों में सहसा यह आवाज़ पड़ी, "पकड़ तो लो, छोकरों! जाने न पाए! अब तो काटने के खिलाफ़ भी क़ानून बन गया है! पकड़ लो! आ...आह!"

एक कुत्ते के पिपयाने की आवाज़ सुनाई दी। ओचुमेलोव ने उधर नज़र दौड़ाई जिधर से आवाज़ आयी थी। उसने देखा, कि

पिचुगिन की लकड़ी की टाल में एक कुत्ता तीन टाँगों से भागता हुआ चला आ रहा है। कलफ़दार छपी हुई कमीज़ पहने, वास्कट के बटन खोले एक आदमी उसका पीछा कर रहा है। जिसका बदन आगे की ओर झुका हुआ है, वह कुत्ते पर झपटता है, लपककर उसे पकड़ने की कोशिश करता है और गिरते-गिरते भी कुत्ते की पिछली टाँग पकड़ लेता है। कुत्ते की पें-पें फिर सुनाई दी, और साथ ही वही आवाज, "जाने न पाये।" ऊँघते हुए लोग गरदनें दूकानों से बाहर निकालकर लगे, और दखते-देखते एक भीड़ टाल के पास जमा हो गयी, मानों ज़मीन फाड़कर निकल आयी हो।

"हूज़ूर! मालूम पड़ता है कि वह झगड़ा-फ़साद है!" सिपाही बोला।

ओचुमेलोव मुड़ा और भीड़ की ओर चल दिया। टाल के दरवाज़े पर ही उसकी मुठभेड़ उस आदमी से हो गयी जिसकी वास्कट के बटन खुले हुए थे, जिसका ज़िक्र अभी ऊपर किया जा चुका है। वह अपना दाहिना हाथ ऊपर उठाये, भीड़ी को अपनी लहूलुहान उँगली दिखा रहा था। लगता था कि उसकी शराबियों जैसी सूरत पर साफ़ लिखा हुआ हो कि "अबे बदमाश!" और उसकी उँगली जीत का निशान मालूम पड़ती थी। ओचुमेलोव ने इस व्यक्ति को पहचान लिया। वह सुनार ख़ूकिन था। भीड़ के बीचोंबीच अगली टाँगे पसारे, मुजरिम—एक सफ़ेद बोर्ज़ोइ पिल्ला, दुबका पड़ा, ऊपर से नीचे तक काँप रहा था। उसका मुँह नुकीला था और पीठ पर पीला दाग़ था। उसकी आँसू भरी आँखों मे मुसीबत और डर की छाप थी।

"क्या हंगामा मचा रखा है यहाँ?" ओचुमेलोव ने कन्धों से भीड़ को चीरते हुए सवाल किया। "यह उँगली क्यों ऊपर उठाये हुए हो? कौन चिल्ला रहा था? तुम लोग यहाँ भीड़ क्यों लगाये हुए हो?"

"हुज़ूर! मैं चुपचाप अपनी राह जा रहा था बिल्कुल गऊ की तरह सीधा-सादा" ख़ूकिन ने अपने मुँह पर हाथ रखकर, खाँसते हुए कहना शुरू किया, "मित्र मित्रिच से मुझे लकड़ी के बारे में कुछ काम

था। एकाएक, मालूम नहीं क्यों, इस बदमाश ने मेरी उँगली में काट दिया। हुज़ूर माफ़ करें, पर मैं कामकाजी आदमी ठहरा... और फिर हमारा काम भी बड़ा पेचीदा है। एक हफ़्ते तक शायद मेरी यह उँगली काम के लायक़ न हो पाएगी। मुझे हरजाना दिलवा दीजिए। और, हुज़ूर, क़ानून में भी कहीं नहीं लिखा है कि हम ख़तरनाक जानवरों को चुपचाप बरदाश्त करते रहें। अगर सभी ऐसे ही काटने लगे, तब तो जीना दूभर हो जाएगा...''

''हूँ...अच्छा!'' ओचुमेलोव ने गला साफ़ करके, त्योरियाँ चढ़ाते हुए कहा, ''ठीक है...अच्छा, यह कुत्ता है किसका? मैं इस बात को यहीं नहीं छोड़ूँगा। कुत्तों को खुला छोड़ रखने के लिए मैं इन लोगों को मज़ा चखाऊँगा! जो लोग क़ानून के मुताबिक़ नहीं चलते, उनके साथ अब सख़्ती से पेश आना पड़ेगा! ऐसा जुर्माना ठोकूँगा—बदमाश कहीं के! मैं अच्छी तरह सिखा दूँगा उसे, कि कुत्तों और हर तरह के ढोर-डंगर को ऐसे छुट्टा छोड़ देने का क्या मतलब है! मैं ठीक कर दूँगा, उसे! येल्दीरिन!'' सिपाही को सम्बोधित कर दरोगा चिल्लाया, ''पता लगाओ कि यह कुत्ता है किसका और रिपोर्ट तैयार करो! कुत्ते को फ़ौरन मरवा दो; यह शायद पागल होगा। मैं पूछता हूँ यह कुत्ता है किसका?''

''शायद जनरल जिगालोव का हो।'' भीड़ी में से किसी ने कहा।

''जनरल जिगालोव का? हूँ...येल्दीरिन, ज़रा मेरा कोट तो उतार दे। ओफ़्फ़, बड़ी नरमी है... मालूम पड़ता है कि बारिश होगी, अच्छा, एक बात मेरी समझ में नहीं आती कि इसने तुम्हें काटा कैसे?'' ओचुमेलोव ख़ूकिन की ओर मुड़ा, ''यह तुम्हारी उँगली तक पहुँचा कैसे? यह ठहरा ज़रा-सा जानवर और तुम पूरे लहीम-शहीम आदमी! किसी कीलवील से उँगली छील ली होगी और सोचा होगा कि कुत्ते के सिर मढ़कर हर्जाना वसूल कर लो। मैं ख़ूब समझता हूँ। तुम्हारे जैसे बदमाशों की तो मैं नस-नस पहचानता हूँ!''

''इसने उसके मुँह पर जलती हुई सिगरेट लगा दी थी, हुज़ूर!

बस, यूँ ही, मज़ाक में। और यह कुत्ता बेवक़ूफ़ तो है नहीं, उसने काट लिया। यह सख़्स बड़ा कमीना है, हुज़ूर!;;

''अबे! काने! झूठ क्यों बोलता है? जब तूने देखा ही नहीं, तो उड़ाता क्यों है? ओर सरकार तो खुद समझदार हैं। सरकार खुद जानते हैं कि कौन झूठा है और कौन सच्चा। और अगर मैं झूठा हूँ, तो अदालत में फ़ैसला करा लो। क़ानून में लिखा है कि...अब हम सब बराबर हैं, खुद मेरा भाई पुलिस में है...बताये देता हूँ...हाँ...''

''अच्छा, बन्द करो यह बकबास!''

सिपाही ने गम्भीरतापूर्वक कहा, ''नहीं साहब, यह जनरल साहब का नहीं है, उनके पास ऐसा कोई कुत्ता है ही नहीं, उनके तो सभी कुत्ते शिकारी पौइण्टर हैं।''

''तुम्हें ठीक मालूम है?''

''जी, सरकार।''

''मैं जानता हूँ। जनरल साहब के सब कुत्ते अच्छी नस्ल के हैं, एक से एक क़ीमती कुत्ता है उनके पास। और यह! यह तो बिल्कुल ऐसा-वैसा ही है, देखो न! बिल्कुल मरियल ख़ारिश है। कौन रखेगा ऐसा कुत्ता? तुम लोगों का दिमाग़ तो ख़राब नहीं हुआ? अगर ऐसा कुत्ता मास्को या पीटर्सबर्ग में दिखाई दे तो जानते हो क्या हो? क़ानून की परवाह किए बिना, एक मिनट में उसकी छुट्टी पा ले जाए! ख़ूकिन! तुम्हें चोट लगी है। तुम इस मामले को यूँ ही मत टालो... इन लोगों को मज़ा चखाना पड़ेगा। ऐसे काम नहीं चलेगा।''

''लेकिन मुमकिन है, जनरल साहब का ही हो,'' कुछ अपने आपसे सिपाही फिर बोला, ''इसके माथे पर तो लिखा नहीं है। उन जनरल साहब के अहाते में मैंने कल बिल्कुल ऐसा ही कुत्ता देखा था।''

''हाँ, हाँ, जनरल साहब का तो है ही!'' भीड़ में से किसी की आवाज़ आयी।

''हूँ...येल्दीरिन ज़रा मुझे कोट तो पहना दो। अभी हवा का एक

झोंका आया था, मुझे सरदी लग रही है। कुत्ते को जनरल साहब के यहाँ ले जाओ और वहाँ मालूम करो। कह देना कि मैंने इसे सड़क पर देखा था और वापस भिजवाया है...और हाँ, देखो, यह भी कह देना कि इसे सड़क पर निकलने दिया करें...मालूम नहीं, कितना क़ीमती कुत्ता हो और अगर सुअर इसके मुँह में सिगरेट घुसेड़ता रहा तो कुत्ता बहुत जल्दी तबाह हो जाएगा। कुत्ता बहुत नाज़ुक जानवर होता है...और तू हाथ नीचा कर, गधा कहीं का!! अपनी गन्दी उँगली क्यों दिखा रहा है? सारा क़सूर तेरा ही है..."

"यह जनरल साहब का बावर्ची आ रहा है, उससे पूछा लिया जाए। ऐ प्रोख़ोर! इधर तो आना भाई! इस कुत्ते को देखना, तुम्हारे यहाँ का तो नहीं है?"

"अमाँ वाह! हमारे यहाँ कभी भी ऐसा कुत्ता नहीं था!"

"इसमें पूछने की क्या बात थी? बेकार वक़्त ख़राब करना है," ओचुमेलोव ने कहा, "आवारा कुत्ता है। यहाँ खड़े-खड़े इसके बारे में बात करना समय बर्बाद करना है। तुम से कह गया है कि सड़क पर

"हमारा तो नहीं है," प्रोख़ोर ने फिर कहा, "यह जनरल साहब के भाई का कुत्ता है। अभी थोड़े दिन हुए, वह यहाँ आये हैं। हमारे जनरल साहब को बोर्ज़ोई जाति के कुत्तों में कोई दिलचस्पी नहीं है, पर उनके भाई साहब! उन्हें यह नस्ल पसन्द है..."

"क्या? जनरल साहब के भाई आये हैं? व्लादीमिर इवानिच?" अचम्भे से ओचुमेलोव बोल उठा, उसका चेहरा आह्लाद से चमक उठा। "ज़रा सोचो तो! मुझे मालूम भी नहीं? अभी ठहरेंगे क्या?"

"हाँ साहब।"

"ज़रा सोचो, उन्होंने अपने भाई से मिलना चाहा और मुझे मालूम भी नहीं कि वह आये हैं तो यह उसका कुत्ता है? बहुत ख़ुशी की बात है। इसे ले जाओ...कैसा प्यारा नन्हा-मुन्ना सा कुत्ता है।

इसकी उँगली पर झपटा था? हा हा हा...बस बस, अब काँपों मत, गुर्र-गुर्र...शैतान गुस्से में है.. कितना बढ़िया पिल्ला है!..."

प्रोख़ोर ने कुत्ते को बुलाया और उसे अपने साथ लेकर टाल से चल दिया। भीड़ ख़ूकिन पर हँसने लगे।

"मैं तुझे ठीक कर दूँगा," ओचुमेलोव ने उसे धमकाया और अपना लबादा लपेटता हुआ बाज़ार के बीच अपने रास्ते चला गया।

नक़ाब



"एक्स" नाम के क्लब में किसी संस्था की सहायतार्थ ड्रेस-बाल डाँस या जैसा कि स्थानीय नवयुवतियाँ उसे पुकारती हैं, "बाल पारेय" हो रहा था, जिसमें लोग वेश बदलकर और चेहरों पर नक़ाब लगाकर नाचते हैं।

उस समय आधी रात थी। नाच में भाग न लेनेवाले बुद्धिजीवी 'ज्ञानी' लोग, जो नक़ाव नहीं पहने थे, वाचनालय में बड़ी मेज़ के चारों ओर बैठे हुए थे। संख्या में वे पाँच थे, उनकी नाक और दाड़ियाँ अख़बारों के पन्नों में दबी हुई थीं; वे पढ़ रहे रहे थे, ऊँघ रहे थे और राजधानी के समाचारपत्रों के स्थानीय उदारचेता विशेष सम्वाददाता के शब्दों में 'विचारमग्न' थे।

नाच घर से एक विशेष नाच, 'क्वेड्रिल' के संगीत की धुन आ रही थी। बैरे बार-बार दरवाज़े के पास से पैर खटखटाते और तश्तरियाँ खनखनाते हुए भाग-दौड़ कर रहे थे। किन्तु वाचनालय के भीतर गम्भीर शान्ति का साम्राज्य था।

एक घुटी हुई-सी गहरी आवाज़ ने, जो किसी सुरंग से आयी

मालूम देती थी, शान्ति भंग कर दी। "मैं समझता हूँ, हमें यहाँ ज़्यादा आराम रहेगा, चले आओ साथियों! इस तरफ़!"

दरवाज़ा खुला और एक चौड़े कन्धेवाला, नाटा, हट्टा-कट्टा व्यक्ति कोचवान की बर्दी पहने, अपनी टोपी में मोरपंख लगाये, नक़ाब लगाये, वाचनालय में घुसा। उसके पीछे नक़ाब लगाये दो महिलाएँ थीं। और किश्ती लिए बैरा था। किश्ती में चौड़े पेंदेवाले हलकी शराब की एक बोतल, लाल शराब की तीन बोतलें और कई गिलास थे।

"इस तरफ़ यहाँ ज़्यादा ठंडा रहेगा," उस आदमी ने कहा, "किश्ती मेज़ पर रख दो, कुमारियों बैठ जाओ! और आप सज्जनों, ज़रा जगह दीजिए, आप हमारी बातचीत में बाधक होंगे।" वह थोड़ा-सा डगमगाया और अपने हाथ से झाड़कर मेज़ पर से कई पत्रिकाएँ गिरा दीं। "रख दो उसे! और आप लोग रास्ते से हट जाइए! पढ़नेवाला सज्जनों! यह आप की राजनीति या अख़बार पढ़ने का वक़्त नहीं है...उन्हें अलग हटाइए!"

"मैंने कहा, आप थोड़ा शान्त रहें न!" पढ़ाकू ज्ञानियों में से एक अपने चश्मे से नक़ाबपोश की ओर घूरता हुआ बोला, "यह वाचनालय है, शराबख़ाना नहीं...यह शराब पीने की जगह नहीं है।

"कौन कहता है? क्या मेज़ मजबूत नहीं है? या हमारे ऊपर छत आ गिरेगी? क्या मज़ाक़ है! लेकिन मेरे पास बातें करने के लिए वक़्त नहीं है। आप अपने अख़बार रख दें...बहुत पढ़ चुके आप लोग और यह पढ़ाई काफ़ी है। वैसे ही आप लोग बहुत क़ाबिल हैं। इसके अलावा ज़्यादा पढ़ने से आप लोगों की आँखें खराब हो जाएँगी; लेकिन इससे ज़्यादा बड़ी बात यह है कि यहाँ यह नहीं होने दूँगा—बस।"

बैरे ने मेज़ पर किश्ती पर दी और झाड़न बाँह पर डाल, दरवाज़े पर खड़ा हो गया। महिलाओं ने तुरन्त लाल शराब उड़ेलनी शुरू कर दी।

"ज़रा सोचो तो! ऐसे भी बुद्धिमान लोग होते हैं जो ऐसी शराब से अख़बार ज़्यादा पसन्द करते हैं," मोरपंखोंवाले ने अपने लिए शराब उड़ेलते हुए कहा। "यह मेरा विश्वास है, आदरणीय महानुभावों कि आप लोगों को अख़बार इसलिए अधिक प्रिय है कि आपके पास शराब पीने के लिए पैसा नहीं है। क्या मैं ठीक कह रहा हूँ? हा हा हा...इन पढ़ाकुओं की ओर देखो...और आपके अख़बारों में लिखा क्या है? ए चश्मेवाले! हमें भी कुछ ख़बर बताओ? हा हा हा...अच्छा बन्द करो यह सब। रोब गाँठने की या तकल्लुफ़ बरतने की ज़रूरत नहीं है। लो थोड़ी शराब पिओ!"

मोरपंखवाले ने हाथ बढ़ाकर चश्मेवाले सज्जन के हाथ से अख़बार छीन लिया। चश्मेवाले भौचक्का हो दूसरे ज्ञानियों की ओर देखता हुआ गुस्से से लाल-पीला पढ़ने लगा; दूसरे ज्ञानी भी उसकी ओर देखने लगे।

"जनाब-आली! आप अपने आप को भूल गये हैं!" वह चिल्लाया। "आप वाचनालय को शराब के अड्डे में बदले डाल रहे हैं; आप हंगामा कर रहे हैं, लोगों के हाथ अख़बार छीन रहे हैं, और समझ रहे हैं कि यह सब ठीक है। पर मैं यह बरदाश्त नहीं कर सकता! आप जानते नहीं, जनाब, कि आप बात किससे कर रहे हैं। मैं बैंक मैनेजर जेस्त्याकोव हूँ!..."

"मुझे ख़ाक परवाह नहीं है कि तुम जेस्त्याकोव हो। और तुम्हारे अख़बार की मैं कितनी इज़्ज़त करता हूँ वह इसी से साबित हो जाएगी।" यह कहते हुए उसने अख़बार उठा लिया और फाड़कर उसके टुकड़े-टुकड़े कर डाले।

गुस्से से पागल हुआ जेस्त्याकोव बोला, "भले मानस। इसके मानी क्या है? यह तो बहुत अजीब बात है, यह...यह तो...बस भौचक्का कर देनेवाली बात है।"

"अब गुस्सा हो रहा हो!" यह व्यक्ति हँसते हुए बोला, "हाय, मैं कितना डर गया हूँ! देखो, डर के मारे मेरी टाँगे कैसी थर्रा रही

हैं...अच्छा, सज्जनों, अब मेरी बात सुनो मज़ाक़ अलग रहा, मैं आपसे क़तई बात नहीं करना चाहता...आप देख रहे हैं कि मैं इन कुमारियों के साथ एकान्त चाहता हूँ, मैं मौज करना चाहता हूँ, इसलिए, मेहरबानी करके गड़बड़ न मचाओ और यहाँ से चुपचाप चले जाओ...वह रहा दरवाज़ा श्री बेलेबूख़िन! निकल जाओ यहाँ से, जाओ जहन्नुम में! तुम इस तरह अपना थूथन क्यों उठा रहे हो? जब मैं कहता हूँ : जाओ, तो फ़ौरन चले जाओ...जल्दी, वरना उठाकर फेंक दूँगा!"

अनाथों की अदालत के ख़ज़ानची बेलेबूखिन ने क्रोध से लाल पड़ते हुए और कन्धे मटकाते हुए कहा, "क्या कहा तुमने? मेरी समझ में नहीं आता...कोई उद्दण्ड व्यक्ति कमरे में घुस आये और...एकाएक भगवान जाने क्या-क्या बकने लगे।"

"क्या कहा? उद्दण्ड?" क्रोध में मेज़ पर घूँसा मारते हुए जिससे किश्ती में रखे गिलास उछल पड़े, मोरपंखवाला आदमी चिल्लाया, "तुम समझते क्या हो? तुम किससे बात कर रहे हो? क्या तुम समझते हो कि मैं नक़ाब पहन हूँ, तो मुझे जो चाहो कह लोगे? तुम तो बड़े ख़रदिमाग़ हो! मैं कहता हूँ, निकल जाओ बाहर! और बैंक मनेजर भी यहाँ से रफ़ूचक्कर हो जाए! तुम सब बाहर निकल जाओ! मैं नहीं चाहता कि एक भी बदमाश इस कमरे में रहे। भागो...जाओ अपने सूअरख़ानों में!"

"वह हम देख लेंगे," जेस्त्याकोव बोला, जिसका चश्मा तक क्रोध में पसीना-पसीना होता मालूम पड़ रहा था। "मैं तुम्हें अभी दिखाता हूँ अरे कोई है? अरे, तुम ज़रा किसी मैनेजर—वैनेजर को तो बुलाओ!"

एक मिनट बाद, छोटे क़द का लाल बालोंवाला मैनेजर कोट के कालर में अपने पद का सूचक नीला फ़ीता लगाये, नाच की मेहनत से हाँफता हुआ कमरे में आया।

"कृपा कर इस कमरे को छोड़ दें!" उसने शुरू किया, "यह

पीने की जगह नहीं है! मेहरबानी करके जलपान-कक्ष में जाएँ।''

''और तुम कहाँ से आ टपके?'' नक़ाबवाला बोला, ''मैंने तो तुम्हें बुलाया नहीं था।''

''कृपया गुस्ताखी न करें और बाहर चले जाएँ।''

''देखिए, जनाब! चूँकि आप यहाँ के प्रबन्धक हैं और एक प्रमुख अधिकारी हैं मैं आपको एक मिनट का मौक़ा देता हूँ, इन कलाकारों को बाहर ले जाइए। मेरे साथ की ये कुमारियाँ आसपास किसी अजनबी का रहना पसन्द नहीं करती...वे शरमाती हैं और मैं अपने पैसे की पूरी क़ीमत चाहता हूँ, और उन्हें बिल्कुल वैसा ही देखना चाहता हूँ जैसा कि उन्हें प्रकृति ने बनाया था।''

''निश्चय ही यह सुअर यह नहीं समझ रहा कि वह अपने सुअरख़ाने में नहीं है,'' जेस्त्याकोव चिल्लाया, ''येवस्त्रात स्पिरिदोनिच को बुलाओ!''

''येवस्त्रात स्पिरिदोनिच!'' सारे क्लब में यही आवाज़ गूँज उठी। ''येवस्त्रात स्पिरिदोनिच कहाँ है?''

और शीघ्र ही वह आ पहुँचा; पुलिस की बर्दी पहने वह एक बूढ़ा आदमी था।

भारी गले से अपनी डरावनी आँखें तरेरते हुए और ख़िज़ाब से रंगी अपनी मूँछे हिलाते हुए वह बोला, ''मेहरबानी कर कमरा छोड़ दें।''

मज़ा लेकर वह व्यक्ति हँसते हुए बोला—

''सचमुच तुमने तो मुझे डरा ही दिया; भगवान की क़सम, बिल्कुल डरा दिया! कैसी मज़ाक़िया सूरत है! ख़ुदा की क़सम, बिल्ली की-सी मूँछे! बाहर निकल पड़ रही आँखें! ओफ़! हा हा हा...''

गुस्से से काँपता, अपना सारा दम लगाकर येवस्त्रात स्पिरिदोनिच चीख़ा, ''बहर बन्द करो! निकल जाओ, वरना मैं तुम्हें बाहर फेंकवा दूँगा!''

वाचनालय में हंगामा मचा हुआ था। लाल मास्टर बना स्पिरिदोनिच चिल्ला रहा था और पैर पटक रहा था। जेस्त्याकोव चिल्ला रहा था।

सभी 'बुद्धिजीवी' चिल्ला रहे थे। पर उन सब की आवाज़ें नक़ाबपोश की गले से निकली, दबी-घुटी, गम्भीर आवाज़ में डूब गईं। इस हो हल्ले में नाच बन्द हो गया और मेहमान लोग नाच घर से निकलकर वाचनालय में आ गये।

क्लब-भवन में जितनी पुलिस थी, असर डालने के लिए उस सबको बुलाकर स्पिरिदोनिच रिपोर्ट लिखने बैठा।

''लिख डालो,'' नक़ाबवाले व्यक्ति ने क़लम के नीचे उँगली घुसेड़ते हुए कहा, ''अब मुझ बेचारे का क्या होगा? हाय, मुझ ग़रीब का क्या होगा! आप लोग क्यों किसी अनाथ ग़रीब को बर्बाद करने पर तुले हुए हैं? हा हा हा...अच्छा तो फिर लिख डालो! क्या रिपोर्ट तैयार हो गयी? क्या सब लोगों ने इस पर दस्तख़त कर दिये अब देखो! एक, दो, तीन...''

वह उठ खड़ा हुआ, अपनी पूरी ऊँचाई तक माना गया और अपनी नक़ाब फाड़ डाली। अपना शराबी चेहरा दिखाने और उसमें पड़े असर का मज़ा लूटने के बाद वह अपनी आराम कुर्सी में धँस गया और खूब ज़ोर से हँसने लगा। सचमुच ही देखने लायक़ असर हुआ था। सभी बुद्धिजीवी हैरान नज़रों से एक-दूसरे की तरफ़ देखने लगे और डर से पीले पड़ गये, कुछ तो अपने सिर खुजलाते भी देखे गये। अनजाने में कोई भारी ग़लती कर डालनेवाले व्यक्ति की तरह स्पिरिदोनिच ने खँखारकर अपना गला साफ़ किया।

झगड़ा करनेवाले को सबने पहचान लिया था कि झगड़ालू व्यक्ति पुश्तैनी इज़्ज़तदार नागरिक प्यातिगोरोव है जो हुल्लड़बाजी व दानवीरता के लिए मशहूर है, और जिसके शिक्षा-प्रेम के बारे में स्थानीय समाचार-पत्र लिखते थकते नहीं थे।

''क्या अव आप लोग यहाँ से जाएँगे या नहीं?'' थोड़ा रुककर प्यातिगोरोव ने पूछा।

शोर मचाने के लिए पंजों के बल चलते हुए, बिना एक भी शब्द कहे, बुद्धिजीवी लोग कमरे के बाहर निकल आये और उनके पीछे

प्यातिगोरोव ने दरवाज़ा बन्द कर ताला लगा लिया।

"तुम जानते थे कि वह प्यातिगोरोव है," स्पिरिदोनिचत ने कुछ देर बाद वाचनालय में शराब ले जानेवाले वैरे के कन्धे झँझोड़ते हुए भारी आवाज में कहा, "तुमने कुछ कहा क्यों नहीं?"

"उन्होंने मुझे मना जो किया था।"

"मना किया था! ठहरो, बदमाश! मैं तुम्हें जब एक महीने के लिए जेल में ठूँस दूँगा, तब तुम्हें पता चलेगा कि 'मना किया था' के क्या मानी होते हैं। निकल जाओ!" फिर बुद्धिजीवी लोगों की ओर मुड़ते हुए स्पिरिदोनिच बोला, "और आप लोग भी खूब हैं! हड़बोंग मचा दिया, जैसे, दस मिनट के लिए आप वाचनालय छोड़ न सकते हों! ख़ैर, सारी गड़बड़ और मुसीबत आपकी ही लायी हुई है आप लोग ही अब निपटिए इससे। अरे साहब, भगवान के सामने कहता हूँ, मुझे ये तरीक़े पसन्द नहीं हैं, क़तई पसन्द नहीं है।"

मायूस, परेशान, पछताते हुए बुद्धिजीवी लोग एक-दूसरे से फुसफुसाते हुए क्लब में इधर-उधर घूम रहे थे, उन लोगों की तरह जिन्हें आनेवाली मुसीबत का पता लग गया हो। उनकी बीवियों और बेटियों पर यह सुनकर ख़मोशी छा गयी प्यारिगोरोव को बेइज़्ज़त किया गया है, वह बुरा मान गये हैं, और अपने-अपने घर चल दीं। नाच बन्द हो गया।

रात दो बजे प्यातिगोरोव वाचनालय के बाहर निकला। वह नशे में झूम रहा था। नाचघर में आकर वह बैण्ड की बग़ल में बैठ गया और बाजों की धुन पर ऊँघने लगा, ऊँघते-ऊँघते उसका सिर संतप्त मुद्रा में लटक गया और वह ख़र्राटे लेने लगा।

"बन्द करो बाजे" बैंडवालों को इशारा करते हुए मेनेजर बोला, "काश-श-श-श, येगोर नीलिच सो गये हैं।"

"क्या मैं आपको घर तक पहुँचा आऊँ, येगोर नीलिच?" करोड़पति के कानों तक झुकते हुए बेलेबूख़िन ने पूछा।

प्यातिगोरोव ने होठ बिचकाए, मानों गाल पर बैठी कोई मक्खी उड़ा रहा हो।

"क्या मैं आपको घर तक पहुँचा आऊँ?" बेलेबूखिन ने फिर कहा, "या आपकी गाड़ी लाने को कह दूँ?"

"हैं? क्या? आ हा! तुम हो! तुम क्या चाहते हो?"

"आपको घर पहुँचाना...सोने जाने का समय हो गया है न?"

"घर ! मैं घर जाना चाहता हूँ...मुझे घर ले चलो!"

सन्तोष से दमकते हुए बेलेबूख़िन ने प्यातिगोरेव को सहारा देकर खड़ा किया। बाक़ी बुद्धिजीवी लोग भी भागते हुए आ पहुँचे और ख़ुशी से मुसकुराते हुए उन सबने मिलकर ख़ानदानी इज़्ज़तदार नागरिक को उठाया और बड़ी सतर्कता के उसे गाड़ी तक पहुँचाया।

"कोई कलाकार, कोई अन्यन्त प्रतिभशाली व्यक्ति ही हम सब का ऐसा मज़ाक़ बना सकता था," करोड़पति को गाड़ी में बैठाते हुए प्रसन्नचित्त जेस्त्याकोव बड़बड़ाया। "मैं तो सचमुच आश्चर्यचकित हूँ, येगोर नीलिच! मैं हँसी नहीं रोक पा रहा, अब भी नहीं...हा हा हा...और हम सब इतने उत्तेजित हो गये और गड़गड़ करने लगे! हा हा हा, आप विश्वास करें, मैं नाटक में भी इतना कभी नहीं हँसा! हास्य की इतनी गहराई! ज़िन्दगी भर यह अविस्मरणीय साँझ मुझे याद रहेगी!"

प्यातिगोरोव को पहुँचाने के बाद बुद्धिजीवी लोग प्रसन्न व आश्वस्त हो गये।

जेस्त्याकोव ने ख़ुशी में डींग मारी, "उन्होंने मुझसे हाथ मिलाया! तो अब सब ठीक है, वह नाराज़ नहीं हैं।"

लम्बी साँस लेकर स्पिरिदोनिच बोला, "भगवान करे, वह बदमाश है, खराब आदमी है, पर वह हमारा हितकारी है। हमें होशियारी बरतनी चाहिए!"

तितली



ओल्गा इवानोव्ना के तमाम दोस्त और जान पहचान के लोग उसकी शादी में सम्मिलित हुए।

"उसको देखो, उसमें कुछ है, है न?" वह अपने दोस्तों से कह रही थी। ज़ाहिर था कि वह यह सफ़ाई देने को उत्सुक थी कि कैसे वह एक मामूली आदमी से, जो किसी भी मानी में उल्लेखनीय नहीं था, शादी करने को राज़ी हो गयी थी।

उसका पति ओसिप स्पेपानिच दीमोव सिर्फ़ उपाधि से सलाहकार था और पेशे से डॉक्टर। वह दो अस्पतालों में काम करता था, एक में अस्पताल में न रहनेवाले डॉटकर के रूप में और दूसरे में मुरदों की चीरफाड़ के डॉक्टर की हैसियत से। नौ बजे से बारह बजे तक वह आनेवाले मरीज़ों को देखता और वार्डों का मुआइना करता और तीसरे पहर घोड़ोंवाली ट्राम में दूसरे अस्पताल चला जाता जहाँ मरनेवाले मरीज़ों के शवों की चीरफाड़ कर परीक्षा करता। उसकी व्यक्तिगत प्रेक्टिस बहुत कम थी, लगभग 500 रूबल सालाना। बस। उसके बारे में और कोई खास बात नहीं थी। पर ओल्गा

इवानोव्ना और उसके दोस्त को किसी तरह से साधारण नहीं कहा जा सकता था। उनमें से हर एक किसी-न-किसी तरह से प्रख्यात था और बिल्कुल अज्ञात तो हरगिज़ नहीं था। उन लोगों का नाम हो गया और उन लोगों ने थोड़ी बहुत प्रसिद्धि प्राप्त कर ली थी और अगर वे पूरी तौर पर प्रसिद्धि न भी पा चुके थे तो भी उज्जल भविष्य का परिचय दे चुके थे। एक अभिनेता था जिसकी नाट्य प्रतिभा को स्वीकार कर लिया गया था। वह शुद्ध, चतुर, विवेकपूर्ण था और सुन्दर ढंग से पाठ करता था और ओल्गा-इवानोव्ना को सम्भाषण की शिक्षा देता था। दूसरा एक ओपेरा का गायक था, मोटा और हँसमुख। वह आह भर कर ओल्गा इवानोव्ना को यकीन दिलाता कि वह अपने को बर्बाद कर रही है। अगर वह इतनी काहिल न होती, अगर वपह अपने पर काबू रखती तो वह बहुत अच्छी गायिका बन सकती है। इनके अलावा कई कलाकार थे जिनमें सब में प्रमुख र्‌योबोवस्की था, जो समस्या चित्रकार था, जानवरों और प्राकृतिक दृश्यों का चित्रण करता और लगभग पच्चीस साल की उम्र का बहुत सुन्दर भूरे बालोंवाला नवयुवक था। प्रदर्शनियों में उसके चित्रों की प्रशंसा होती थी। और सबसे नया चित्र पाँच सौ रूबल में बिका था। वह ओल्गा इवानोव्ना के रेखाचित्र सुधार देता और उसका हमेशा कहना था कि शायद वह चित्रकार बन जाए; और एक सेलो वॉयलिन बजानेवाला भी था जो बाजे पर रुदन की धुन बजा सकता था। जिसकी खुली घोषणा थी कि उसकी तमाम परिचित औरतों में केवल ओल्गा इवानोव्ना उसके साथ संगत करने में समर्थ थी। फिर लेखक, नौजवान लेकिन ख्याति प्राप्त, जिसने लघु-उपन्यास, नाटक और कहानियाँ लिखीं थीं। और कौन? हाँ, वासीली वालीलिच भी था जो कुलीन ज़मींदार था और जो शौकिया पुस्तकों पर चित्र और बेलबूटे बनाता और जिसे प्राचीन रूसी शैली से और पौराणिक गाथाओं से सच्चा प्रेम था। वह क़गज़ों, चीनी के बरतनों और तपी तश्तरियों पर आश्चर्यजनक चित्र बना सकता था। इस कलापूर्ण, उदार समाज में,

भाग्य के इन प्रियपात्रों में, जिन्हें सभ्य और शिष्ट होते हुए भी डाक्टर के अस्तित्व को सिर्फ़ बीमार पड़ने पर याद आती थी और जिनके कानों के लिए दीमोव सिदोरोव, तारासोव जैसा साधारण नाम था। उनके बीच दीमोव एक अजनबी, छोटा और फ़ालतू-सा व्यक्ति मालूम पड़ता था, हालाँकि वह लम्बा और चौड़े कन्धों वाला था। उसका कोट ऐसा लगता था कि किसी दूसरे के लिए बनाया गया है और एक दूकान कर्मचारी की भाँति उसकी दाढ़ी थी। यह सही है कि अगर वह लेखक अथवा कलाकार होता, तो हर एक कहता कि दाढ़ी की वजह से वह (विख्यात फ्रांसीसी लेखक) ज़ोला की तरह लग रहा है।

अभिनेता ओल्गा इवानोव्ना से कह रहा था कि भूरे बालों व शादी की पोशाक में वह चेरी पेड़ की तरह लग रही थी। उतनी ही सुन्दर जैसा कि वसन्त में सफ़ेद फूलों से लदा चेरी का पेड़।

''नहीं, पर सुनो तो!'' ओल्गा इवोनोव्ना उसका हाथ पकड़ते हुए कह रही थी। ''ऐसा हुआ कैसे? मेरी बात सुनो, सुनो...तुम जानते हो कि मेरे पिता और दीमोव एक ही अस्पताल में काम करते थे। बिचारे पिता जी जब बीमार पड़े तो दीमोव ने रात-दिन उनके बिस्तर के पास रहकर देखभाल की। ऐसा आत्मत्याग! सुनो, रयबोवस्की और तुम भी सुनो लेखक! तुम्हें बात बहुत दिलचस्प मालूम होगी। नज़दीक आ जाओ। ऐसा आत्मत्याग, ऐसी सच्ची हमदर्दी! मैं भी रात को नही सोई, मैं अपने पिता के पास बैठी रही और बिल्कुल ऐसे ही। मेरा दीमोव मुहब्बत में दीवाना हो गया। भाग्य कैसा अजीब हो सकता है! ख़ैर, मेरे पिता की मृत्यु के बाद, कभी-कभ दीमोव मुझसे मिलने आता और हम कभी-कभी घर से बाहर भी मिलते और एक दिन-अरे! लो! देखो शादी का प्रस्ताव! जैसे आसमान से बिजली गिरी...मैं सारी रात रोई, मैं भी प्रेत में दीवानी हो गयी। और अब मैं एक शादीशुदा औरत हूँ। उसमें एक मज़बूती, एक शक्ति, एक भालू-सी प्रवृत्ति है, है न? उसमें उसका तीन चौथाई चेहरा हमारी

तरफ़ है, रोशनी गलत पड़ रही है, लेकिन जब वह अपना चेहरा पूरी तरह हमारी तरफ़ घुमाये तो उसके माथे को देखना। ऐसे माथे के बारे में तुम्हारा क्या कहना है, र्याबोवस्की? दीमोव, हम तुम्हारे बारे में ही बातें कर रहे हैं!'' उसने चिल्लाकर अपने पति से कहा। ''यहाँ आओ और र्योबोवस्की से अपना ईमानदार हाथ मिलाओ...यह ठीक है। तुम्हें दोस्त होना चाहिए।''

दीमोव ने र्योबोवस्की की तरफ़ हाथ सरल और प्रसन्नतापूर्ण मुस्कराहट के साथ बढ़ा दिया।

''बहुत खुशी हुई'' उसने कहा, ''कालिज में मेरे साथ एक स्नातक र्याबोवस्की था। मेरे ख्याल में, वह आपका कहीं रिश्तेदार तो नहीं था?''

2

ओल्गा इवानोव्ना बाईस साल की थी और दीमोव इकतीस का। शादी के बाद उनका जीवन अत्यन्त सुखी हो गया। अपनी बैठक की दीवारों को ओल्गा इवानोव्ना ने अपने और अपने दोस्तों के मढ़े और अनमढ़े रेखाचित्रों से भर दिया। बड़े पियानो और कुर्सी मेज़ों के चारों ओर उसने चीनी छाते, चित्र रखने की तिपाइयों, कई रंगों के परदों, कटारियों छोटी-छोटी मूर्तियों, तस्वीरों आदि कलापूर्ण वस्तुओं से भर दिया...खाने के कमरे में उसने सस्ती रंगीन तस्वीर, लाइम की छाल कि जूते और हँसिये दीवारों पर टाँग दिये और एक कोने में हँसिया और पचाँगुरा रख दिया और इस तरह से खाने का कमरा बिल्कुल रूसी ढंग का बना लिया। सोने के कमरे की दीवारों और छतों पर उसने गहरे रंग के परदे लगा दिये ताकि वह गुफ़ा-सी मालूम हो, बिस्तारों के ऊपर वैनिस के लैम्प लगा दिये और दरवाज़ों पर फरसा लिए एक मूर्ति खड़ी कर दी। हर एक ने कहा कि नव दम्पत्ति ने अपने लिए बहुत आरामदेह नीड़ तैयार कर लिया है।

ओल्गा इवानोव्ना हर रोज़ ग्यारह बजे जागती, पियानों बजाती या अगर धूप होती तो तैल चित्र बनाती। बारह के थोड़ी देर बाद वह

अपनी दर्ज़िन के यहाँ जाती। उसके और दीमोव के पास बहुत थोड़ा पैसा था, सिर्फ़ ज़रूरत भर के लिए काफ़ी, और अगर उसे बराबर नयी पोशाकें पहननी थीं ताकि औरों पर रौब पड़े, उसे और उसके दर्जिन को हर मुमकिन चालाकी करनी पड़ती। बार-बार पुरानी रंगी हुई फ्रॉक और टूल व लेस के कुछ टुकड़ों के अचम्भे कर दिखाये जाते और पोशाक नयी बिल्कुल बढ़िया चीज़ एक सपना-सा बनकर तैयार कर दी जाती। दर्ज़िन ये यहाँ से आम तौर पर वह अपनी किसी परिचित अभिनेत्री या किसी के सहायतार्थ खेल के लिए टिकट पा लेने की कोशिश करती। अभिनेत्री के यहाँ से उनको किसी कलाकार का स्टूडियो या चित्र-प्रदर्शनी देखने जाना पड़ता और फिर वहाँ से किसी ख्याति प्राप्त व्यक्ति के यहाँ, उसे अपने घर बुलाने के लिए, मुलाकात का जवाब देने, अथवा सिर्फ़ गपशप करने के लिए जाना होता। हर जगह अपनत्व और ख़ुशी से उसका स्वागत किया जाता और उसे विश्वास दिलाया जाता कि वह अच्छी, असाधारण, प्यारी है...जिनको यह महान और विख्यात कहती थी। वे उसका बराबरी के दर्जे से स्वागत करते और उनकी सर्वसम्मत राय थी कि अपने गुणों, दिमाग और रुचि के कारण वह अवश्य ऊँची उठेगी, अगर वह अपनी प्रतिभा को इतनी दिशाओं में बर्बाद करना बन्द कर दे। वह गा लेती, पियानो बजा लेती, तैल चित्र बना लेती, मिट्टी की मूर्तियाँ बना लेती, शौकिया नाटकों में अभिनय करती, और यह सब काम यूँ ही, मामूली से नहीं बल्कि वास्तविक प्रतिभा का प्रदर्शन करते हुए। वह जो भी काम करती, चाहे रोशनी के लिए लालटेन बनानी हो, पोशाक पहनती हो, और चाहे किसी को मामूली-सी टाई बाँधनी हो, कलापूर्ण, सुघड़ और मोहक हो जाता। लेकिन किसी भी चीज़ में उसकी प्रतिभा इतनी अच्छी तरह प्रदर्शित न होती जितनी कि ख्याति प्राप्त लोगों से तत्काल दोस्ती और आत्मीयता उत्पन्न कर लेने में। जैसे ही कोई ज़रा-सा भी नाम करता या उसक बारे में चर्चा शुरू होती, ओल्गा इवानोव्ना फ़ौरन दोस्त बन जाती और उस व्यक्ति

को अपने यहाँ आमन्त्रित कर लेती। प्रत्यके नयी जान-पहचान उसके लिए एक सुनहरा दिन होती। वह प्रसिद्ध व्यक्तियों की पूजा करती थी, वह उन पर गर्व करती और रात में उन्हीं लोगों को सपने में देखती। ख्यातिप्राप्त लोगों से जान पहचान की उसकी प्यास बहुत प्रबल थी, जिसको वह कभी बुझा न पाती। पुराने मित्र विलीन हो जाते और भुला दिये जाते, उनकी जगह नये मित्र ले लेते लेकिन थोड़े ही दिनों में वह इनसे भी उकता जाती थी, या उनसे निराश हो जाती और वह उत्सुकता से नये दोस्त, नये विख्यात लोगों को खोजने लगती और जब उन लोगों को पा लेती तो दूसरे मित्रों को तलाश में रहती। किसलिए?

चार और पाँच बजे के बीच वह अपने पति के साथ घर पर भोजन करती। दीमोव की सादगी, सहजबुद्धि और हँसमुख स्वभाव उसको प्रशंसा और आह्लाद की दशा में पहुँचा देता। वह लगातार कूदती और दीमोव की गरदन में बाँह डालकर उसके माथे पर चुम्बनों की बौछार कर देती।

"तुम बुद्धिमान और उदार व्यक्ति हो, दीमोव," उसने दीमोव ने कहा, "लेकिन तुम में एक बहुत दोष है। तुम कला में रंचमात्र भी दिलचस्पी नहीं लेते। तुम तो संगीत और चित्रकला की अवहेलना करते हो।"

मैं उन्हें समझता नहीं," उसने नम्रता से कहा। "सारी उम्र मैंने विज्ञान और चिकित्सा का अध्ययन किया है और कभी भी कला के लिए मेरे पास समय नहीं रहा।"

"लेकिन यह तो बहुत बुरा है, दीमोव!"

"क्यों? तुम्हारे दोस्त विज्ञान और चिकित्सा के बारे में कुछ नहीं जानते और तुम्हें उन लोगों से शिकवा नहीं है। हर एक का अपना क्षेत्र होता है। प्राकृतिक दृश्यों के चित्र या ओपेरा मेरी समझ में नहीं आते, लेकिन मैं तो इसको इस नजर से देखता हूँ कि चूँकि कुछ होशियार आदमी इन चीज़ों में सारी ज़िन्दगी लगा देते हैं, और दूसरे

ओल्गा इवानोव्ना घबराकर ज़हरबाद शुरू होने की आशंका में रही और हर रात प्रार्थना करती रही कि ज़हरबाद न हो। सब परेशानी आसानी से ख़त्म हो गयी। और पहले की तरह सुखी और शान्तिपूर्ण चिन्ता व कष्टहीन जीवन का ढर्रा फिर चल पड़ा। वर्तमान सुन्दर था ही और जल्दी ही वसन्त आनेवाला था। दूर से मुस्कराता हुआ उन्हें हज़ार खुशियों का सुखद आश्वासन देता हुआ कि सदैव प्रसन्नता ही रहेगी। अप्रैल, मई और जून में के लिए मास्को नगर से बहुत दूर देहात की कुटी होगी जहाँ टहलना, रेखाचित्र बनाना, मछली पकड़ना और बुलबुलें होंगी और जब जुलाई के पतझड़ तक वोल्गा पर कलाकारों की उल्लास यात्रा, जिसमें ओल्गा इवानोव्ना स्थायी सदस्या के रूप में हिस्सा लेगी। उसने पटुए की दो सफ़र की पोशाकें बनवा ली थीं और रंग, कूँची व किरमिच और रंग रखने की नयी तश्तरी ख़रीद ली थी। उसका चित्रकला का अभ्यास कैसा चल रहा है यह देखने के लिए र्योबोवस्की लगभग रोज़ ही आता। जब वह उसे अपने चित्र दिखाती तो जेबों में हाथ डालकर, होंठ भींचकर, नाक चढ़ाता हुआ वह कहता, "अच्छा, अच्छा...बादल वहाँ बहुत भड़कीला है। यह तो शाम की रोशनी नहीं है। आगे की ज़मीन थोड़ी गड़बड़ है और कुछ, तुम समझ जाओ कि मेरा मतलब है...कमी है। तुम्हारी झोपड़ी, लगता जैसे किसी ने ठोक-पीट दी हो और वह कष्ट में रिरिया रही हो...उस कोने को और ज़्यादा गहरा कर दो। सब मिलाकर तस्वीर इतनी बुरी नहीं है...मुझे खुशी है।"

वह जितना ही ज़्यादा गूढ़ ढंग से बोलता, उतनी ही आसानी ओल्गा इवानोव्ना को उसे समझने में होती।

3

ईस्टर त्यौहार के बाद वाले सोमवार को तीसरे पहर दीमोव देहात में अपनी बीवी के पास ले जाने के लिए कुछ मिठाइयाँ और खाने की चीज़ें लाया। उसने पन्द्रह दिन से उसे देखा नहीं था और उसकी याद उसे बुरी तरह सता रही थी। रेल में और उसके बाद, जब वह घनी

झाड़ियों में उसकी कुटी ढूँढ़ रहा था तो उसको बहुत ज़ोर की भूख लग रही थी। दीमोव अपनी बीवी के साथ बैठकर खाने और फिर बिस्तर में लेट आनन्द लेने के ध्यान मे मग्न हो गया था।

अपने हाथ की पार्सल को देखकर जिसमें कैवियोर, पनीर और भुनी हुई मछली थी, उसे खुशी हो रही थी।

सूरज ढल चुका था, जबकि वह तलाश करके अपनी बीवी की कुटी पा सका। बूढ़ी नौकरानी ने उसे बताया कि मालकिन घर पर नहीं है, लेकिन शायद थोड़ी देर में वापस आ जाए। बदनुमा बनावट नीची छतों, दिवालों पर लगे सादे काग़ज़, ऊँचे-नीचे पड़े फ़र्शवाली कुटी में सिर्फ़ तीन कमरे थे। एक कमरे में एक बिस्तर दूसरे में तस्वीर बनाने की किरमिच, रंग की कूची, मैले काग़ज़ का एक टुकड़ा, कुर्सियों और खिड़कियों पर आदमियों के कोट और टोप और तीसरे कमरे में दीमारेव की भेंट तीन अजनबी आदमियों से हो गयी। दो तो साँवले और दाढ़ियाँ। रखे हुए थे और तीसरा दाढ़ी मूँछहीन मोटा व्यक्ति था, वह अभिनेता प्रतीत होता था। मेज़ पर समोबार उबल रहा था।

"क्या तुम चाहते हो?" दीमोव की तरफ़ अप्रसन्न भाव से देखते हुए अभिनेता ने भारी आवाज़ में पूछा, "ओल्गा इवानोव्ना से मिलना? ठहरो। वह आती ही होगी।"

दीमोव बैठकर इन्तज़ार करने लगा। साँवले व्यक्तियों में से एक ने उसकी ओर नींद भरी थकी आँखों से देखते हुए थोड़ी-सी चाय उँड़ेली और पूछा, "थोड़ी चाय पीजिए?"

दीमोव भूखा-प्यास था। लेकिन उसने चाय से इंकार कर दिया ताकि चाय पीने से भूख की तीव्रता कम न हो जाए। थोड़ी ही देर में कदमों की ओर परिचित हँसी की आवाज़ सुनाई पड़ी। धमाके से दरवाज़ा खुला और चौड़े किनारे वाला टोप लगाये एक पेटी लिए ओल्गा इवानोव्ना कमरे में तेज़ी से घुसी। उसके पीछे बड़ा छाता और मुड़नेवाल स्टूल लिए, र्याबोवस्की आया। वह बहुत उमंग में था और

उसके गाल सुर्ख हो रहे थे।

"दीमोव" खुशी से गद्‌गद् होते हुए ओल्गा इवानोव्ना चीखी, "दीमोव" उसकी छाती पर दोनों हाथ और अपना सिर रखते हुए उसने दोहराया, "तुम हो! तुम इतने लम्बे समय तक यहाँ क्यों नहीं आये? क्यों? क्यों?"

"मैं कब आ सकता था, मम्मो? मैं हमेशा व्यस्त रहता हूँ, और जब मेरे पास थोड़ी फ़ुर्सत होती भी है, तो हमेशा ऐसा होता है कि कोई ठीक रेलगाड़ी ही नहीं मिलती।"

"ओह! तुम्हें देखकर में कितनी खुश हूँ! सारी रात, सारी रात मैं तुम्हारा स्वप्न देखती रही। मैं डर रही थी कि तुम बीमार हो गये हो, तुम्हें कुछ हो गया है काश तुम्हें पता होता कि तुम कितने प्यारे हो, और यह कितने सौभाग्य की बात है कि तुम आ गये हो! तुम मेरे उद्धारक हो! सिर्फ़ तुम्हीं अकेले ऐसे हो, जो मुझे बचा सकते हो! कल यहाँ एक बिल्कुल मौलिक शादी होने जा रही है," हँसते हुए अपने पति की टाई ठीक करते हुए उसने कहा, "तारघर के कर्मचारी की शादी हो रही है, चिकेलदेयेव उसका नाम है, अक्लमन्द और ख़ूबसूरत लड़का है। उसके चेहरे में कुछ शक्ति, कुछ भालूपन, तुम तो जानते हो...। वह एक नौजवान नार्मन योद्धा का चित्र बनवाने के लिए नमूना बना सकता है गर्मियों में यहाँ आये हम सबने उसमें दिलचस्पी ली है और उसकी शादी में शामिल होने का पक्का वादा किया है...वह आर्थिक कठिनाई में है, एकाकी और शर्मीला, उससे सहानुभूति न करना पाप होगा। ज़रा सोचो, शादी प्रार्थना के फ़ौरन बाद होगी और सब लोग गिरजे से सीधे दुल्हन के घर पैदल जा रहे हैं...! उपवन, गाती हुई चिड़ियाँ, घास पर सूर्य की किरणें, तुम समझो, चमकीली हरी पृष्ठभूमि पर हम सब रंगीन धब्बे—कितना मौलिक, बिल्कुल फ्रांसीसी अभिव्यक्तिवादियों की तरह। लेकिन दीमोव, मैं गिरजे में पहनूँगी क्या?" व्यथाकुल चेहरा बनाते हुए ओल्गा इवानोव्ना ने कहा। "यहाँ मेरे पास कुछ नहीं है, वाकई कुछ

नहीं है, न पोशाक, न फूल, न दस्ताने...तुमको मुझे बचाना ही पड़ेगा। इस वक़्त तुम्हारे यहाँ आने के मानी हैं कि यह भाग्य की इच्छा थी कि तुम मुझे बचाओ। मेरी चाभियाँ ले लो, प्यारे, घर जाओ और कपड़ों की अल्मारी में मेरी गुलाबी पोशाक ले आओ। तुम समझ गये? यह बिल्कुल सामने ही लटक रहा है...और बक्सों वाले कमरे में फ़र्श पर दायीं ओर तुम्हें दो दफ़्ती के बक्सा मिलेंगे; जब तुम ऊपर वाला बक्सा खोलोगे तो तुम्हें सिवा टूल-टूल-टूल और दुनिया भर के टुकड़ों के और कुछ नहीं दीख पड़ेगा। और उसके नीचे फुलवर। जितनी फुलवर हों, उनको होशियारी से निकाल लेना और कोशिश करना कि गिजगिजाए नहीं। मैं बाद में उनमें से कुछ चुनूँगी...और मेरे लिए एक जोड़ा दस्ताना खरीद लेना।

"बहुत अच्छा," दीमोव ने कहा, "मैं कल जाकर उन्हें भेज दूँगा।"

"कल?" उसकी ओर स्तब्धता से देखते हुए ओल्गा इवानोव्ना ने कहा। "कल तो तुम्हारा ठीक वक़्त में आना सम्भव ही नहीं है। पहली गाड़ी कल नौ बजे छूटती है और शादी ग्यारह बजे है। नहीं, प्यारे तुम्हें आज ही जाना है, ज़रूर आज! अगर तुम खुद कल नहीं आ सकते हो, तो सब चीज़ अरदली के ज़रिए भेज देना! जाओ, अभी...गाड़ी अब आती ही होगी। मेरे दुलारे, देर मत करो।"

"अच्छी बात है।"

"ओह, तुम्हें भेजते हुए मुझे कितना क्षोभ हो रहा है।" ओल्गा इवानोव्ना ने कहा और उसकी आँखों में आँसू भर आये। "तारघर के कर्मचारी से वादा करके मैंने कितनी बड़ी बेवकूफ़ी की है।"

चाय का गिलास निगलकर, एक बिस्कुट उठाते हुए दीमोव दीनता से हँसा और स्टेशन चला गया। कैव्यौर, पनीर और भुनी हुई मछलियों को उन दो साँवले आदमियों और मोटे अभिनेता ने खाया।

जुलाई की एक निस्तब्ध चाँदनी रात में, ओल्गा इवानोव्ना

बोल्गा नदी में एक स्टीमर पर खड़ी बारी-बारी से पानी और नदी का सुन्दर किनारा देख रही थी। उसके पीछे र्याबोवस्की खड़ा हुआ उसे बता रहा था कि पानी की सतह पर पड़नेवाली काली छायाएँ छाया नहीं, स्वप्न हैं। अच्छा हो कि हर चीज़ भुला दी जाए, मर जाया जाए और इस जादूभरे चमकीले पानी में घिरी हुई एक यादगार बन जाया जाए! यह असीम आकाश, यह उदास और चिन्ताकुल किनारे, सब हमसे हमारे जीवन की निस्सारता बता रहे हैं और किसी महान, अविनाशी और आनन्दकारी चीज़ का अस्तित्व सिद्ध रहे हैं। अतीत तुच्छ था, रागहीन भविष्य निर्विकार और यह नैसर्गिक, कभी फिर न आनेवाली रात शीघ्र समाप्त हो जाएगी और अनादि अनन्त का अंग बन जाएगी। क्यों, तो फिर ज़िन्दा क्यों रहे?

ओल्गा इवानोव्न बारी-बारी से र्योबोवस्की की आवाज़ और रात की खामोशी सुन रही थी और अपने आपसे कह रही थी कि वह अमर है और वह कभी नहीं मरेगी। पन्ना-सा चमकनेवाला जल, जैसा कि उसने पहले कभी नहीं देखा था, आकाश, नदी के किनारे, काली छायाएँ और अज्ञात आनन्द जिसने उसकी आत्मा विभोर उठी थी, सब चीज़ें उससे कह रही थीं कि एक रोज वह महान कलाकार बनेगी और कहीं दूर चाँदनी से जगमगाती रात असीम आकाश के पार सफलता, यश, और जनता का प्रेम उसकी प्रतीक्षा में है...जब टक-टकी लगाए देर तक अँधकार में घूरते-घूरते उसे लगा कि जैसे भीड़, रोशनी, गम्भीर की संगीत की ध्वनि, प्रोत्साहन देनेवाली शाबाशियाँ, सफ़ेद पोशाक में वह स्वयं अपने ऊपर चारों ओर से फूलों की वर्षा देख रही हो। उसने अपने से कहा भी कि उसके पीछे रेलिंग पर झुका हुआ व्यक्ति दरअसल महान है। विलक्षण प्रतिभावान है, ईश्वर का प्रिय पात्र है...अभी तक का उसका कार्य आश्चर्यजनक, ताज़ा, अनोखा और जब समय के साथ उसकी असाधारण प्रतिभा परिपक्व हो जाएगी, तब उसका काम आकर्षक और अत्यन्त उच्च श्रेणी का होगा और उसके चेहरे में, अपने को व्यक्त करने के ढंग में और

प्रकृति के प्रति दृष्टिकोण में इन सबकी झाँकी दिखाई पड़ती है। छायाओं, शाम के रंगों, चाँदनी की चमक का वर्णन करने की उसकी अपनी विशेष भाषा है, प्रकृति के ऊपर उसकी शक्ति का जादू अभिभूत कर लेता है। वह सुन्दर भी है और मौलिक भी, स्वतन्त्र, स्वच्छन्द, संसारिक बन्धनहीन उसका जीवन, पक्षियों के जीवन के समान है।

ठण्डक हो रही है।" ओल्गा इवानोव्ना ने कहा और उसे कँपकँपी आ गयी।

र्योबोवस्की ने अपना कोट उसके शरीर में लपेट दिया और दुःख भरे शब्दों में बोला :

"मुझे लगता है कि मैं तुम्हारे कब्जे में हूँ। मैं गुलाम हूँ। तुम आज इतनी मोहिनी क्यों हो?"

वह लगातार उसकी ओर बिना नज़र हटाये देखता रहा। उसकी आँखों में कुछ ऐसा डरावना था कि ओल्गा इवानोव्ना को उसकी ओर देखने में डर लग रहा था।

"मैं तुम्हारे प्रेम में पागल हूँ..." उसके गाल पर साँस छोड़ते हुए वह फुसफुसाया, "तुम सिर्फ़ एक शब्द कह दो और मैं ज़िन्दा नहीं रहूँगा, कला त्याग दूँगा..." बहुत विकल होकर वह बुदबुदाया, "मुझे प्यार करो, मुझे प्यार करो..."

"इस तरह से बात मत करो," आँखें बन्द करते हुए ओल्गा इवानोव्ना ने कहा। "यह बहुत बुरा है। और दीमोव का क्या होगा?"

"दीमोव की क्या परवाह? दीमोव क्यों? मुझे दीमोव से क्या लेना-देना है? वोल्गा, चाँद, सुन्दरता, मेरा प्यार, मेरा आह्लाद, लेकिन कोई दीमोव नहीं...आह! मैं कुछ नहीं जानता...मुझे अतीत नहीं चाहिए, मुझे केवल एक क्षण दे दो...एक छोटा-सा क्षण!"

ओल्गा इवानोव्ना का दिल ज़ोर-ज़ोर से धड़क रहा था। उसने अपने पति के बारे में सोचने की चेष्टा की लेकिन पूरा अतीत, उसकी शादी, दीमोव, बुधवार की शामें, सब कुछ अब उसे तुच्छ, नगण्य,

भद्दा, बेकार और दूर, बहुत दूर लग रहा था...और आखिरकार दीमोव की क्या परवाह है? दीमोव क्यों? दीमोव से उसे क्या मतलब? क्या वास्तव में ऐसा कोई व्यक्ति था, क्या वह स्वप्न नहीं था?

"उसको जितनी खुशी मिली है वह उस जैसे मामूली आदमी के लिए काफ़ी है," चेहरे को अपने हाथों से ढँकते हुए उसने अपने आपको समझाया। "वे मेरा फ़ैसला करें, मुझे शाप दें। मैं अपने नाश की ओर जाऊँगी, हाँ, अपने नाश की ओर, सिर्फ़ उन सबसे बदला लेने के लिए...जीवन में हर चीज़ आज़मानी चाहिए। हे ईश्वर, कितना भयानक और कितना मोहक है यह।"

"क्या? क्या?" उसको बाँहों में घेरते हुए और आवेश से उसके हाथों को चूमते हुए जिनसे वह हल्के से उसे दूर हटा रही थी, कलाकार बुदबुदाया, "तुम मुझे प्यार करती हो न? क्या हाँ? कहो हाँ! वाह! क्या रात है! कैसी स्वर्गिक रात है!"

"हाँ, कैसी सुन्दर रात है!" आँसुओं से चमकती हुई उसकी आँखों में आँखें डालकर वह फुसफुसाई। फिर फौरन दूसरी ओर आँखें फेरकर उसने उसे बाँहों में भर लिया और उसके होंठों को चूम लिया।

"हम एक मिनट में किनेश्मा पहुँच जाएँगे," डेक की दूसरी तरफ़ ये किसी ने कहा।

भारी कदम सुनाई पड़े। यह जलपान गृह के कर्मचारी के गुज़रने की आवाज़ थी।

"सुनो," आनन्द से हँसते और रोते हुए ओल्गा इवानोव्ना ने उसे पुकारा, "हमारे लिए थोड़ी शराब ला दो।"

कलाकार उद्वेग से पीला पड़ गया। वह बेंच पर बैठ गया और ओल्गा इवानोव्ना को प्रशंसा और कृतज्ञता के भाव से देखते हुए उसने अपनी आँखें बन्द कर लीं, क्लान्त हँसी से उसने कहा, "मैं थक गया हूँ।"

"और उसने अपना सिर रेलिंग पर रख लिया।

4

दूसरी सितम्बर को दिन गर्म था, हवा स्थिर थी, पर कोहरा छाया हुआ था। सवेरे तड़के वोल्गा के ऊपर हल्का कुहासा छाया हुआ था और नौ बजे के बाद बूँदें पड़ना शुरू हो गयीं और आसमान साफ़ हो जाने की बिल्कुल ही आशा न रही। नाश्ते पर र्याबोवस्की ने ओल्गा इवानोव्ना से कहा कि चित्रकारी सब कलाओं से अधिक कृतघ्न और उबा देनेवाली कला है। वह कलाकार है ही नहीं, और बेवकूफ़ों को छोड़कर और किसी को उसकी प्रतिभा में विश्वास नहीं है। अचानक, रंचमात्र भी चेतावनी दिये बिना उसने चाकू उठाकर अपने सबसे सफल चित्र को फाड़ डाला। नाश्ते के बाद वह अन्यमनस्क-सा खिड़की पर बैठा नदी की ओर देखता रहा। अब वोल्गा चमक नहीं रही थी, वह धुँधली, मद्धिम और ठण्डी लग रही थी। हर चीज़ उदास, सूने पतझड़ के आगमन की ओर इंगित करने लगती थी। ऐसा लग रहा था जैसे किनारे की चमकीली हरी दरियाँ, सूर्य की किरणों का हीरों जैसा प्रतिबिम्ब, नीली पारदर्शी दूरी और समस्त सुन्दर वसन्त प्रकृति ने वोल्गा से छीनकर अगले वसन्त तक के लिए सन्दूक में बन्द कर दिया हो। और, नदी के ऊपर कौवे उसे चिढ़ाते हुए उड़ रहे थे, "नंगी! नंगी!" र्याबोवस्की उनकी काँव-काँव सुनता रहा और अपने से कहता रहा कि चित्र बनाते-बनाते मेरी प्रतिभा लुप्त हो गयी, कि इस संसार में सब कुछ रूढ़िग्रस्त, आपेक्षिक और मूर्खतापूर्ण है, कि मुझे इस औरत के चक्कर में नहीं आना चाहिए था...मतलब यह कि वह व्यथित और उदास बैठा था।

ओल्गा इवानोव्ना आड़ के पीछे खाट पर बैठी अपने सुन्दर सुनहले बालों में उँगलियाँ फिरा रही थी और कल्पना में देख रही थी कि वह अपने दीवानखाने, सोने के कमरे, अपने पति के अध्ययन के कमरे में पहुँच गयी है। उसकी कल्पना ने उसे थियेटर, दर्ज़िन की दुकान और अपने नामी मित्रों के पास पहुँचा दिया। वे इस समय क्या कर रहे होंगे? क्या उन लोगों को कभी उसकी भी याद आयी

होगी? पर्व तो आ गया था और उसके लिए अपनी बुधवार की शामों का सोच स्वाभाविक था। और दीमोव? प्यारा दीमोव! कितनी नम्रता और बच्चों जैसी सरलता के साथ रट लगाकर वह अपने पत्रों में उससे घर लौट आने की लगातार प्रार्थना किये जा रहा था! हर महीने वह उसको पचहत्तर रूबल भेजता था और जब उसने लिखा कि मैंने कलाकारों से सौ रूबल उधार लिए हैं, तो उसने सौ रूबल और भेज दिये थे। कितना अच्छा, उदार पुरुष है वह! यात्रा ने ओल्गा इवानोव्ना को थका दिया था, वह ऊब गयी थी, वह बेचैन थी कि किसानों के बीच से, नदी से उठनेवाली नमी की इस गन्ध से किसी प्रकार बच कर भाग जाए, और उस शारीरिक गन्दगी की भावना को झाड़ कर फेंक दे जिससे किसानों की झोंपड़ियों में रहते-रहते, गाँव-गाँव फिरने में भी कभी उसका पिंड नहीं छूटता था। यदि र्याबोवस्की ने कलाकारों को बीस सितम्बर तक साथ रहने को वचन न दे दिया होता तो वे दोनों आज ही चले जाते। कितनी बढ़िया बात होती यह!

"हे भगवान!" र्याबोवस्की ने ठण्डी साँस भरते हुए कहा, "यह सूरज पता नहीं कब निकलेगा? मैं सूरज की रोशनी से दमकते प्राकृतिक दृश्य का चित्र कैसे बनाता जाऊँ जब खुद सूरज का ही पता न हो।"

"तुम्हारे पास एक स्केच (चित्र) है जिसमें आकाश पर बादल छाये हैं," ओल्गा इवानोव्ना ने आड़ से बाहर निकलते हुए कहा, "क्या तुम्हें याद नहीं? जिसमें सामने ही दाहिनी ओर एक जंगल है और गायों और बत्तखों का झुंड बाईं ओर है। तुम उसे पूरा न कर डालो अब!"

"भगवान के लिए," कलाकार ने मुँह बनाते हुए कहा, "पूरा कर डालो! क्या तुम सचमुच मुझे इतना मूर्ख समझती हो कि मैं अपना बुरा-भला नहीं जानता?"

"तुम मेरे लिए कितने बदल गये हो!" ओल्गा इवानोव्ना ने ठंडी

साँस भरते हुए कहा।

"अच्छा ही हुआ।"

ओल्गा इवानोव्ना का मुँह फड़कने लगा, वह जल्दी से अलावघर के पास पहुँच गयी और वहीं खड़ी होकर रोने लगी।

"और अब ये आँसू भी—मानों कोई कसर रह गयी थी। बस, अब बन्द करो। मेरे पास भी रोने के हज़ार कारण मौजूद हैं, पर मैं तो नहीं रोता!"

"कारण!" ओल्गा इवानोव्ना ने सिसकी लेते हुए कहा, "सब से बड़ा कारण तो यह है कि तुम मुझसे ऊब गये। हाँ हाँ, तुम ऊब गये हो।" और उसकी सिकियाँ और भी बढ़ गयीं। "असली बात यह है कि तुम हमारे प्रेम पर लज्जित हो। तुम डरते हो कि कलाकारों को कहीं पता न चल जाए यद्यपि यह बात कहीं छिपाये नहीं छिपती है और वह लोग तो सब कुछ जानते हैं।"

"ओल्गा, मेरी तुमसे एक ही प्रार्थना है," कलाकार ने अनुनय-विनय के स्वर में, अपनी छाती पर हाथ रखते हुए कहा, "केवल एक ही बात कि मुझे परेशान मत करो। मैं तुमसे बस, यही चाहता हूँ!"

"तो क़सम खाओ कि तुम्हें मुझसे अब भी प्रेम है!"

"यह तो बड़ी मुसीबत है!" कलाकार ने दाँत मींचकर कहा, और एकदम से उठ खड़ा हुआ। "इसका परिणाम यही होगा कि या तो वोल्गा में कूद पड़ूँगा या पागल हो जाऊँगा। मुझे अपने हाल पर छोड़ दो!"

"मुझे मार डालो, हाँ हाँ, मुझे मार डालो," ओल्गा इवानोव्ना चिल्लाई, "मुझे मार डालो!"

वह फिर फूट-फूटकर रोने लगी और आड़ के पीछे चली गयी। फूस की छत पर वर्षा की बूँदें खड़खड़ाने लगीं। र्योबोवस्की अपने सिर पकड़े कमरे में कुछ देर तक टहलता रहा और तब उसके मुख पर दृढ़ निश्चय के लक्षण झलक पड़े मानों वह किसी से बहस में

कोई बड़ा तर्क दे रहा हो, उसने टोपी पहनी, बन्दूक कन्धे पर डाली और झोंपड़ी से बाहर चल गया।

उसके जाने के पश्चात, ओल्गा इवानोव्ना बड़ी देर तक रोती हुई खाट पर पड़ी रही। पहले उसने सोचा कि कितना अच्छा हो कि वह ज़हर खाकर सो रहे और जब र्याबोवस्की लौटे तो वह मरी पड़ी हो। परन्तु क्षणभर में ही उसके विचार अपने दीवानखाने, अपने पति के अध्ययन के कमरे तक पहुँच गये और उसने देखा कि वह चुपचाप दीमोव के पास बैठी शान्ति और स्वच्छता की भावनाओं का आनन्द ले रही है और फिर नाट्यशाला में बैठी माज़िनी का संगीन सुन रही है। और सभ्यता, नगर के कोलाहल, नामी व्यक्तियों के लिए तड़प से उसके हृदय में टीस उठी। गाँव की एक औरत झोंपड़ी में आयी और भोजन की तैयारी के लिए धीरे-धीरे चूल्हे की आँच तेज करने लगी। लकड़ी जलने की दबी-दबी गन्ध फैली और हवा धुएँ से नीली हो गयी। कलाकार अपने कीचड़ में सने भारी बूट चढ़ाये हुए आये। उनके मुख वर्षा से भीगे हुए थे। वे स्केचों को देख रहे थे और अपने मन को यह कहकर बहला रहे थे कि वोल्गा इस क्रूर ऋतु में भी आकर्षक होती है। दीवार पर टंगी सस्ती घड़ी का लटकन टिक-टिक कर रहा था। सर्द मक्खियाँ कोने में मूर्तियों के चौखटे के पास भीड़ लगाये भनभना रही थीं और बेंचों के नीचे उभरी हुई फ़ाइलों के अन्दर तिलचटे रेंग रहे थे।

र्योबोवस्की सूर्यास्त के समय झोंपड़ी में लौटा। उसने अपनी टोपी मेज़ पर पटकी और कीचड़ भरे बूट सहित थकावट से चूर पीला पड़ा, बेंच पर धम से गिर पड़ा और अपनी आँखें बन्द कर लीं।

"मैं थक गया हूँ" उसने कहा, पलकें ऊपर उठाने के प्रयत्न में उसकी भौहें फड़क रही थीं।

ओल्गा इवानोव्ना उसको मनाने और यह दिखलाने की आकुलता में कि वह उससे सचमुच क्रुद्ध नहीं है, एकदम से उसके पास पहुँच गयी, चुपचाप उसका चुम्बन किया और उसके भूरे बालों में कंघी

चलाई। उसके जी में आया कि उसके बालों में कंघी करे।

"अरे, यह क्या?" उसने चौंकते हुए कहा मानों कोई चिपचिपी वस्तु उसे छू गयी हो। और अपनी आँखें खोलते हुए बोला, "यह क्या है? मुझे चैन से रहने दो, मैं तुम्हारे हाथ जोड़ता हूँ।"

उसने उसको अपने पास से हटा दिया और स्वयं हट गया और ओल्गा को लगा कि उसके मुख से घृणा और क्रोध की भावना टपक रही थी। ठीक उसी समय वह देहाती औरत र्याबोवस्की के निकट बन्दगोभी के शोरबे की थाली दोनों हाथों में सँभाले हुए आयी और ओल्गा इवानोव्ना ने देखा कि उसके मोटे अँगूठे शोरबे से भीगे हुए थे। पेट के ऊपर साया कसे हुए वह गन्दी औरत, वह शोरबा जिस पर र्याबोवस्की टूट पड़ा, वह झोंपड़ी, यह जीवन जो शुरू में अपनी सरलता और कलात्मक बेढँगेपन के कारण इतना आनन्दायक प्रतीत होता था, अब उसे भयंकर रूप से असह्य लगने लगा। एकदम अपमानित-सी होकर उसने रुखाई से कहा :

"हमें कुछ समय के लिए साथ छोड़ना होगा नहीं तो ऊब और खीज में हम आपस ही में लड़ बैठेंगे। मैं परेशान हो गयी हूँ। आज ही मैं चली जाऊँगी।"

"कैसे? झाड़ू पर चढ़कर?"

"आज बृहस्पतिवार है और स्टीमर साढ़े नौ बजे जाएगा।"

"आज? तो ठीक ही है...फिर चली ही जाओ" र्याबोवस्की ने नैपकिन न होने पर तौलिए से ओंठ पोंछते हुए धीरे से कहा, "तुम्हारा मन यहाँ नहीं लगता और मैं इतना स्वार्थी नहीं हूँ कि तुम्हें रोके रखने का प्रयास करूँ। जाओ, हम फिर 20 तारीख के बाद मिलेंगे।"

ओल्गा इवानोव्ना के मन का बोझ उतर गया और वह अपना सामान बाँधने लगी। उसका मुख सन्तोष से दमक उठा। "क्या यह सचमुच सम्भव है?" उसने अपने मन से प्रश्न किया, "मैं शीघ्र ही अपने दीवानखाने में बैठकर चित्र बनाऊँगी, अपने सोने के कमरे में

साँस भर कर पुकारता–

"अरे भाई, क्या करें? कोई विषादभरी धुन बजाओ।"

कन्धे ऊँचे उठाये अपनी उँगलियाँ फैलाकर कोरोस्तल्योव एक दो सुर बजाता और पूरी शक्ति से ऊँचे स्वर में गाने लगता, "दिखा दो वह जगह मुझ को जहाँ इस देश में रूसी किसान पीड़ा से नहीं कराहता!" और दीमोव एक और ठंडी साँस लेकर अपना सिर अपनी बन्द हथेली पर टिका लेता और विचारों में डूब जाता।

ओल्गा इवानोव्ना अब अत्यन्त असावधानी से रहने लगी थी। वह रोज प्रातः उठती तो उसका चित्त अधिक-से-अधिक बिगड़ा होता। उस समय उसका निश्चय होता कि अब वह र्याबोवस्की से प्रेम नहीं करती। खुदा का शुक्र है कि दोनों के बीच सम्बन्ध का अन्त होगा। परन्तु एक प्याला कहवा पीने के बाद वह अपने को याद दिलाती कि र्याबोवस्की ने उसके पति को उससे छीन लिया है और अब वह बिना पति और बिना र्याबोवस्की के रह गयी है। उसे याद आता है कि उसके मित्र किसी अद्भुत चित्र की बात कर रहे थे जिसे र्याबोवस्की प्रदर्शन के लिए तैयार कर रहा था जो चित्रकार पोलेनोव की शैली में प्राकृतिक दृश्य और समस्यामूलक चित्र का सम्मिश्रण-सा था और जो कोई भी उसके स्टूडियो में गया था उसकी प्रशंसा की झड़ी लगा देता था। परन्तु ओल्गा ने अपने मन को समझाया कि उसने यह चित्र मेरे ही प्रभाव से बनाया है और मेरे ही प्रभाव में उसकी कला का इतना महान विकास हुआ है। मेरा प्रभाव इतना लाभप्रद, इतना वास्तविक रहा है कि यदि मैं उसे छोड़ दूँ तो वह धूल में मिल जाएगा। उसे यह भी याद आता कि जब वह पिछली बार मिलने आया तो उसने भूरा कोट पहन रखा था जिसमें चाँदी के धागे बिने थे, टाई नयी थी, और उसने बड़े करुणमय स्वर में पूछा था, "मैं सुन्दर हूँ?" वह लम्बे घुँघराले बालों और नीली आँखों के कारण बहुत सुन्दर था। कम-से-कम वह तो ऐसा समझती थी ही और वह उसपर अपना प्रेम-भाव प्रदर्शित कर रहा था।

यह सब और इसी प्रकार की और बातें याद करती, स्वयं परिणाम निकालती हुई, वह जल्दी-जल्दी कपड़े पहनती और बड़ी बेचैनी लिए र्याबोवस्की के स्टूडियो पहुँच जाती। वह उसे प्रायः प्रसन्नचित्त और अपने चित्र की प्रशंसा करते हुए पाती, जो वास्तव में अत्यन्त सुन्दर था। वह तरंग में होता, हँसी ठट्ठे की बातें करता और गम्भीर प्रश्नों को हँसी में टाल देता। ओल्गा इवानोव्ना को चित्र से ईर्ष्या और घृणा थी, परन्तु वह सदैव ही पाँच मिनट तक उसके सामने शिष्ट मौन में खड़ी रहती, और तब जिस प्रकार लोग मन्दिर में ठंडी साँसें भरते हैं, भरकर कहती, "हाँ, तुमने ऐसी चीज़ अब तक नहीं बनायी। तुम जानते हो, मुझे तो उससे डर लगने लगता है।"

तब वह उससे प्रेम करते रहने के लिए प्रार्थना करती और विनती करती कि उसे ठुकरा न दे और उस दुःखी दीन जीव पर दया करे। वह रोती, उसके हाथ चूमती, उससे प्रेम का आश्वासन प्राप्त करने का प्रयत्न करती और यह बतलाती कि उसके बिना, वह भटक कर खो जाएगा। तब उसे पूरी तरह बौखला देने और अपना अपमान करा चुकने के बाद वह दर्ज़िन की दुकान पर या एक जान पहचान की अभिनेत्री के यहाँ नाटक के टिकट लेने के लिए चली जाती।

जिस दिन वह स्टूडियो में न मिलता, वह उसके लिए धमकी का एक परचा छोड़ जाती कि तुम आज ही न आये तो ज़हर खाकर मर जाऊँगी। डर के मारे वह मिलने जाता और भोजन के लिए रुका रहता। उसके पति के उपस्थित होते हुए भी उसे कोई लाज न आती और वह उसके लिए अपमानजनक शब्दों का प्रयोग करता, और वह भी उसका उत्तर उन्हीं शब्दों में देती। दोनों एक-दूसरे को अपने मार्ग में बाधक समझते थे, और समझते थे कि दोनों अत्याचारी और शत्रु हैं। उससे उन्हें और भी क्रोध आता था और क्रोध में उन्हें इस बात का ध्यान भी रहता था कि उनका व्यवहार कितना अभद्र है। यहाँ तक कि छोटे बालों वाला कारोस्तेल्योव भी सब कुछ समझा जाता था। भोजन के बाद र्याबोवस्की जल्दी से बिदा होकर चल देता।

"कहाँ जा रहे हो?" ओल्गा इवानोव्ना उससे ड्योढ़ी पर घृणा की दृष्टि से देखती हुई पूछती।

त्योरियाँ चढ़ाते हुए आँखें आधी बन्द करके वह किसी ऐसी महिला का नाम ले लेता जिसे वह दोनों जानते थे। स्पष्ट होता कि वह उसकी ईर्ष्या की हँसी उड़ाना और उसे चिढ़ाना चाहता था। वह अपने सोने के कमरे में जाकर लेट जाती। ईर्ष्या, क्रोध, अपमान और लज्जा के कारण वह तकिया दाँत से फोड़ती और ज़ोर-ज़ोर से सिसकियाँ भरने लगती। तब दीमोव कोरोसतेल्योव को दीवानख़ाने ही में छोड़, सोने के कमरे में धीरे-धीरे जाता और कुछ झेंपते, कुछ घबड़ाते हुए धीमे स्वर में कहता—; "इतने ज़ोर से मत रोओ, मम्मो...रोना किसके लिए? इस मामले में तुम्हें तो चुपचाप रहना चाहिए...लोगों को इसका पता क्यों देती हो...जो हो गया उसे सुधारना असम्भव है।"

अपनी ईर्ष्या दबा न पाने पर जिससे कि उसकी कनपटियाँ तक फड़कने लगती थीं और अपने मन को यह समझाते हुए कि अभी भी गुत्थी को सुलझाया जा सकता है, वह उठ पड़ती, मुँह हाथ धोती, अपने आँसू भरे मुख पर पाउडर थोपती और जिस महिला का नाम र्याबोवस्की ने बताया होता उसकी के घर की ओर चल पड़ती। र्याबोवस्की को वहाँ न पाकर वह दूसरे घर को, फिर तीसरे घर को भागती...पहले पहल तो उसे इन यात्राओं पर लज्जा आती थी। परन्तु शीघ्र ही वह इसकी आदी हो गयी। कभी-कभी वह एक ही शाम को अपनी जान-पहचान की सभी स्त्रियों के घर र्याबोवस्की की खोज में हो आती और वह सभी उसके उद्देश्य को समझती थीं।

एक बार उसने र्याबोवस्की से अपने पति के विषय में कहा—

"वह आदमी मुझे अपनी महान उदारता से दबा रहा है!"

यह वाक्य उसे इतना प्रिय लगा कि जब कभी उसकी भेंट उन कलाकारों में से किसी से होती, जो र्याबोवस्की से उसके सम्बन्ध का रहस्य जानते थे, वह अपने पति का ज़िक्र बड़े प्रबल संकेत से करते हुए कहती— "वह आदमी मुझे अपनी महान उदारता से दबा रहा है!"

उनके जीवन का ढर्रा पिछले वर्ष की भाँति ही चलता रहा। बुधवार की सन्ध्या को भोजन होते। अभिनेता कविता सुनाता, कलाकार चित्र बनाते, वादक वायलिन बजाता, गायक गीत गाता और ठीक साढ़े ग्यारह बजे खाने के कमरे का द्वार खुल जाता और दीमोव मुस्कराते हुए कहता—

"महाशयो, खाने के लिए चलिए।"

ओल्गा इवानोव्ना सदैव की भाँति ही बड़े लोगों को खोजती रहती, उनका पता लगाती और तब भी उसे सन्तोष नहीं होता और वह दूसरों की खोज में लग जाती। सदैव की भाँति ही, वह रोज़ रात को देर से घर लौटती, पर जब वह आती तो उसे दीमोव कभी सोया हुआ न मिलता जैसा कि पिछले साल हुआ करता था। वह अपने अध्ययन के कमरे में बैठा काम कर रहा होता। वह तीन बजे सोता और आठ बजे उठ जाता था।

एक दिन सन्ध्या समय जब वह नाट्यशाला जाने से पहले शीशे में अन्तिम बार अपने को देख रही थी, दीमोव लम्बा कोट पहने और सफ़ेद टाई लगाये सोने के कमरे में आ गया। वह बड़े दीन भाव से मुस्कराया और पहले की भाँति खुशी से पत्नी की आँखों-में-आँखें डाल दीं। उसका चेहरा चमक रहा था।

"मैंने अभी-अभी अपना प्रबन्ध प्रस्तुत किया है," उसने मुड़े घुटनों पर पतलून ठीक करते हुए कहा।

"सफलता मिली?" ओल्गा इवानोव्ना ने पूछा।

"हाँ, हुई तो।" वह हँसा और अपनी गर्दन ऊँची उठा ली, जिसमें वह अपनी पत्नी का मुँह शीशे में देख सके क्योंकि वह अभी भी उसकी ओर पीठ किए खड़ी हुई अपने बालों को ठीक कर रही थी। "तो फिर और क्या होता?" उसने फिर कहा, "इसकी भी बड़ी सम्भावना है कि वह मुझे रोगविज्ञान विभाग में 'दसेन्त' बना दें। तुम जानती हो, रंग ढंग तो ऐसा ही है।"

उसके प्रसन्न मुख और प्रफुल्लित भाव से स्पष्ट था कि यदि

ओल्गा इवानोव्ना उस के आनन्द और विजयोल्लास में सम्मिलित हो जाती तो वह उसका सब कुछ क्षमा कर देता। भूत और भविष्य दोनों ही और सब कुछ भुला देता। परन्तु वह न तो यही समझी कि दसेन्त कौन होता है और न वह यही जानती थी कि रोगविज्ञान किस चिड़िया का नाम है। साथ ही उसे खटका लगा कि कहीं नाट्यशाला पहुँचने में देर न हो जाए। इसलिए उसने कुछ भी नहीं कहा।

वह कुछ मिनट तक वहाँ बैठा रहा और फिर इस प्रकार मुस्कराते हुए मानो क्षमा माँग रहा हो, उठकर चल दिया।

वह बड़ी ही बेचैनी का दिन था।

दीमोव के सिर में भयंकर पीड़ा थी। उसने प्रातः न कुछ भोजन किया और न अस्पताल गया, बल्कि सारे दिन अपने अध्ययन के कमरे में कोच पर पड़ा रहा। ओल्गा इवानोव्ना सदैव की भाँति ही, बारह बजे के बाद ही र्‌याबोवस्की के पास चली गयी। उसे अपना बनाया हुआ फलों-फूलों के चित्र का प्रारूप दिखाना था और यह पूछना था कि वह उससे मिलने क्यों नहीं आया। वह जानती थी कि उसका प्रारूप बहुत घटिया है और उसने केवल इसीलिए बनाया है कि जाकर कलाकार से भेंट करने का बहाना मिल जाए।

वह घंटी बजाए बिना भीतर चली गयी और जिस समय कि वह ड्योढ़ी में अपने ऊपर वाले रबड़ के जूते उतार रही थी, जो उसे ऐसा लगा कि स्टूडियों में पाँव की दबी-दबी आहट सुनाई दे रही है जिसके साथ किसी औरत के कपड़ों की सरसराहट भी सुनाई पड़ रही है। जब उसने जल्दी भीतर ताका तो उसे एक तेज़ छिपते भूरे साये की झलक दिखाई पड़ी जो एक क्षण के लिए चमक कर एक लम्बे किरमिच के चित्र के पीछे लुप्त हो गया, जिस पर चित्र रखने के चौखटे का फ़र्श तक एक काला कपड़ा हुआ था। इसमें कोई सन्देह नहीं था कि कोई औरत उसके पीछे छिपी हुई है। कितनी बार स्वयं ओल्गा इवानोव्ना को इस पर्दे के पीछे छिपने का स्थान मिला था! स्पष्ट था कि र्‌याबोवस्की बड़े पसोपेश में पड़ गया; अपने दोनों हाथ

उसकी ओर फैला दिये मानो उसके आने पर उसे बड़ा आश्चर्य हो रहा हो। उसने बनावटी मुस्कराहट से कहा– "आ...आ...हा! खुशी हुई तुमसे मिलकर...कहो क्या खबर है?"

ओल्गा इवानोव्ना की आँखों-में-आँसू डबडबा आये। उसे अपने अपमान और विवशता का अनुभव हुआ और चाहे इधर की दुनिया उधर हो जाए, वह अपनी बात उस दूसरी स्त्री के सामने नहीं कह सकती थी, जो उसकी प्रतिद्वन्दी थी, वह धोखेबाज़ जो इस समय परदे के पीछे खड़ी थी और निस्सन्देह उसपर हँस रही थी।

"मैं बस तुमको अपना प्रारूप दिखलाना चाहती थी," उसने ऊँचे डर भरे स्वर में कहा और उसके ओंठ काँपने लगे। "यह फलफूल का चित्र है।"

"आ...आ...हा, स्केच..."

कलाकार ने चित्र अपने हाथों में ले लिया, और उसपर आँखें गड़ाए मानों अन्यमनस्कता से दूसरे कमरे में चला गया। ओल्गा इवानोव्ना उसके पीछे-पीछे गर्दन झुकाये चली गयी।

"फल-फूल चित्र, जोड़ नहीं अन्यत्र," वह यन्त्रवत् तुम मिलाते हुए बड़बड़ाने लगा : "अन्यत्र, चित्र-विचित्र, यत्रतत्र, पुत्र-कलत्र..."

स्टूडियो से जल्दी-जल्दी पग उठाने की चाप और साये की सरसराहट सुनाई पड़ी। इसका अर्थ यह था कि 'वह' जा चुकी है। ओल्गा इवानोव्ना के मन में एकदम से यह इच्छा हुई कि ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाये, कलाकार के सिर पर कोई भारी चीज़ दे मारे और भाग जाए परन्तु उसे आँसुओं ने अन्धा और अपमान ने दलित बना दिया था और उसे ऐसा लग रहा था मानो अब वह कलाकार ओल्गा इवानोव्ना नहीं रही बल्कि कोई तुच्छ जीव बनकर रह गयी है।

"मैं तो थक गया" कलाकार ने स्केच को देखते हुए और अपने सिर को झटका देकर अपनी थकावट का बोझ उतार फेंकने का प्रयत्न करते हुए मुरझाये स्वर में कहा, "यह अच्छा तो है, परन्तु प्रारूप मात्र यह आज भी है, पिछले साल भी था, एक महीने बाद भी

प्रारूप ही होगा...क्या तुम्हारा मन इनसे ऊबता नहीं? तुम्हारे स्थान पर मैं होता तो कला छोड़कर संगीत या ऐसे ही किसी कार्य को गम्भीरता से पकड़ता। तुम कलाकार नहीं हो, तुम्हें इसका पता है, तुम संगीतकार हो। परन्तु सच मानो मैं बहुत थक गया हूँ। अच्छा मैं कुछ चाय मँगवाता हूँ, मँगवाऊँ?''

वह कमरे से बाहर चला गया और ओल्गा इवानोव्ना ने उसको अपने नौकर से बातें करते सुना। विदाई के झगड़े से बचने और विशेषकर अपने को रो पड़ने से बचाने के लिए जब तक र्याबोवस्की वापस आये, वह ड्योढ़ी में भाग आयी, अपने जूते पहने और बाहर निकल पड़ी। गली में बाहर पहुँचते ही उसने स्वतन्त्रता से साँस ली और उसके मन को यह अनुभव हुआ कि उसने र्याबोवस्की को, कला को और उस असह्य अपमान की भावना को जो उसे स्टूडियो में सहना पड़ा था, एक झटके में सदैव के लिए झाड़ कर फेंक दिया है। यह अध्याय समाप्त!

वह अपनी दर्ज़िन के यहाँ गयी, तब बरनई के पास जो अभी-अभी लौटा था, फिर बरनई के यहाँ से स्वरलिपियों की एक दुकान पर सारे समय वह सोचती रही कि कैसे र्योबोवस्की को एक निष्ठुर कठोर, पर मर्यादापूर्ण पत्र लिखेगी और फिर वह वसन्त या गर्मी में अपने बीते काल को सदैव के लिए उतार फेंकने और नया जीवन आरम्भ करने के लिए दीमोव के साथ क्रीमिया चली जाएगी।

वह घर बहुत देर से पहुँची, परन्तु कपड़ा बदलने के लिए अपने कमरे में जाने के बदले वह सीधे दीवानखाने में पत्र लिखने के लिए चली गयी। र्याबोवस्की ने उससे कहा था तुम कलाकार नहीं हो, और अब बदले में वह उसे बताएगी कि वह हर साल एक ही चित्र लगातार बनाता रहा और एक ही बात को लगातार हर रोज़ कहता रहा है, वह अब चुक गया और जो कुछ विकास उसका हो चुका है, अब उससे अधिक कभी भी प्राप्त नहीं कर सकता। वह यह जोड़ देना चाहती थी कि उसके अच्छे प्रभाव का ऋण उस र्याबोवस्की पर

लदा हुआ है और अब जो उसका व्यवहार बिगड़ गया है, उसका कारण यह है कि उसके प्रभाव को, हर प्रकार के घृणित जीवों ने जिनमें से एक ने चित्र के पीछे आज मुँह छिपाया था, चौपट कर दिया है।

"मम्मो!" दीमोव ने अपने अध्ययन के कमरे से दरवाज़ा खोले बिना ही आवाज़ लगाई "मम्मो!"

''कहो, क्या चाहिए?''

"मेरे पास मत आना, मम्मो, बस दरवाज़े पर आ जाओ। यह ठीक है। मुझे डिप्थीरिया, एक दो दिन पहले अस्पताल में लग गयी है...और अब मेरा जी बहुत खराब है। ज़रा कोरोस्तेल्योव को बुलवाओ।"

ओल्गा इवानोव्ना अपने पति को सदैव उसे दीमोव कहकर कुल नाम से पुकारती थी, जैसा कि वह अपने सभी पुरुष मित्रों के साथ करती थी। उसका नाम ओसिप था, यह नाम उसे पसन्द नहीं था क्योंकि उससे प्रसिद्ध रूसी लेखक गोगोल वाले ओसिप की याद आ जाती थी, इसके अतिरिक्त ओसिप और आर्खीप के नामों में बचकाना श्लेषालंकार भी होता था। परन्तु इस समय वह चिल्ला उठी—

"अरे ओसिप, नहीं, नहीं, ऐसा नहीं हो सकता!"

"उसको बुलवा लो। मेरा जी बिगड़ रहा है..." दीमोव ने कमरे के भीतर से कहा और ओल्गा इवानोव्ना को सुनाई पड़ा कि वह चलकर कोच के पास पहुँचा और लेट गया। "उसको बुलवा दो!" ऐसा लग रहा था मानों उसका स्वर खोखला हो गया।

"क्या सचमुच ऐसा हो सकता है?" ओल्गा इवानोव्ना ने भयभीत होकर सोचा। ''अरे यह तो भयंकर है!"

उसे पता नहीं था कि उसने ऐसा क्यों किया परन्तु वह एक मोमबत्ती लेकर अपने कमरे में चली गयी और अभी वह इसी सोच में थी कि क्या करे कि उसे अपनी प्रतिछाया शीशे में दिखाई पड़ गयी, अपना पीला भयभीत मुख, ऊँची फूली-फूली आस्तीनों वाले

कि वह किसी गन्दी चिपचिपी वस्तु में पड़ी है और कभी भी धोकर इस गन्दगी को साफ़ नहीं कर सकती और यह कुछ कोरी चंचलता और घटिया मौज उड़ाने के लिए...

"ओह, मैं कितनी झूठी रही हूँ!" उसने र्‍याबोवस्की और अपने बीच के अशान्त प्रेम को याद करते हुए अपने मन से कहा, "भस्म हो जाए यह सब कुछ!"

चार बजे वह कोरोस्तेल्योव के साथ खाने पर बैठी। कोरोस्तेल्योव ने कुछ नहीं खाया, बस थोड़ी लाल शराब पीता और मुँह बनाता रहा। उसने भी कुछ नहीं खाया। वह ईश्वर से मौन प्रार्थना करती और मनौती मनाती रही कि दीमोव अच्छा हो जाए तो मैं उससे फिर प्रेम करूँगी और पतिव्रता स्त्री बन कर रहूँगी। तब अपने सारे दुःख को क्षण भर के लिए भूलकर, वह कोरोस्तेल्योव की ओर देखती और उसे आश्चर्य होता, इस प्रकार का महत्त्वहीन, चुचुके हुए मुँह और अशिष्ट व्यवहारवाला, गुमनाम व्यक्ति होना तो सचमुच बड़ा ही दुःखदाई होगा। फिर उसे ऐसा लगा मानों अभी-अभी ईश्वर का प्रकोप उस पर आ पड़ेगा क्योंकि छूत लगने के डर से वह अपने पति के अध्ययन के कमरे में एक बार भी नहीं गयी थी। उसपर सन्ताप की भावना छायी हुई थी और उसे इस विश्वास ने पीड़ित कर रखा था कि अब उसका जीवन ऐसा नष्ट हो गया है कि अब उसे कभी सुधारा नहीं जा सकता—

भोजन समाप्त होने पर शीघ्र ही अँधेरा हो गया। जब ओल्गा इवानोव्ना दीवानखाने में गयी तो उसे कोरोस्तेल्योव सोफ़े पर सोता मिला। उसका सिर रुपहले धागे से कढ़े रेशमी गद्दे पर पड़ा था। "खर्र खर्र," वह खर्राटे ले रहा था, "खर्र, खर्र..."

डॉक्टर जो खाट के पास आते और चले जाते थे, वे इस सारी अव्यवस्था पर कोई ध्यान नहीं देते थे। दीवानखाने में खर्राटे लेता हुआ कोई मनुष्य, दीवालों पर टंगे हुए चित्र, बेढंगा फ़र्नीचर, घर की मालकिन का उलझे बाल लिए घूमना और उसके कपड़े की दुर्दशा, अब

कोई बात भी किसी का ध्यान आकर्षित नहीं करती थी। एक डॉक्टर किसी बात पर हँस पड़ा, परन्तु उसकी हँसी अत्यन्त अजीब लगी और सभी बेचैन-से हो गये।

ओल्गा जब दूसरी बार दीवानखाने में गयी तो कोरोस्तेल्योव आँखें खोले सोफ़े पर बैठा पाइप पी रहा था।

"डिप्थीरिया के कीटाणु नाक के गढ़ों में भर गये हैं," उसने दबे स्वर में कहा। "अब हृदय भी थकान के लक्षण प्रकट करने लगा है। हालत बुरी है।"

"फिर श्रेक को क्यों नहीं बुलवाते?" ओल्गा इवानोव्ना ने पूछा।

"वह आया था। उसी ने तो देखा कि डिप्थीरिया नाक तक पहुँच गया है। अब श्रेक भी क्या है? श्रेक-ब्रेक से कुछ नहीं होता। वह श्रेक है और मैं कोरोस्तेल्योव हूँ और बस।"

समय अत्यन्त कष्टदायक मन्द गति से बीतता रहा। ओल्गा इवानोव्ना पूरे कपड़े पहने अपने बिस्तर पर, जो सवेरे से उलझा पड़ा था, ऊँघ रही थी। ऐसा लगता था कि पूरा घर फ़र्श से लेकर छत तक लोहे के एक भारी ढेर से भरा हुआ है और उसे ऐसा लगता था कि बस यह ढेर हटा दिया जाए तो सभी खिल उठेंगे। चौंककर वह उठी तो उसने अनुभव किया कि यह लोहे का ढेर नहीं बल्कि दीमोव की बीमारी है।

"फल-फूल, चित्र-मित्र," उसने अपने मन में कहा और फिर ऊँघते हुए, "चित्र...मित्र, विचित्र...और यह श्रेक कौन है? श्रेक, ट्रेक, रेक...क्रेक। अरे मेरे सारे मित्र कहाँ गये? क्या उन्हें पता नहीं कि हम विपत्ति में फँसे हैं? हे भगवान, हमें बचाओ, दया कर...श्रेक ट्रेक..."

फिर वही लोहे का ढेर...समय घिसटता जा रहा था और उसका कोई अन्त नहीं था, यद्यपि नीचे की मंज़िल में घड़ी बराबर घंटा बजाती लग रही थी। रह-रहकर घंटी बजती थी, डॉक्टर लोग दीमोव के पास आते थे...नौकरानी थाली में एक खाली गिलास लिए कमरे में आयी।

"आपका विस्तर ठीक कर दूँ, मालकिन?" उसने पूछा।

कोई उत्तर न मिलने पर वह फिर बाहर चली गयी। नीचे घड़ी ने घंटा बजाया। ओल्गा इवानोव्ना ने स्वप्न में देखा कि वोल्गा पर वर्षा हो रही है और फिर उसके कमरे में कोई अपरिचित-सा व्यक्ति आ गया। दूसरे ही क्षण में उसने कोरोस्तेल्योव को पहचान लिया और खाट पर से उठ खड़ी हुई।

"क्या समय होगा?" उसने पूछा।

"लगभग तीन।"

"वह कैसे है?"

"कैसे? मैं तुम्हें बताने आया था कि वह मर रहा था..."

उसने सिसकी दबा ली और खाट पर उसके पास अस्तीन से आँसू पोंछते हुए बैठ गया। पहले तो वह समझ ही नहीं पायी अचानक उसे काठ मार गया और धीरे-धीरे उसने सलीब का चिह्न अपने सीने पर बनाया।

"मर रहा है..." कोरोस्तेल्योव ऊँचे स्वर में दुहराया और फिर सिसकने लगा। "मर रहा है क्योंकि उसने आप को बलिदान कर दिया विज्ञान को कितनी बड़ी क्षति पहुँची।" उसने कटुता भरे जोश से कहा, "हम सब की तुलना में वह महान मनुष्य एक अद्‌भुत मनुष्य था। कैसी प्रतिभा थी उसमें! हम सबको कितनी आशाएँ थीं उससे। कोरोस्तेल्योव अपने हाथ मलते हुए बोलता रहा। "हे भगवान! हे भगवान! वह कितना बड़ा वैज्ञानिक होता! कितना महान वैज्ञानिक ओसिप दीमोव, ओसिप दीमोव! तुमने क्या कर लिया? हे भगवान!

निराशा में कोरोस्तेल्योव ने अपना मुँह दोनों हाथों से छिपा लिया।

"हाय कितनी बड़ी नैतिक शक्ति थी उसकी!" वह कहता रहा और किसी पर उसका क्रोध बढ़ता गया, "दयालु, पवित्र, स्नेहमय, निर्मल आत्मा! उसने विज्ञान की सेवा की और विज्ञान ही के लिए प्राण दिये। बैल की तरह काम करता दिन-रात। किसी ने भी उसे

नहीं बख्शा और वह, तरुण विद्वान, भविष्य का प्रोफ़ेसर, प्राइवेट डॉक्टरी और रात-रात बैठकर अनुवाद करने को विवश हुआ इन सब चिथड़ों का दाम चुकाने के लिए!"

कोरोस्तेल्योव ने ओल्गा इवानोव्ना की ओर घृणा की दृष्टि से देखा, चादर को दोनों हाथों से पकड़ा और क्रोध से उसे नोच डाला। मानो अपराध उसी चादर का हो।

"उसने भी स्वयं अपने को नहीं बख्शा और किसी ने भी उसे नहीं बख्शा। पर अब बात करने से क्या लाभ है?"

"हाँ, वह एक अद्‌भुत मनुष्य था।" दीवानखाने से गहरे स्वर में सुनाई पड़ा।

ओल्गा इवानोव्ना को उसके साथ अपना पूरा जीवन प्रारम्भ से अन्त तक विस्तार से याद आ गया। हर छोटी-बड़ी बात याद आ गयी और एकदम से उसे लगा कि वह सचमुच एक अद्‌भुत मनुष्य था, उसकी जान-पहचान के सभी लोगों की तुलना में एक महान व्यक्ति था। उसे अपने स्वर्गीय पिता और उनके सभी मित्रों का उसके पति व्यवहार याद आया और उसे अनुभव हुआ कि सभी उसको भविष्य का एक महान व्यक्ति समझते थे। दीवाले, छत, लैम्प और फ़र्श की दरी सभी उसको ताना देते लग रहे थे, मानों कह रहे हों, "तू चूक गयी!" वह सोने के कमरे से रोती हुई दौड़ी और दीवानखाने में किसी अपरिचित व्यक्ति से आँख बचाकर बढ़ी और लपककर, अपने पति के कमरे में पहुँच गयी। वह पलंग पर निश्चल पड़ा था और कम्बल से उसकी कमर तक का शरीर ढका हुआ था। उसका मुख भयानक ढंग से खिंचा और पतला हो गया था और उस पर ऐसा भूरा पीलापन छा गया था, जो किसी जीवित मनुष्य के ऊपर नहीं होता। केवल उसके माथे, उसकी काली भौहों और उसकी परिचित मुस्कान से पता चलता था कि वह दीमोव है। ओल्गा इवानोव्ना ने उसकी छाती, माथा और हाथों को जल्दी-जल्दी छुआ। छाती अभी तक गरम थी परन्तु माथा और हाथ अप्रिय ढंग से ठंडे

हो चुके थे। और अधमुँदी आँखें घूर रही थीं, ओल्गा को नहीं बल्कि कम्बल को।

"दीमोव! उसने ज़ोर से पुकारा "दीमोव!"

वह उसे समझाना चाहती थी कि जो कुछ हुआ ग़लत हुआ और अभी सब कुछ नष्ट नहीं हुआ है, जीवन को अभी भी सुन्दर और आनन्दमय बनाया जा सकता है, वह एक असाधारण, अद्भुत, महान व्यक्ति है और वह जीवन भर उसकी पूजा करेगी, उसके आगे सिर झुकाएगी और सदैव उसका पवित्र भय मानेगी...

"दीमोव!" उसने उसका कन्धा हिलाते हुए पुकारा। उसे विश्वास नहीं होता था कि वह अब फिर कभी नहीं उठेगा। "दीमोव, दीमोव, मैं कहती हूँ।"

उधर दीवानखाने में कोरोस्तेल्योव नौकरानी से कहा रहा था—

"अब पूछने को रह ही क्या गया? गिरजाघर जाओ और वहीं पूछ लेना कि भिखारिनें कहाँ रहती हैं। वे शव को नहला देंगी और सब कुछ ठीक कर देंगी। वही सारा काम कर देंगी।

वार्ड नम्बर छः



अस्पताल के अहाते में एक छोटी-सी इमारत है जिसके चारों ओर जंगली कटीले फूलों, चुभीली बिछुआ झाड़ी और जंगली भाग का जंगल-सा हैं इसकी छत बेरौनक़ और मोरचा खायी, चिमनी टूटती हुई, जीर्ण बरामदे की सीढ़ियाँ घास से लदी हुई हैं और दिवालों के पलस्तर के हल्के अवशेष ही अब शेष हैं। यह इमारत अस्पताल के सम्मुख पड़ती है और इसका पृष्ठ भाग एक खेत की ओर है, जो कीलें लगे बदरंग घेरे से विभाजित होता है। ऊपर को उठी कीलें, घेरा और स्वयं यह इमारत वही उदासी भरी, मनहूस शक्ल उपस्थित करती है जो हमारे अस्पताल और जेल भवनों की विशेषता है।

यदि आप बिछुआ के झाड़ से भयभीत न हों, तो आप मेरे साथ उस सँकरे मार्ग से आइए, जो इस इमारत तक चला गया है और तब इसके भीतर झाँकिए। सामने का दरवाज़ा खोलते ही हम अपने को एक गलियारे में पाते हैं। दिवालों तथा चूल्हे के बराबर अस्पताल के कूड़े कड़कट के ढेरों का अम्बार लगा हुआ है या जीर्ण-शीर्ण,

अनुपयोग कूड़े का ढेर, गद्दे पुराने चोग़े, बनियाइन, जाँघिये, धारीदार नीली कमीजें, फटे हुए बूट, यह सब अड़गड़ाकर बदबूदार अम्बार के रूप में पड़ा हुआ है।

चौकीदार निकीता, जो अपने कोट की बाँह पर बाबा आदम के ज़माने की पट्टियाँ लगाये रहनेवाला पुराना सिपाही है और जो बराबर अपने दाँतों के बीच पाइप दाबे रहता है, कूड़े के इस ढेर पर आराम करता रहता है। उसकी बड़ी घनी भौहें, कठोर और नशे से तमतमाये चेहरे को भेड़ों की रखवाली करनेवाले स्तेपी कुत्ते की-सी आकृति प्रदान करती हैं, उसकी नाक लाल है। छोटा, दुबला और इकहरे बदन का होते हुए भी उसकी चालढाल में एक रोब है, और उसकी मुट्ठियाँ बहुत बड़ी-बड़ी हैं। वह उन एकनिष्ठ विश्वासपात्र, कार्यकुशल और बुद्धू लोगों में से है जो संसार की चीज़ से व्यवस्था को सर्वोपरि मानते हैं और यह विश्वास करते हैं कि मरीज़ों के लिए अच्छी पिटाई के मुक़ाबले और कोई चीज़ नहीं है। यह विश्वास रखते हुए कि व्यवस्था को बनाये रखने के लिए इसके सिवा कोई चारा नहीं है वह मुँह, सीने और पीठ पर अन्धाधुन्ध रूप से मुक्कों की वर्षा करता रहता है।

यहाँ से हम उस विस्तृत कमरे में प्रवेश करते हैं जो सिवाय उस जगह के जो गलियारे ने ले रखी है, इस पूरी इमारत को घेरे हुए है। दीवालें मटियाले नीले रंग से रंगी हुई हैं, चिमनी-विहीन पुराने झोंपड़े की तरह छत धुएँ से काली पड़ गयी है, जिससे यह संकेत मिलता है कि चूल्हे जाड़ों में कमरे को अपने विषाक्त धुएँ से भरते होंगे। खिड़कियाँ भीतर की ओर को लगे लोहे के छड़ों सहित घिनौनां रूप प्रकट करती हैं। फ़र्श की लकड़ी की खपच्चियाँ मैली और छिली हुई हैं। यह स्थान सड़ी हुई गोभियों की महक, धुआँ उगलती लैम्पों, खटमलों और अमोनिया से महकता रहता है। यहाँ पहुँचते ही यहाँ की दुर्गन्ध से आपको यह ख्याल होता है कि आप किसी जंगली जानवरों के बने घर में घुस आये हैं।

चारपाइयाँ फ़र्श में जड़ी हुई हैं। अस्पताल के नीले चोग़ों में

लिपटे हुए तथा रात की टोपियाँ पहने हुए आदमी इन पर बैठे हुए एवं लेटे हुए मिलेंगे। ये मानसिक रोगी हैं।

यहाँ ये पाँच रोगी हैं। इनमें से केवल एक ही उच्चवर्ग से सम्बन्धित है, शेष सब साधारण जन हैं। वह, जो दरवाज़े के बिल्कुल समीप है, एक लम्बा दुबला आदमी है, जिसकी मूँछें लाल रंग की और आँखें रोने से लाल हैं, यह मुट्ठियों पर सिर रखे हुए बैठा है और नज़र गड़ाकर सामने की ओर ही घूरता रहता है। रात और दिन वह ग़म मनाता रहता है, वह सिर हिलाता रहता, उसाँस भरता और मुँह मोड़ते हुए मुस्कराता। बातचीत में वह शायद ही कभी हिस्सा लेता और उससे बोलने पर वह कभी जवाब न देता। जब उसके लिए खाना-पानी आता है तो वह उन्हें यन्त्रवत ग्रहण करता है। उसकी पीड़ा निरन्तर खाँसी और गालों पर छा जानेवाली ललाई से लगता है कि तपेदिक की शुरू की मंज़िल में है।

दूसरी चारपाई पर एक छोटे-से फुर्तीले और जानदार बूढ़े आदमी ने अधिकार कर रखा है, जिसकी दाढ़ी नुकीली और बाल किसी नीग्रो के समान काले घुँघराले हैं। दिन में वह या तो इस खिड़की से उस खिड़की तक फुदकता फिरता या चारपाई पर पलथी मारकर बैठा रहता। इस बीच बारी-बारी से वह या तो चिड़ियों की तरह अथक रूप से सीटी बजाता, धीमे स्वर में गाता या फिर केवल दबी आवाज़ में हँसता। रात में भी वह बालकों जैसी चपलता और खुशमिज़ाजी का प्रदर्शन किया करता, प्रार्थना करने के लिए वह उठ खड़ा होता, यानी अपने सीने को अपने दोनों मुक्कों से पीटने लगता और दरवाज़े पर खटर-पटर करने लगता। वह टोप बनानेवाला यहूदी मोज़ेज़ है और बीस बरस पहले जब उसकी दुकान जली तब से वह पागल है।

वार्ड नम्बर छः का वही एक मात्र निवासी है, जिसको भवन से बाहर अस्पताल के अहाते में और बाहर सड़क पर जाने की अनुमति है। वर्षों से वह इस विशेषाधिकार का आनन्द लेता रहा है, सम्भवतः इस कारण कि वह अस्पताल में इतने लम्बे समय से रहता आया है

और ऐसा शान्त एवं निरापद पागल है कि नगर के परिहास का केन्द्र बिन्दु बना हुआ है, जिसको छोटे बच्चों की भीड़ और कुत्तों से घिरा हुआ देखना प्रतिदिन के जीवनक्रम का एक अंग बन गया हैं अपने अस्पताल के चोग़े, रात की बेतुकी टोपी और स्लीपरों को पहने हुए या कभी-कभी नंगे पाँव और चोग़े के नीचे बिल्कुल नंगा हो, वह बाज़ारों में घूमता-फिरता और छोटी दुकानों के सामने और फाटकों पर एक कोपेक माँगते हुए रुकता जाता; कहीं से उसे खमीरे की रोटी का टुकड़ा और कहीं से थोड़ी-सी क्वास या एक कोपेक मिलता और इसके बाद वह अपने अस्पताल में सन्तुष्ट और धनी होकर लौट जाता। जो कुछ भी लेकर वह लौटता है उसे निकीता निकाल लेता है। इस काम को सिपाही लट्ठमार ढंग से और गुस्से से करता है, वह उसकी जेबों की तलाशी लेते हुए उन्हें उलट देता और ईश्वर को साक्षी बनाते हुए कहता कि वह अब भविष्य में कभी भी उस यहूदी को बाहर बाज़ारों में जाने की इजाज़त नहीं देगा और कहता कि अव्यवस्था से बढ़कर निकम्मी बात कुछ नहीं है।

मोज़ेज़ परमार्थी व्यक्ति है। वह अपने कमरे के साथियों के लिए जब वे प्यासे रहते, पानी ले आता, जब वे सो जाते, उन्हें ओढ़ना उढ़ा देता, प्रतिज्ञा करता कि वह हर एक के लिए एक-एक कोपेक ले आएगा और सबके लिए नयी टोपियाँ बना देगा। वही है जो अपने बाईं ओर के पड़ोसी को जिसको लकवा मार गया है चम्मच से खाना खिलाता है। यह काम वह किसी दया की, अथवा मानवीय भावना की दृष्टि से नहीं करता, बल्कि केवल उदाहरण के अनुसरण स्वरूप अज्ञात ही अपने दाहिनी ओर के पड़ोसी ग्रोमोव के प्रभाव में आकर करता है।

लगभग 33 वर्षीय इवान दिमीत्रिच ग्रोमोव, जो अच्छे परिवार का है और जो कभी नाज़िर और प्रान्तीय सरकार के कार्यालय में सेक्रेटरी के पद पर था, हमेशा सताये जाने की भावना से पीड़ित, मानसिक रोगी है। वह या तो सिकुड़ा हुआ अपनी चारपाई पर लेटा

रहता या आगे पीछे टहलता रहता जैसे वह व्यायाम कर रहा हो। वह शायद ही कभी बैठा हुआ मिलता। वह निरन्तर उत्तेजना और आवेश की स्थिति में रहता है। हमेशा उसकी मुद्रा अस्पष्ट और अनिश्चित बात होने की प्रतीक्षा की उत्कण्ठा से तनी रहती है। गलियारे में ज़रा-सी सरसराहट या अहाते में आवाज़ होने पर वह अपना सिर ऊँचा कर लेता और सुनने लग जाता कि क्या वे उसकी को पकड़ने के लिए हैं? क्या वे उसी को ढूँढ़ रहे हैं? ऐसे क्षणों में उसका चेहरा अपार व्यग्रता और घृणा की अभिव्यक्ति करता है।

उसकी ऊँची उठी हुई गाल की हड्डियोंवाला चौड़ा, पीला और व्यथित चेहरा मुझे अच्छा लगता है। यह दर्पण के सदृश्य एक ऐसा चेहरा है जिस पर निरन्तर संघर्ष और भय से प्रताड़ित आत्मा का बिम्ब प्रतिलक्षित होता रहता है। उसके मुँह बनाने का ढंग विचित्र और रुग्ण है। लेकिन वे हल्की रेखाएँ, जिन्हें गहरे और वास्तविक कष्ट ने उसके चेहरे पर खींच दिया है, भावात्मक और विचारपूर्ण हैं और उसकी आँखों में सुखद एवं विवेकपूर्ण प्रकाश है। मैं इस आदमी को पसन्द करता हूँ जो निकीता को छोड़कर सदैव सबके साथ नम्र, दयालु और सहिष्णु है। यदि किसी का कोई बटन या चम्मच नीचे गिर जाता है, तो वह अपने बिस्तर से कूद कर उसे उठाकर रख देता है। वह सुबह उठते ही सबको अभिवादन करते हुए शुभ प्रभात और सोने से पहले शुभ रात्रि कहता है।

उसके मुँह बनाने के ढंग और उस तनाव खिंचाव को छोड़कर जिसके निरन्तर दबाव से वह पीड़ित रहता है, उसकी विक्षिप्तता निम्नलिखित रूपों में प्रदर्शित होती है। सन्ध्या के समय कभी-कभी वह अपने चोग़े को अपने चारों ओर लपेट लेता और बराबर काँपते हुए, दाँतों को किटकिटाते हुए वह तेज़ी से कमरे के इस सिरे से उस सिरे तक और चारपाइयों के बीच आता-जाता रहता। ऐसी हालत में उसकी दशा किसी तेज़ बुख़ार चढ़े हुए व्यक्ति की जैसी हो जाती है। अपने कमरे के साथियों के सामने जिस तरीके से ठहरकर उन्हें देखने

लगता है उससे यही आभास मिलता है कि उसे कोई बहुत महत्त्वपूर्ण बात उनसे कहनी है, लेकिन स्पष्टतः यह समझते हुए कि कोई उसे न सुनता या न समझता वह अपना सिर अधीरता से हिलाता है और फिर अपना घूमना जारी कर देता है। किन्तु शीघ्र ही बात करने की इच्छा और तमाम विचारों पर हावी हो जाती है और वह मुक्त रूप से भाषण शुरू कर देता है। आकुल, भावोत्तेजक प्रवाह ज्वरग्रस्त रोगी के प्रलापों की तरह उसकी निर्बन्ध और असम्बन्धित वक्तृता हर वक़्त समझ में नहीं आती। लेकिन उसके शब्दों और सुरों में ऐसा कुछ है कि वह अत्यन्त ही हृदयग्राही है। वह जब बोलता है तो उसमें आप एक विवेकपूर्ण मानव और पागल व्यक्ति दोनों को एक साथ पाते हैं। लिखावट में उसके निर्बन्ध प्रलापों को उतारना कठिन होगा। वह मानव की नीचवृत्ति पर भाषण करता, उस उत्पीड़न पर बोलता जो सत्य को नष्ट करता है, उस सुन्दर जीवन पर बोलता जिसका इस विश्व में एक दिन उदय होगा और खिड़कियों पर लगे हुए उन लोहे के छड़ों के सम्बन्ध में कहता जो बराबर उसको उत्पीड़कों की मूर्खता और निर्दयता का स्मरण कराते रहते हैं। इन सबका परिणाम है तारतम्यविहीन ऐसी अनगढ़ शैली के गीत, जो यद्यपि पुराने हो गये हैं, फिर भी अभी अन्त तक नहीं गाये गये हैं।

आज से बारह या पन्द्रह वर्ष पूर्व नगर के मुख्य बाज़ार में कोई एक ग्रोमोव नाम का अधिकारी अपने ही मकान में रहता था, वह ठोस और सम्पन्न आदमी था। उसके दो लड़के थे, सेर्गेई और इवान। विश्वविद्यालय में तीन वर्षों तक अध्ययन करने के पश्चात सेर्गेइ को तेज़ गति से बढ़नेवाला यक्ष्मा हुआ और वह मर गया। यह मृत्यु विपत्तियों के क्रमों का आरम्भ थी जिसने ग्रोमोव परिवार को पराभूत कर दिया। सेर्गेइ की अन्तिम क्रिया के एक सप्ताह बाद उस वृद्ध पर जालसाज़ी और ग़बन का मुक़दमा चला और इसके कुछ ही समय बाद वह टाईफ़स से जेल-अस्पताल में मर गया। उसके मकान और जायदाद को नीलाम कर दिया गया और इवान दिमीत्रिच और

उसकी माँ निराश्रित हो गये।

जब उसका बाप जीवित था इवान दिमीत्रिच पीटर्सबर्ग में रहते हुए विश्वविद्यालय में अध्ययन कर रहा था। वह तब घर से 60 या 70 रूबल प्रतिमाह पाता रहता था, जिससे उसे कभी भी अभाव का ज्ञान नहीं हुआ था। लेकिन अब अपने जीवन में उसे कठोर परिवर्तन करने के लिए बाध्य होना पड़ा। सुबह से लेकर रात तक उसे काम करना पड़ता। कुछ पैसों पर उसे पढ़ाना पड़ता, दस्तावेज़ों की नकल उतारनी पड़ती और तब भी वह भूखा ही रह जाता था क्योंकि जो कुछ वह कमाता वह अब अपनी माँ को भेज देता था। इवान दिमीत्रिच इस तरह के जीवन के लिए उपयुक्त नहीं था। उसका दिल टूट गया। वह बीमार पड़ा और विश्वविद्यालय छोड़कर घर चला गया। यहाँ, छोटे-से नगर के ज़िला स्कूल में प्रभावशाली मित्रों के ज़रिये उसे अध्यापक का काम मिला। लेकिन यह देखते हुए कि वह सहयोगियों के साथ मेल रखने के अयोग्य है, और अपने शिष्यों की सहानुभूति वह प्राप्त नहीं कर पा रहा है, उसने शीघ्र ही वह नौकरी त्याग दी। उसकी माँ मर गयी। वह लगभग छः महीनों तक सिर्फ़ रोटी और पानी पर जीवित रहते हुए बेकार रहा और तब उसने नाज़िर की जगह प्राप्त कर ली। इस अन्तिम पद को वह तब तक लिए रहा जब तक स्वास्थ्य के कारणों से वह हटा नहीं दिया गया।

वह कभी भी, यहाँ तक कि अपने छात्र जीवन में भी स्वस्थ नहीं दिखाई दिया था। वह हमेशा निस्तेज और दुबला था। ज़ुकाम उसे होता रहता था, वह थोड़ा ही खाता-पीता था और उसे नींद अच्छी नहीं आती थी। शराब के एक जाम से उसे चक्कर आने लगते थे और वह मदहोश हो जाता था। वह अपने संगी-साथियों की ओर आकृष्ट होता था, लेकिन अपने चिड़चिड़े और शक्की स्वभाव के कारण ऐसा कोई नहीं था जिसके साथ उसका घनिष्ठ व्यवहार हो, ऐसा कोई नहीं था जिसे वह अपना मित्र कह सके। वह प्रायः नगर के लोगों का जिक्र घृणा के साथ करता। वह कहता रहता कि मैं

उनके घोर अज्ञान और आलस्यपूर्ण पशुवत् जीवन से उकता गया हूँ। उसकी आवाज़ तेज़ थी और वह ज़ोर से एवं भावावेश में बोलता था, हमेशा ही वह या तो आक्रोशपूर्ण भाव में या भावविह्वल और आश्चर्यचकित होकर बोलता था। आप किसी भी विषय की उससे चर्चा छेड़ें, वह वार्तालाप को अपने प्रिय विषय पर ले आता था—हमारे शहर में वातावरण दम घोटनेवाला है, जीवन निस्सार है, समाज उच्च हितों से वंचित है, बोझिल और व्यर्थ अस्तित्व को जैसे-तैसे घसीट रहा है, समाज में हिंसा सस्ती कामुकता और कपटता का बोलबाला है, धूर्त अच्छी तरह से खाते पहिनते हैं, जबकि ईमानदार लोग मुश्किल से दो जून की रोटियाँ जुटा पाते हैं; ज़रूरत स्कूलों, एक स्थानीय प्रगतिशील समाचारपत्र, एक थियेटर, सार्वजनिक भाषणों और बौद्धिक शक्तियों के सहयोग है, समाज को इन बातों के प्रति सजग करना है; उसे यह बताया जाना चाहिए कि स्थिति कितनी भीषण है। लोगों पर निर्णय देने में रंग की वह मोटी पर्त चढ़ाता था, लेकिन उसकी तूलिकाएँ केवल काले और सफेद रंग की ही होती थीं। बीच के रंगों के लिए उनमें स्थान नहीं था। उसके अनुसार मानव जाति में दो ही तरह के लोग हैं, धूर्त और ईमानदार। बीच का-कोई वर्ग नहीं है। स्त्रियों और प्रेम के बारे में वह अत्यधिक उत्साह से बातें करता यद्यपि वह कभी भी प्रेम में नहीं पड़ा था।

उसके नुक़्ताचीनी करनेवाले और चिड़चिड़े स्वभाव के बावजूद हमारे शहर में लोग उसे पसन्द करते थे, उसकी पीठ पीछे बड़े प्यार से उसे वान्या कहकर पुकारते। उसकी कोमलता, लोगों को सहायता पहुँचाने में उसकी तत्परता, उसके ऊँचे आदर्श और नैतिक दृढ़ता, उसके भद्दे कोट, उसकी बीमार आकृति और उसके परिवार पर पड़ी हुई विपत्तियाँ ये सब साथ मिलकर उसके लिए व्यथा-मिश्रित सहृदयतापूर्ण मैत्री की भावना बनाते थे; फिर वह सुशिक्षित और सुपठित भी था, उसके साथी नागरिक कहा करते थे कि ऐसी कोई बात नहीं थी, जिसे वह नहीं जानता था। हर कोई उसे चलता-फिरता

ज्ञानकोश मानता था।

वह खूब पढ़नेवाला था। क्लब में जाकर वह घण्टों बैठ अपनी छोटी-सी दाढ़ी को सहलाते हुए पुस्तकों और मासिक पत्रों इत्यादि के पन्ने उलटता रहता। उसका चेहरा प्रकट करता था कि वह पढ़ता नहीं, किताबों की बातें हड़प रहा है, शायद ही वह इन बातों को दिमाग़ में उलटने-पलटने का समय पाता हो। स्पष्ट था कि पढ़ना उसके लिए एक अस्वस्थ आदत बन गयी थी, क्योंकि जो कुछ उसके हाथ लग जाता उसे वह उसी दिलचस्पी से पढ़ने लगता था, चाहे वह पिछले साल के समाचारपत्र और पंचाँग ही क्यों न हों। घर पर वह सदैव लेटे हुए पढ़ता रहता।

2

पतझड़ के एक प्रातःकाल इवान दिमीत्रिच अपने कोट के कालर को ऊपर उठाये और गली-कूचों और पिछवाड़ों की कीचड़ से गुज़रते हुए किसी नागरिक को डिगरी की दस्तावेज़ देने जा रहा था। वह बदमिज़ाज हो रहा था जैसा कि वह सवेरे के वक़्त हमेशा होता था। एक गली में उसे दो आदमी मिले जो हथकड़ियों में थे और चार सशस्त्र पहरेदारों की निगरानी में चल रहे थे। ऐसी स्थितियों से इवान दिमीत्रिच अभ्यस्त था। इस बातों से उसके अन्दर दया और संकोच की भावनाएँ पैदा होती थीं। लेकिन इस बार वह आश्चर्यजनक ढंग से अकारण ही बहुत प्रभावित हुआ। किसी कारण से सहसा उसके मस्तिष्क में यह बात प्रविष्ट हो गयी कि ऐसा कुछ नहीं था जो उसे भी इन बन्दियों की तरह हथकड़ी पहने कीचड़ भरी गलियों से होते हुए जेल पहुँचाने में रुकावट डाल सके। दस्तावेज़ देने के बाद वह जब घर लौट रहा था, उसे उसका एक परिचित दारोग़ा डाकखाने के पास मिल गया, दुआ सलाम होने के बाद इन्स्पेक्टर कुछ दूरी तक उसके साथ चला और इस बात से ग्रोमोव को शंका हो गयी। जब वह घर लौटा तो बन्दियों और सिपाहियों का ख्याल दिनभर उसे

परेशान करता रहा और एक अजीब मानसिक अशान्ति से उसे पढ़ने और अपने विचारों को स्थिर करने में बाधा होती रही। शाम को उसने अपना लैम्प भी नहीं जलाया और यह सोचते हुए कि वह भी तो गिरफ़्तार किया जा सकता है, हथकड़ी लगाकर जेल में डाला जा सकता है वह सो न सका। वह जानता था कि वह किसी अपराध का दोषी नहीं है, और इस बात का वह आश्वासन दे सकता था कि वह न तो कभी क़त्ल करेगा, न आगज़नी, न चोरी, लेकिन अनजाने संयोगवश अपराध होने की आशंका क्या नहीं थी? इसके अलावा जालसाज़ी की बातें अथवा न्यायविहीन निर्णय क्या नहीं होते? क्या यह प्रसिद्ध लोकोक्ति कि "भिक्षापात्र से या जेल से कोई भी सुरक्षित नहीं है" युगों के अनुभवों को प्रतिबिम्बित नहीं करती थी? और वर्तमान कानूनी कार्रवाइयों में अन्याय होने के अलावा, हो ही क्या सकता था? न्यायाधीश, पुलिस अधिकारी एवं डॉक्टरों जैसे लोग जो मानव-व्यथा को ज़ाब्ते की रोशनी में ही देखते हैं, समय गति के साथ और आदत से इतने हृदयहीन बन जाते हैं कि चाहने पर भी अपने मुवक्किलों के साथ सिवा औपचारिक ढंग के अन्य किसी तरह का व्यवहार नहीं कर सकते। इस सम्बन्ध में उनमें और उस किसान के व्यवहार में कोई अन्तर नहीं होता, जो अपने मकान के पिछवाड़े भेड़ों तथा बछड़ों को उनके खून से अंजान बना मारता है। एक बार जब यह औपचारिक और हृदयहीन दृष्टिकोण बन जाता है तब फिर किसी न्यायधीश के लिए किसी निर्दोष व्यक्ति को उसके अधिकारों से वंचित कर उसे कड़ी क़ैद की सज़ा देने की मनोवृत्ति बनाने में केवल एक ही बात की आवश्यकता रह जाती है—समय। इतना ही आवश्यक समय चाहिए कि चन्द औपचारिक बातों को पूरा किया जा सके जिनके लिए न्यायाधीश को वेतन मिलता है; और बस, फिर सब कुछ खत्म। तब आप रेलवे स्टेशन से डेढ़ सौ मील दूर से इस छोटे-से गन्दे शहर में न्याय और सुरक्षा पाने की कोशिश किया करें! फिर क्या यह बेवकूफ़ी भरी बात नहीं है कि न्याय की बात को सोचा

भी जाए जबकि उत्पीड़न का हर काम समाज द्वारा तर्क-संगत और आवश्यक माना जाता है तथा रिहाई जैसे रहम के हर काम का असन्तुष्ट, प्रतिशोध-भरी भावनाओं के विस्फोट से स्वागत किया जाता है?

दूसरे दिन सुबह इवान दिमीत्रिच अपने बिस्तर से घोर आतंक की स्थिति में जगा। उसके माथे पर ठंडे पसीने की बूँदें झलक रही थीं और यह विश्वास उसमें घर कर गया था कि वह किसी भी मिनट गिरफ़्तार किया जा सकता है। चूँकि पिछले दिन की उत्पीड़क भावनाओं से उसे मुक्ति नहीं मिल पा रही थी, उसने सोचा कि इन बातों के लिए कोई वास्तविक कारण होगा ही। आखिर बिना किसी विशेष कारण के ये बातें दिमाग़ में घुस नहीं सकती थीं।

एक पुलिसमैन अभी उसकी खिड़की के सामने से हौले-हौले गुज़रा था, इसका क्या अर्थ हो सकता है? दो आदमी उसके मकान के दूसरी तरफ़ रुककर चुपचाप खड़े हो गये थे। वे चुपचाप क्यों थे?

दारुण व्यथा में इवान दिमीत्रिच के दिन-रात कटने लगे। जो कोई उसकी खिड़की के सामने से गुज़रता था, उसके सहन में आता, उसे वह भेदिया या खुफ़ियागिरी करनेवाला मान बैठता। ज़िला पुलिस इन्स्पेक्टर की यह आदत थी कि वह दो घोड़ेवाली गाड़ी में बैठकर दोपहर को उस बाज़ार से होकर गुज़रता था। वह देहात के अपने इलाक़े से दफ़्तर जाया करता था, लेकिन इवान दिमीत्रिच को यही प्रतीत होता कि वह बहुत तेज़ी से गाड़ी को हाँके ले जा रहा है और उसके चेहरे पर किसी अर्थपूर्ण बात की छाप है, वह सम्भवतः यह घोषणा करने के लिए कि नगर में एक ख़तरनाक अपराधी रह रहा है, तेज़ी से जा रहा है। जब कभी दरवाज़े की घंटी बजती या फाटक पर किसी की दस्तक पड़ती वह चौंक उठता। यदि कोई ऐसा व्यक्ति जिसे उसने पहले न देखा हो उसकी मकान मालिकिन के पास आता तो उसे बेचैनी मालूम होने लगती थी। जब कभी वह किसी पुलिसमैन अथवा राजनीतिक पुलिस के सामने पड़ जाता तो मुस्कराने

लगता और किसी गीत की कड़ी गुनगुनाने लगता जिससे कि वह सुचित्त मालूम पड़े।

गिरफ़्तार हो जाने के भय से वह सारी रात जगता रहता लेकिन अपनी मकान मालिकिन को यह जताने के लिए कि वह सोया हुआ है ज़ोर-ज़ोर से नाक बजाता रहता और खर्राटे छोड़ता रहता। क्योंकि यदि वह सोया हुआ न रहता तो क्या इससे यह मतलब नहीं निकल सकता था कि किसी कारण से उसकी अन्तरात्मा पर बोझ है और क्या ही बढ़िया सुराग़ यह होता! तथ्यों और सहज बुद्धि से उसे आश्वासन मिलता था कि उसके भय व्यर्थ और नैराश्यजन्य हैं। वस्तु स्थितियों पर व्यापक दृष्टिकोण से विचार करने पर यह स्पष्ट था कि जब तक आत्मा निर्दोष हो गिरफ़्तारी अथवा बन्दी बनाये जाने में भयानक बात कुछ भी नहीं थी। लेकिन जितना वह इस बात पर विवेक और तर्क से विचार करता, उतनी ही तीव्रता से उसकी बेचैनी भी बढ़ती। वह उस साधु की तरह था जो जंगल में अपने लिए एक स्थान बनाने के प्रयत्नों में उसे साफ़ करता जाता था, लेकिन जितना ही वह पेड़-पौधों और झाड़-झंखाड़ों को अपनी कुल्हाड़ी से साफ़ करता उतनी ही अधिक तेज़ी से वे फिर पैदा हो जाते। इवान दिमीत्रिच ने अन्ततः तर्क बुद्धि त्याग दी और अपने को भय और निराशा के हवाले कर दिया।

उसने एकान्त ढूँढ़ना और समाज से बचना आरम्भ कर दिया। अपना काम जिसे कि वह सदैव नापसन्द करता था अब उसके लिए बिल्कुल असह्य हो गया। उसे यह भय हो गया कि कोई कहीं उसके साथ कोई गन्दी हरकत न कर दे, बिना उसके जाने ही उसकी जेब में घूस के रूप में कुछ डाल न दे और तब उसका भंडाफोड़ कर बैठे। कहीं किसी तरह से सरकारी काग़ज़ात में उससे कोई गलती न हो जाए जो जालसाज़ी समझी जाए या ऐसा न हो जाए कि वह उस धन को खो बैठे जो उसका न हो। यह बात ध्यान देने योग्य थी कि उसका दिमाग़ कितना तेज़ और सर्वतोमुखी हो गया था, अब वह

प्रतिदिन हज़ारों तरीक़े सोच निकालता था कि क्यों अपने सम्मान और स्वतन्त्रता के लिए भयाकुल रहना चाहिए। दूसरी ओर बाह्य संसार से और पढ़ने में उसकी दिलचस्पी कम होती जा रही थी। उसकी स्मरणशक्ति काफ़ी घट चुकी थी।

बसन्त में, बर्फ़ पिघल जाने के बाद क़ब्रगाह के बाहर नाले में एक बूढ़ी औरत और एक लड़के की लाशें मिलीं। यह दोनों लाशें सड़ी गली दशा में थीं और उन पर ऐसे निशान थे जिनसे यह स्पष्ट था कि दोनों की हत्या हुई है। सारे नगर में इन लाशों और अज्ञात क़ातिलों की चर्चा के अलावा कोई दूसरी बात ही न रह गयी। लोगों को यह सोचने से रोकने के लिए कि वह क़ातिल है, इवान दिमीत्रिच अपने चेहरे पर मुस्कराहट लिए गलियों में घूमता रहता। जब कभी वह अपने परिचितों से मिलता तो अपने चेहरे पर बारी-बारी से आवेश और उद्वेग लाकर समझाता कि कमज़ोर और अरक्षित लोगों को क़त्ल करने से बढ़कर कोई दूसरा नीच कर्म नहीं हो सकता। लेकिन शीघ्र ही वह इस स्थायी बहानेबाज़ी से ऊब गया और उसने यह निश्चय किया कि उसकी स्थितिवाले व्यक्ति के लिए यही सबसे अच्छा है कि वह अपने तहखाने में छिपकर पड़ा रहे। उसने इस तरह एक दिन एक रात और एक दूसरा दिन बिता दिया। और सर्दी उसकी हड्डियों तक घुस गयी, जैसे ही अँधेरा हुआ चोर की तरह वह अपने कमरे में घुस आया। सुबह होने तक वह कमरे के बीच में खामोश खड़ा सुनता रहा। सुबह होने से पहले कुछ चूल्हे बनानेवाले मकान-मालिकिन के पास आये। इवान दिमीत्रिच को अच्छी तरह से ज्ञात था कि ये रसोईघर के चूल्हे की मरम्मत करनेवाले हैं। लेकिन भय ने उससे चुपके से कहा कि चूल्हे बनानेवालों के वेश में ये पुलिसवाले हैं। वह चुपके से घर के बाहर, बिना कोट और टोप लिए खिसक गया और भय से आक्रान्त गलियों में तेज़ी से भागा। कुत्ते भौंकते हुए उसके पीछे दौड़ने लगे। एक आदमी ने उसके पीछे से चिल्लाकर आवाज़ लगायी, हवा उसके कानों में सनसनाहट भर गयी और इवान दिमीत्रिच को यह प्रतीत होने लगा कि संसार की सारी-हिंसा

सिमटकर उसके पीछे आ गयी है और उसका पीछा कर रही है।

उसको रोका गया और उसे घर पहुँचा दिया। उसकी मकान-मालिकिन डॉक्टर बुलाने भेजी गयी। डॉक्टर आन्द्रेई येफ़ीमिच ने, जिसके बारे में आगे अधिक बतलाया जाएगा, ठंडे फाये और खुशबूदार तेल का नुस्खा बताया और दुखित होकर सर हिलाते हुए चला गया। मकान-मालिकिन से उसने जाते-जाते कहा कि वह सब आगे नहीं आएगा, क्योंकि लोगों को पागल होने से रोकना नहीं चाहिए। चूँकि इवान दिमीत्रिच के पास गुज़र-बसर के लिए भी पैसा नहीं था और वह इलाज का खर्च नहीं उठा सकता, उसे अस्पताल में भेज दिया गया जहाँ उसे उस वार्ड में जहाँ गुप्त रोगों के मरीज़ रहते हैं, जगह दे दी गयी। वह रात को सोता नहीं था, चिड़चिड़ा रहता था और दूसरे मरीज़ों को परेशान करता रहता था, शीघ्र ही आन्द्रेई येफ़ीमिच की आज्ञा से वह वार्ड नम्बर छः में बदल दिया गया।

एक साल की भीतर ही नगर के लोग उसे भूल गये। और उसकी किताबों को जिन्हें मकान-मालिकिन ने छप्पर के नीचे एक गाड़ी में ढेर कर दिया था, पड़ोस के लड़के उठा ले गये।

3

इवान दिमीत्रिच के बाईं ओर का पड़ोसी जैसा कि पहले ही बताया गया है यहूदी मोज़ेज़ था और उसके दाएँ हाथ का पड़ोसी गोल-मटोल कुप्पा-सा एक किसान था जिसका चेहरा शून्य और अर्थहीन आकृति का आभास देता था। वह क्रियाशून्य, पेटू एवं गन्दे पशु के सदृश्य ही था जो बहुत पहले से ही यह भूल चुका था कि सोचना अथवा महसूस करना क्या होता है। उसके तन-बदन से दम घोंट देनेवाली तीखी बदबू आती रहती थी।

निकीता, जिसका कर्तव्य इसकी देख-भाल करने का था, उसको अपनी शक्ति भर बुरी तरह पीटता और इस काम में वह अपनी मुट्ठियों का भी ख्याल न करता। यह बात इतनी भयानक नहीं थी, कि वह

पीटा जाता था–ऐसी बातों से अभ्यस्त होना ही पड़ता है–जितनी कि यह थी कि उस चेतनशून्य जानवर पर मार की कोई प्रतिक्रिया नहीं होती; न तो वह मार पड़ने पर कराहता, न भाव में अन्तर लाता, न पलक झपकाता, वह बस एक भारी-भरकम पीपे की तरह एक ओर से दूसरी ओर लुढ़कता रहता।

वार्ड नम्बर छः का पाँचवां और अन्तिम निवासी एक शहरी आदमी है जो कि यहाँ आने के पहले डाकघर में डाक छाँटता था। यह दुबला-पतला, सुनहरे बालोंवाला, दयालु किन्तु एक तरह से थोड़ा-सा धूर्त दीखनेवाले चेहरे का व्यक्ति है। उसकी सौम्य और समझदार आँखों की प्रसन्नतामई आकृति से यह मालूम पड़ता है कि वह चलता-पुर्जा है और कोई महत्त्वपूर्ण एवं प्रसन्नता भरा रहस्य अपने अन्दर सँजोए हुए है। वह अपने तकिये या गद्दे के नीचे कुछ चीज़ छिपाकर रखता है। इसलिए नहीं कि कोई उसे उठा लेगा या चुरा लेगा, बल्कि इसलिए कि वह शरमाता है। कभी-कभी वह उठकर खिड़की तक चला जाता और वहाँ अपनी पीठ औरों की ओर करके किसी चीज़ को अपने सीने से लटका लेता और उसे घूरने लगता; ऐसे क्षणों में अगर कोई उसके पास आ जाता तो वह उस वस्तु को नोच कर दूर कर लेता और झेंप जाता। लेकिन उसके रहस्य को जान लेना कोई मुश्किल बात नहीं है।

"तुम मुझे बधाई दे सकते हो," वह कभी-कभी इवान दिमीत्रिच से कहता, "स्तानिसलाव के दूसरी श्रेणी के सितारेवाले तमग़े के लिए मेरी सिफ़ारिश की गयी है। यह ख़िताब प्रायः विदेशियों को ही दिया जाता है, लेकिन किसी वजह से वे मेरे पक्ष में इस नियम में अपवाद बनाना चाहते हैं।" वह मुस्कराता हुआ अपने कन्धों को हिलाते हुए कहता–"मैं कहता हूँ मैंने कभी इसकी आशा नहीं की थी।"

इवान दिमीत्रिच उत्तर देता–"इन बातों के सम्बन्ध में मैं कुछ नहीं जानता।"

"किन्तु तुम यह तो जानते हो कि देर-सबेर मैं होने क्या जा रहा

हूँ?" काइंयापन से अपनी आँखों को कुछ सिकोड़ता हुआ, यह भूतपूर्व डाक छाँटनेवाला कहता जाता—"मैं निश्चित रूप से जानता हूँ कि मुझे स्वेडन के ध्रुव तारेवाला तमग़ा प्राप्त होगा। ऐसे ख़िताब के लिए कुछ कष्ट उठाना उपयुक्त ही है। सफ़ेद क्रास और काला फ़ीता! बहुत सुन्दर लगेगा!"

जीवन कहीं भी इतना नीरस नहीं होगा जितना कि अस्पताल की इस छोटी-सी इमारत में। सबेरे लकवे के बीमार और मोटे किसान को छोड़कर सभी मरीज़ गलियारे में निकलकर वहाँ काठ के बने बरतन में रखे पानी से मुँह हाथ धोते हैं तथा आपने चोग़ों के पल्लों से उन्हें पोंछते हैं। इसके बाद वे निकीता द्वारा मुख्य भवन से लाए गये टीन के कटोरों से चाय पीते हैं। हर एक को एक कटोरा भर चाय दी जाती है। दोपहर को उन्हें खट्टी गोभियों का शोरबा और दलिया मिलता है। रात के भोजन में उन्हें दोपहर के भोजन से बचा दलिया ही मिलेगा। खानों के बीच वे अपनी चारपाइयों पर लेटे रहेंगे, सोते रहेंगे, खिड़कियों से बाहर देखते रहेंगे अथवा कमरे में एक छोर से दूसरे छोर तक चहलक़दमी करते रहेंगे। ऐसे ही दिन कटते जाते हैं। यहाँ तक कि भूतपूर्व डाक छाँटनेवाला भी ख़िताबों की वही बातें सारे समय करता रहेगा।

कोई नया चेहरा वार्ड नम्बर छः में प्रायः नज़र नहीं आता। डॉक्टर ने लम्बे अर्से से और ज़्यादा मानसिक रोगियों को अस्पताल में भर्ती करना बन्द कर दिया है और बाहरी दुनिया के अधिकांश लोग पागलख़ानों को देखना गवारा नहीं करते। हर दो महीनों पर एक बार नाई सेम्योन लाज़रिज वार्ड नम्बर छः आता है। हम इस बात का वर्णन नहीं करेंगे कि वह बीमारों के बाल किस तरह काटता है और किस तरह निकीता इसमें उसकी मदद करता है। हम यह भी नहीं बताएँगे कि बीमारों में किस तरह का आतंक इस शराबी और मुस्कराते हुए नाई के दीखने पर ही फैल जाता है।

नाई के अलावा और कोई इस इमारत में पदार्पण नहीं करता। रोगियों को प्रतिदिन निकीता की उसी अप्रिय संगत में निर्वाह करना पड़ता है।

लेकिन कुछ समय एक अनोखी अफ़वाह अस्पताल में फैलनी शुरू हो गयी है।

लोगों का कहना है कि डॉक्टर ने नित्य वार्ड नम्बर छः में जाना शुरू कर दिया है।

4

यह वास्तव में अजी अफ़वाह है! डॉक्टर आन्द्रेई येफ़ीमिच रागिबन अपने तरीक़े के अनोखे आदमी है। ऐसा सुना जाता है कि वह अपने युवा काल के आरम्भ में बहुत धार्मिक थे और उन्होंने अपना जीवन धर्म क्षेत्र में ही लगाने का हृदय से निश्चय कर लिया था। सन् 1863 में हाई स्कूल कर लेने के बाद वह इसी इरादे से धार्मिक शिक्षा-संस्था में प्रवेश करना चाहते थे, परन्तु उनके पिता ने जो कि उपाधि प्राप्त डॉक्टर थे और एक सर्जन थे, उनकी इस बात का मखौल उड़ाया, उन्होंने घोषणा कर दी कि अगर वह पादरी बने तो वह उन्हें अपना पुत्र नहीं मानेंगे। मैं नहीं कह सकता इन सब बातों में कहाँ तक सत्यता है, लेकिन मैंने आन्द्रेई यफ़ीमिच को यह कई बार स्वीकार करते सुना है कि डॉक्टरी अथवा विज्ञान की किसी भी विशेष शाखा को पेशे के रूप में ग्रहण करने की उनकी इच्छा नहीं रही।

जैसा भी हो, डॉक्टरी विभाग से स्नातक बनने के बाद वह पुरोहिताई की ओर नहीं गये। वह अपनी धार्मिक वृत्ति के लिए प्रख्यात नहीं थे और न अपने डॉक्टरी जीवन के आरम्भ में और न अब वह पादरी लगते हैं।

वह भारी-भरकम और किसान की तरह ही गँवार दिखाई देनेवाले हैं। उनका चेहरा, दाढ़ी, खड़े और सख़्त बाल, बेढंगा ढाँचा, उन्हें किसी राह के किनारे स्थित सराय के खाये पिये, हठी और कठोर मालिक का रूप देते हैं। उनका गम्भीर चेहरा नीली नसों से ढँका हुआ है, आँखें छोटी हैं और नाक लाल। वह लम्बे और मोटे

कन्धोवाले हैं जिनके हाथ पाँव बड़े-बड़े हैं और ऐसा मालूम पड़ता है मानों वह किसी बैल को अपने मुक्कों के ज़ोर से ही धराशायी कर देंगे। लेकिन वह आहिस्ता से चलते और उनकी चाल में सावधानी व घबराहट-सी रहती है; गलियारे में किसी से सामना हो जाने पर वही सबसे पहले रुकते हैं और "माफ़ कीजिए" हुए रास्ता देते हैं। उनकी आवाज़ जैसा कि आपका ख़्याल होगा भारी नहीं बल्कि बाँसुरी-सी सुरीली होगी। उनकी गरदन पर एक छोटी-सी बतड़ी है जिसकी वजह से वह कड़ा कालर नहीं पहनते और वह सूती या मुलायम कपड़े की कमीज़ें पहने हुए ही आते-जाते दिखाई देते। वह डॉक्टर की तरह कपड़ा क़तई नहीं पहनते। उनका सूट दस साल तक चलता है और जब कभी वह नये सूट में भी होंगे जिसे कि वह साधारणतः किसी यहूदी द्वारा संचालित घटिया किस्म की दुकान पर खरीदते हैं तो वह भी उसी तरह जीर्ण दिखाई देगा जैसा कि कोई पुराना सूट होता है। वह उसी कोट को पहने हुए रोगियों को देखते हैं, उसी को पहने हुए भोजन करते हैं और उसी में दोस्तों से मिलते हैं। इसमें कोई कंजूसी नहीं; व्यक्तिगत पहनावे-दिखावे के प्रति उनकी बिल्कुल उपेक्षा भर है।

जब आन्द्रेई येफ़ीमिच अपने पद पर इस नगर में आये थे, तब यह 'धर्मार्थ संस्था' बहुत ही गिरी हुई दशा में थी। तब दुर्गन्ध के कारण वार्डों के कमरों में आने-जाने के रास्तों में अथवा अस्पताल के आँगन में साँस लेना भी दुश्वार था। अस्पताल के नौकर, नर्स और उनके परिवार रोगियों के साथ ही वार्डों में सोया करते थे। हर किसी को शिकायत रहती थी कि तिलचटे, खटमल, और चूहों की वजह से जीवन दूभर हो गया है। चीरफाड़ के विभाग में चर्मरोग हमेशा बना रहता था। सारे अस्पताल में केवल दो नश्तर थे और थर्मामीटर एक भी नहीं था। नहाने के टबों का इस्तेमाल आलुओं को रखने के लिए होता था। सुपरिण्टेंडेंट, बड़ी नर्स और सहायक डॉक्टर रोगियों की खुराकों में लूट मचाते रहते थे। आन्द्रेई येफ़ीमिच के स्थान पर जो

डॉक्टर पहले काम करता, उसके सम्बन्ध में तो यह भी कहा जाता था कि अस्पताल के लिए निर्धारित शराबों से वह सट्टेबाज़ी का व्यापार चलाता था और नर्सों तथा बीमार औरतों का एक पूरा हरम रखे हुए था। नगर के निवासी इस अपमानजनक स्थिति से अच्छी तरह परिचित थे, और कभी-कभी वह इस स्थिति से सम्बन्धित कहानियों को अतिशयोक्तिपूर्ण ढंग से भी कहते थे, लेकिन इस बात का उन्होंने कभी बुरा नहीं माना। कुछ तो इसको क्षम्य भी समझते थे; उनका कहना था कि इस अस्पताल में केवल किसान तथा निम्न वर्गों के रोगी ही दाख़िल होते हैं। घर पर उनकी यहाँ से भी बुरी स्थिति है, अतएव उनके लिए शिकायत करने का कोई कारण नहीं हो सकता, यहाँ क्या उन्हें मुर्ग़ खिलाया जाता? दूसरे लोगों का कहना यह था कि ज़ेम्स्त्वो की सहायता के बिना नगर से एक अच्छी तरह के सुव्यवस्थित अस्पताल चलाने की आशा नहीं की जा सकती। बुरा सही, एक अस्पताल तो हो गया है और लोगों को इसके लिए कृतज्ञ होना चाहिए। और ज़ेम्स्त्वो जो कि स्वयं बहुत पहले नहीं खुला था, न तो नगर में और न इसके पास-पड़ोस में ही कोई अस्पताल खोलने के पक्ष में था, क्योंकि जैसा वे कहते थे, एक अस्पताल पहले से ही मौजूद है।

आन्द्रेई येफ़ीमिच अपने प्रथम निरीक्षण के पश्चात इस नतीजे पर पहुँचने के लिए बाध्य हो गये कि यह संस्था एक अनैतिक संस्था है जिसका समाज के स्वास्थ्य पर बहुत ही बुरा असर पड़ रहा है। उनकी राय में सबसे बुद्धिमत्तापूर्ण बात यह थी कि रोगियों को हटा दिया जाए और अस्पताल बन्द कर दिया जाए। लेकिन उन्होंने सोचकर तय पाया कि यह बात तो उनकी इच्छा शक्ति मात्र से पूरी होगी नहीं। फिर इससे लाभ क्या? कोई नैतिक और भौतिक दोनों तरह की गन्दगियों को एक स्थान से बुहार कर हटाता है तो निश्चित यप से वह किसी दूसरे स्थान पर एकत्रित हो जाती हैं। इस गन्दगी के स्वयं ही अदृश्य होने की प्रतीक्षा करनी पड़ेगी। इसके अलावा

चूँकि लोगों ने अस्पताल खोला था और उसको बर्दाश्त कर रहे हैं, इसलिए इसका अभिप्राय ही यह है कि इसकी उन्हें आवश्यकता है। मूर्खतापूर्ण अन्धविश्वास व प्रतिदिन की यह सब गन्दगी एवं वीभत्सता आवश्यक वस्तुएँ हैं। समय आने पर यही सब बातें उपयोगी वस्तुओं में परिवर्तित हो जाएँगी, जैसे कि गोबर उर्वरा मिट्टी बन जाता है। दुनिया में ऐसी कोई भी अच्छी वस्तु नहीं है जो कभी गन्दगी से उत्पन्न नहीं हुई हो।

आन्द्रेई येफ़ीमिच ने जब अपना पद सँभाला तो ऐसा मालूम पड़ता था कि इस सम्पूर्ण अव्यवस्था के प्रति उन्होंने कोई बड़ा बवाल नहीं उठाया। उन्होंने अस्पताल के सहायकों तथा नर्सों से इतना ही भर कहा कि वे रात में वार्डों में न रहा करें और चीरफाड़ के औज़ारों से भरी दो अलमारियाँ लगवा दें। सुपरिण्टेंडेंट, बड़ी नर्स तथा चर्मरोग उसी तरह रहते रहे जिस तरह कि पहले।

आन्द्रेई येफ़ीमिच बहुत तीव्रता के साथ विवेक और ईमानदारी की सराहना करते हैं लेकिन उनमें चरित्र की न वह शक्ति है और न अपने अधिकारों में वह विश्वास कि जिससे वह अपने चारों ओर के जीवन को ईमानदारी और सुसंगत आधार पर संगठित कर सकें। वह ऐसे आदमी नहीं जो आज्ञाएँ दे सकें, प्रतिबन्ध लगा सकें तथा किसी बात पर अड़ सकें। ऐसा प्रतीत होता था कि जैसे उन्होंने इस बात की प्रतिज्ञा कर रखी हो कि कभी भी वह चिल्लाएँगे नहीं, न आज्ञासूचक क्रिया का प्रयोग करेंगे। उनके लिए 'मुझको दो' या 'लाओ' कहना कठिन पड़ता है। जब भूख का अनुभव करेंगे तो हिचकिचाहट से खाँसते हुए अपने रसोइए से कहेंगे, "अगर मुझे थोड़ी-सी चाय मिल जाए तो..." या "अगर मुझे भोजन मिल जाए तो..." जहाँ तक सुपरिण्टेण्डेण्ट से चोरी न करने के लिए कहना अथवा उसे हटाना अथवा इस अनावश्यक पद को समाप्त कर देने की बात का सम्बन्ध है, यह सब उनकी शक्ति के बाहर की बातें हैं। लोग जब आन्द्रई येफ़ीमिच से झूठ बोलते हैं या उनकी खुशामद

करते हैं या किसी बिल्कुल झूठे हिसाब पर हस्ताक्षर करने के लिए कहते हैं तो वह शर्म से लाल हो उठते हैं व अपराधी की तरह हस्ताक्षर कर देते हैं। जब रोगी उनसे भूखे रखे जाने अथवा अभद्र व्यवहार की शिकायत करते हैं तो वह पसोपेश में पड़े हुए जान पड़ते हैं। इस पर वह क्षमासूचक तरीक़े से गुनगुनाते हुए कहते हैं—

"ठीक है। मैं उसकी ओर ध्यान दूँगा...कहीं कोई गलतफ़हमी हो गयी होगी..."

आरम्भ में तो आन्द्रेई येफ़ीमिच ने बड़ी लगन से काम किया। सुबह से दोपहर के भोजन के समय तक वह रोगियों को देखते रहते थे, चीरफाड़ करते रहते थे, और यहाँ तक कि बच्चा जनाने का काम भी खुद कर लेते थे। महिलाओं का यह कहना था कि वह बड़े ध्यानपूर्वक देख-रेख करते थे और बीमारी का बहुत ही अच्छा निदान करते थे, ख़ास तौर पर स्त्रियों और बच्चों का। लेकिन जैसे-जैसे समय गुज़रता गया वह भी इस काम की नीरसता तथा इसकी स्पष्ट अकार्यकुशलता से हार गये। आज उनके पास 30 रोगी आये तो कल 35 और इसके दूसरे दिन 40 और इसी तरह प्रति वर्ष रोज़ इनकी संख्या का क्रम बढ़ता जाएगा। नगर की मृत्यु-संख्या में कोई कमी नहीं होती थी और नये बीमारों का ताँता बना ही रहता था। सुबह के समय बाहर से आनेवाले 40 बीमारों की उचित चिकित्सा करना असम्भव था। अतएव वह चाहे जितना कुछ भी प्रयत्न करें उनका काम एक अनिवार्य धोखा ही था। मान लीजिए, यदि किसी वर्ष उनके पास बाहर से आनेवाले बीमारों की संख्या 12,000 हुई तो साधारण गणना से इसका यही अर्थ हुआ कि 12,000 स्त्री और पुरुषों को धोखा दिया गया है। ज़्यादा बीमार लोगों को अस्पताल में भर्ती करना और विज्ञान के नियमों के अनुकूल उनकी चिकित्सा करना असम्भव ही था, क्योंकि यद्यपि नियम बहुतायत से थे, विज्ञान का कहीं पता नहीं था। दार्शनिक रूप से विचार न भी करें फिर भी अन्य डॉक्टरों की तरह से कठमुल्लापन से यदि नियमों के पालन की बात की भी जाती, तो

सबसे पहला और महत्त्वपूर्ण नियम है स्वच्छता का, शुद्ध वायु का, न कि गन्दगी का। आवश्यकता थी अच्छे प्रकार के उपयोगी भोजन की, न कि खट्टी गोभियों के बदबू देनेवाले शोरबे की। ज़रूरत थी ऐसे सहायकों की जो कि वास्तव में सहायक हों, न कि चोरों की।

इसके अतिरिक्त प्रश्न यह भी तो था कि लोगों को मरने से क्यों रोका जाए जबकि मृत्यु जीवन का स्वाभाविक और न्यायोचित्त अन्त है? इससे क्या बन जाएगा कि किसी दुकानदार अथवा क्लर्क की आयु की अवधि पाँच या 10 साल ज़्यादा बढ़ गयी? और यदि चिकित्सा का उद्देश्य दवाओं के सहारे कष्ट कम करना है तो आवश्यक रूप से यह प्रश्न उठता है कि कष्ट को कम ही क्यों करना चाहिए? अव्वल तो कष्ट पूर्णता प्राप्त कराने में आदमी का सहायक होता है और दूसरे, यदि मानव जाति गोलियों एवं चूर्णों के साधनों के द्वारा कष्ट को कम करना सीख जाती है तो लोग धर्म और दर्शनशास्त्र को त्याग देंगे। किन्तु ये ऐसे विषय हैं जिनमें मानव जाति आज तक न केवल सब सन्तापों से रक्षा पाती रही है, बल्कि उसे इनसे आनन्द भी प्राप्त होता रहा है। अपनी मृत्यु शैय्या पर पुश्किन घोर कष्ट सहता रहा। अपनी मृत्यु से पूर्व जर्मन कवि हाइने वर्षों तक लकवा से पीड़ित पड़ा रहा। तब फिर क्यों एक आन्द्रेई येफ़ीमिच या मात्र्योन्ता साविश्ना ही रोगमुक्त किये जाएँ जिनकी ओछी ज़िन्दगी इस रोग के सिवा उसकी तरह महत्त्वहीन है जिस तरह कि एक कीटाणु का जीवन होता है।

ऐसे ही तर्कों से परेशान होकर आन्द्रेई येफ़ीमिच के हृदय का उत्साह समाप्त हो गया और उन्होंने प्रतिदिन अस्पताल जाने का क्रम छोड़ दिया।

5

उनके प्रतिदिन का यह क्रम है—वह प्रायः आठ बजे सुबह उठेंगे, कपड़े पहनेंगे और इसके बाद चाय पीएँगे। इसके बाद वह अपने

अध्ययन कक्ष में बैठ जाते हैं और पढ़ते रहते हैं अथवा अस्पताल चले जाते हैं। अस्पताल के अँधेरे तंग गलियारे में उन्हें डॉक्टरी जाँच की प्रतीक्षा करते हुए बाहरी बीमार मिलते। अस्पताल के पुरुष और नर्सें इनके आगे ईंटों के फ़र्श पर अपने बूटों को बजाते हुए निकल जातीं। अस्पताल के अन्दर रहनेवाले निर्बल बीमार अपने चोग़ों में लिपटे हुए यूँ ही इधर-उधर टहलते रहते हैं। लाशें तथा टट्टी-पेशाब के बरतनों को बाहर किया जाता है। बच्चे चीखते-चिल्लाते हैं और तेज हवा गलियारे को झकझोरती रहती हैं। आन्द्रेई येफ़ीमिच इस बात से अवगत हैं कि ऐसी चीज़ें ज्वर-पीड़ित, यक्ष्मा के तथा केवल स्नायविक कमज़ोरी के बीमारों के लिए यातनापूर्ण होती हैं। लेकिन इस सम्बन्ध में हो ही क्या सकता है? मुआयने के कमरे में उनका सहायक सेर्गेई सेर्गेइच उनका अभिवादन करता है जो कि छोटे क़द का मोटा, गोल-मटोल, अच्छी तरह घुले हुए सफ़ाचट चेहरे का और नम्र तौर-तरीकों का आदमी है। वह नया ढीला-ढाला सूट पहने रहता है और उसके रंग-ढंग से वह एक सहायक डॉक्टर की बनिस्बत ज़्यादा संसद सदस्य-सा लगता है। नगर में उसकी डॉक्टरी बड़े पैमाने पर चलती है। वह सफ़ेद टाई पहिनता है और समझता है कि डॉक्टर की बनिस्बत जिसकी कि कोई प्रैक्टिस नहीं, वह अधिक जानकारी रखता है। मुआयने के कमरे के कोने में एक मूर्ति मण्डप है, जिसमें एक बड़ी-सी मूर्ति है जिसके सामने ही एक भारी दीप लटकता है। इसके पास ही मोमबत्तियाँ रखने की पीठिका है जोकि सफ़ेद कपड़े से ढकी रहती है। पादरियों के चित्र, स्व्यातोगोर्स्क मठ के दृश्यचित्र तथा सूखे फूलों की मालाओं से इस कक्ष की दीवारें सजी हुई हैं। सेर्गेइ सेर्गेइच धार्मिक प्रवृति का व्यक्ति है और धार्मिक नियमों पर दृढ़ रहने की उसकी आदत है। अस्पताल में मूर्ति रखनेवाला वही था। इतवार को वह किसी एक बीमार को प्रार्थना पढ़ने का आदेश देता और इसके बाद धूपपात्र को आगे-पीछे हिलाता हुआ एवं सुगन्धि बिखेरता हुआ वह वार्डों का भ्रमण करता।

बीमारों की संख्या बहुत बड़ी होती है और समय कम। अतएव डाक्टर को प्रत्येक बीमार से कुछ सवाल करके ही सन्तुष्ट होना पड़ता है, इसके बाद वह कुछ-न-कुछ दवाई का नुस्खा अधिकांशतः मालिश का तेल या अरडी का तेल (जुलाब कील दवा) देकर छुट्टी कर लेते हैं। आन्द्रेई येफ़ीमिच अपने गालों को अपनी हथेली पर लेकर बैठ जाते और फिर वह विचारों में डूब जाते। बीमारों से इस बीच वह यन्त्रवत् सवाल करते रहेंगे। सर्गेइ सर्गेइच भी अपने हाथों को रगड़ते हुए वहीं बैठा रहता और बीच-बीच में एकाध जुमला कहता जाता।

"हमने बीमारी का कष्ट उठाना और ग़रीबी भुगतनी पड़ती है क्योंकि हम अपने दयालु प्रभु की प्रार्थना नहीं करते। हाँ, बात यही है।

आन्द्रेई येफ़ीमिच अस्पताल के मुआयने के घंटों में आपरेशन करने की आदत से मुक्ति पा चुके हैं। खून देखते ही वह विकल हो जाते हैं। जब कभी किसी बच्चे के गले को देखने के लिए उसका मुँह खोलना पड़ता है और इस पर बच्चा चिल्लाने और अपनी छोटी-छोटी मुट्ठियों से उन्हें हटाने का प्रयत्न करने लगता है तो उसके इस शोरगुल से डाक्टर को चक्कर-से आने लगते हैं और उनकी आँखों में आँसू आ जाते हैं। वह जल्दी से नुस्ख़ा लिख देंगे और अपनी बाँह को हिलाते हुए बच्चे की माँ से उसे ले जाने का इशारा कर देंगे।

वह जल्दी ही बीमारों की कातरता और मूर्खता, कर्मकांड प्रिय सेर्गेई सेर्गेईच की उपस्थिति, दिवारों पर टंगी तस्वीरों तथा अपने ही प्रश्नों से, जिनमें पिछले बीस सालों से भी अधिक समय के भीतर कोई परिवर्तन नहीं आया है, ऊब जाते हैं। पाँच या छः बीमारों को देख लेने के बाद वह घर लौट आते हैं। शेष बीमारों को उनके सहायक ही देखते हैं।

इस बात की आनन्ददायक चेतना के साथ कि काफ़ी समय से, भगवान की दया समझो, उनकी प्रैक्टिस छूट चुकी है और कोई व्यक्ति उन्हें बाधा पहुँचानेवाला नहीं है, वह घर पहुँचते ही अपनी

पुस्तक पढ़ने से जुट जाते हैं। वह बहुत पढ़ते हैं और पढ़ने में आनन्द लेते हैं। उनका आधा वेतन किताबों पर ही ख़र्च हो जाता है और उनके आवास के छः कमरों में से तीन कमरे तो किताबों और पुरानी पत्र-पत्रिकाओं से ही भरे हुए हैं। उनके अध्ययन के प्रिय विषय हैं इतिहास और दर्शन-शास्त्र। उनके पास चिकित्सा शास्त्र सम्बन्धी केवल एक ही पत्रिका 'चिकित्सक' आती है जिसे वह सदैव अन्त से पढ़ना शुरू करते हैं। वह लगातार घंटों तक पढ़ते रहत हैं और इसमें वह ज़रा-सी भी थकान का अनुभव नहीं करते। इवान दिमीत्रिच की तरह तेज़ी और व्यग्रता के साथ वह नहीं पढ़ते। उनका पढ़ने का तरीक़ा धीरे-धीरे विचार करते हुए और उन स्थलों पर जो उन्हें आनन्द देते हैं अथवा समझने में कठिन होते हैं रुककर पढ़ने का है। हमेशा ही उनकी पुस्तक के पास ही वोद्‌का की बोतल और नमकीन खीरे रखे रहते हैं या कपड़ा लगी उनकी मेज़ पर तश्तरी के बग़ैर खड़े मसालेदार सेब पड़े होते हैं। हर आध घण्टे पर बिना पुस्तक से दृष्टि हटाए वह वोद्‌का का एक जाम पीते रहते, खीरा टटोलते और उसका एक टुकड़ा मुँह में रख लेते।

"दार्या, अगर मुझे भोजन मिल जाए तो..."

भोजन के बाद, जो कि बुरी तरह से परसा हुआ और निस्वाद होता है, वह अपनी बाँहों को एक दूसरे से बाँधे हुए एक कमरे से दूसरे कमरे में टहलते हुए सोचते जाते। घड़ी चार, फिर पाँच बजा देती लेकिन वह उसी तरह से टहलते और सोचते रहते। प्रायः रसोईघर का दरवाज़ा चर्रमर्र की आवाज़ से खुलता रहता और उससे दार्या का अस्तव्यस्त लाल चेहरा दिखाई देता।

"आन्द्रेई येफ़ीमिच! क्या अभी आपके बीयर लेने का समय नहीं हुआ?" वह आकुलता से कहती।

"अभी नहीं" वह उत्तर देते, "थोड़ी देर बाद, बस थोड़ी।"

सन्ध्या होते ही पोस्टमास्टर मिख़ाइल अवेर्यानिच पहुँच जाते। नगर में यही एक आदमी है जिसकी संगत आन्द्रेई येफ़ीमिच को

उबानेवाली नहीं मालूम पड़ती। अपने दिनों में मिख़ाइल अवेर्यामिच कभी धनी ज़मींदार थे और घुड़सवार सेना में अफ़सर रह चुके थे, लेकिन भाग्य ने उनका साथ नहीं दिया और ग़रज़ ने उन्हें बुढ़ापे में डाकखाने की नौकरी स्वीकार करने पर मजबूर किया। वह भले-चंगे दिखाई देते हैं, सुन्दर घनी सफ़ेद गलमूछें रखते हैं और तौर तरीक़ों के आदमी हैं और ऊँची, लेकिन प्रिय लगनेवाली आवाज़ में बोलते हैं। वह दयालु और भावुक हृदय व्यक्ति हैं, यद्यपि यह भी सही है कि वह गरम मिज़ाज आदमी हैं। यदि कभी कोई आदमी डाकख़ाने जाकर शिकायत करता है, बात नहीं मानता है या सिर्फ़ कोई तर्क पेश करता है तो अवेर्यानिच लाल-पीले होकर और बहुत आवेश में आकर काँपने लगते हैं और गरजते हुए चिल्ला पड़ते हैं, "चुप रहो!" इस प्रकार डाकख़ाने की एक डरावनी स्थान के रूप में बहुत दिनों से बदनामी है। मिख़ाइल अवेर्यानिच आन्द्रेई यफ़ीमिच को उनकी विद्वत्ता तथा उच्च-विचारों के लिए पसन्द करते हैं और उनका सम्मान करते हैं। लेकिन अन्य नागरिकों के प्रति उनकी धारणा उपेक्षा की रहती है और उनके साथ उनका व्यवहार भी वैसा ही होता है जैसा अपने मातहतों के प्रति।

"यह रहा मैं!" कमरे में प्रवेश करते ही वह चिल्ला पड़ते हैं—"तुम कैसे हो , मेरे दोस्त? हाँ। शायद मुझसे ऊब चुके हो। ऐं?"

"अरे। नहीं भई! बिल्कुल नहीं, " डाक्टर उत्तर देते हैं, "मैं तुमसे मिलकर हमेशा ही प्रसन्न होता हूँ।"

दोनों मित्र फिर सोफ़ा पर बैठ जाते और कुछ देर चुपचाप धुम्रपान करते रहते।

"दार्या, अगर कुछ बीयर मिले तो..." डाक्टर पूछ बैठते।

पहली, बोतल उसी तरह निस्तब्धता में पी जाती। डाक्टर कुछ विचारमग्न से दीखते जब कि मिख़ाइल अवेर्यानिच ख़ूब ख़ुश, ठीक उस व्यक्ति की तरह जिसके पास कोई विनोदपूर्ण सूचना व्यक्त करने के लिए हो। हमेशा डाक्टर ही वार्तालाप को आरम्भ करते।

"क्या यह दुख की बात नहीं है" वह शान्त और धीमे स्वर से अपने सिर को आहिस्ता हिलाते हुए कहना आरम्भ करते हैं (इस बीच वह अपने मित्र के चेहरे की ओर दृष्टि नहीं उठाते। वह कभी भी किसी के चेहरे की ओर नहीं देखते)—"क्या यह दुख की बात नहीं है, मेरे प्यारे मिख़ाइल अवेर्यानिच, कि इस नगर में कोई भी व्यक्ति ऐसा नहीं है जिसको दिलचस्प और बुद्धिमत्तापूर्ण वार्तालाप में कोई रुचि हो अथवा इसके लिए उसमें क्षमता हो। हमारे लिए तो यह बड़े ही संताप की बात है। शिक्षित लोग भी साधारण बातों के स्तर से ऊँचे नहीं उठते। मैं तुम्हें इसका विश्वास दिलाता हूँ कि उनका मानसिक विकास किसी भी तरह निम्न श्रेणी के लोगों से अधिक नहीं है।"

"सही कहा, मैं आपसे सहमत हूँ।"

"आप इस बात से तो अवगत ही हैं," डाक्टर अपनी शान्त वाणी में कहते जाते, "कि इस विश्व में मानव मस्तिष्क की उच्चतर आध्यात्मिक प्रक्रियाओं के अलावा और सब चीज़ महत्त्वहीन तथा अरुचिकर हैं। मस्तिष्क ही है जो मानव और पशु के बीच की सीमा बनाता है। इसी के द्वारा हमें मानव के दैवी स्वभाव की झाँकी प्राप्त होती है और कुछ सीमा तक अस्तित्त्वहीन अमरत्व का स्थान यह ग्रहण कर लेता है। इस आधार पर हम कह सकते हैं, मस्तिष्क ही एक मात्र साधन है जिससे हम आनन्द प्राप्त कर सकते हैं। हम अपने चारों ओर किसी ऐसी वस्तु को न देखते हैं और न सुनते हैं जिसे हम मस्तिष्क कह सकें और इसका अर्थ हुआ कि हम आनन्द से वंचित है। यह सही है कि हमारे पास पुस्तकें हैं, लेकिन वह वार्तालाप एवं व्यक्तिगत सम्पर्क का स्थान नहीं ले सकतीं। अगर आप मुझे एक उपमा इस्तेमाल करने की इजाज़त दें, जो कि मुझे डर है बहुत सुन्दर नहीं है, तो मैं यही कहूँगा कि पुस्तकें छपा हुआ संगीत है और वार्तालाप गाना।"

"बिल्कुल सही।"

फिर निस्तब्धता छा जाती। दार्या अपने चेहरे पर मौन दुख की

छाप लिए रसोईघर से बाहर आ जाती और दरवाज़े पर खड़ी होकर अपने सिर को मुट्ठी से थामे भीतर चलनेवाले वार्तालाप को सुनने लगती।

"आह!" अवेर्यानिच साँस छोड़ते हुए कहते, "और आप समझते हैं, आजकल लोगों के दिमाग़ भी हैं?"

इसके बाद वह पुराने समय की बातें जब जीवन स्वस्थ, सुखी और खुशियों से भरपूर था कहने लगते। पुराने रूप के शिक्षित लोग सम्मान और मित्रता के प्रति कितनी ऊँची मान्यताएँ रखते थे, लोग एक-दूसरे को बिना रसीद लिए रुपये उधार देते रहते थे और आवश्यकता के समय किसी मित्र के प्रति सहायता का हाथ न बढ़ाना अपमान की बात समझी जाती थी। और उन घावों, साहसी कृत्यों, भिड़न्तों, मित्रता और स्त्रियों का कहना ही क्या! काकेशस क्या ही अद्भुत है! एक बटालियन कमांडर की पत्नी, जो कि कुछ सनकी स्वभाव की स्त्री थी, आफ़िसर की तरह कपड़े पहनकर और बिना किसी पथ-प्रदर्शक को साथ लिए हर सन्ध्या को पहाड़ों में घोड़े पर चढ़कर घूमने जाया करती थी। लोगों का कहना था कि किसी एक पहाड़ी गाँव के राजा के साथ उसकी प्रेम लीला चल रही थी।

"हे भगवान!" दार्या साँस भरती हुई कहती।

"और हम लोग खाते-पीते कितना थे! हम लोग कैसे उदार विचार के थे!"

आन्द्रेई येफ़ीमिच उसके शब्दों के अर्थों पर ध्यान दिये बिना सुनते रहते। वह अपनी बीयर पीते हुए कुछ और ही बातों के सम्बन्ध में सोचते रहते।

"मैं प्रायः समझदार लोगों से स्वप्न में भेंट करता और उनसे वार्तालाप करता हूँ," वह सहसा मिख़ाइल अवेर्यानिच की बातों को बीच में काटते हुए कहते। "मेरे पिता जी ने मुझे अच्छी शिक्षा प्रदान की। लेकिन गत् सन् 1860 के विचारों से प्रभावित होकर मुझे डाक्टरी के पेशे में आने के लिए बाध्य किया। मैं कभी सोचता हूँ कि

अगर मैं उनकी बात न मानता तो सम्भवतः अब तक किसी बौद्धिक आन्दोलन के केन्द्र में होता। मैं सम्भवतः किसी विश्वविद्यालय का आचार्य हो गया होता। यह सही है कि मस्तिष्क भी अन्य वस्तुओं की तरह अमर नहीं है और वह परिवर्तित होता रहता है, लेकिन मैं पहले ही इस बात के स्पष्ट कर चुका हूँ कि क्यों मैं इसको और सब चीज़ों से बढ़कर मानता हूँ। जीवन केवल एक बुरा जालभर है। जैसे ही कोई सोचने विचारनेवाला व्यक्ति परिपक्वता को प्राप्त करता है और सजग विचार की क्षमता रखने के योग्य होता, वैसे ही वह इस बात को महसूस करने से बच नहीं सकता कि वह ऐसे जाल में फँस गया है जिससे छुटकारे का कोई भी मार्ग नहीं रह गया है। सच पूछो तो वह अपनी इच्छाओं के प्रतिकूल अस्तित्वहीन स्थिति में बिल्कुल आकस्मित कारणों से उत्पन्न होने का बाध्य हुआ है...किसलिए? अगर वह अपने अस्तित्व के अभिप्राय और उद्देश्य को जानने के प्रयत्न करता है तो या तो उसे कोई उत्तर ही नहीं मिलता और अगर मिलता भी है तो वह तमाम मूर्खताओं से भरा हुआ। वह दरवाज़े खटखटाता जाता है और कहीं से कोई दरवाज़ा उसके लिए नहीं खुलता। तब मौत, और वह भी उसकी इच्छा के प्रतिकूल, उसके पास आ जाती है। जिस प्रकार समान दुर्भाग्य से जुड़े हुए बन्दी एक-दूसरे के साथ रह सकने पर ज्यादा खुशी महसूस करते हैं, ठीक उसी प्रकार विश्लेषण और सामान्य सिद्धान्त-निर्धारण करने की प्रवृत्ति रखनेवाले लोग भी परस्पर खिंच आते हैं। इस बात पर उनका ध्यान नहीं जाता कि वे एक जाल में फँसे हुए हैं और वे ऊँचे और निर्बाध विचारों के आदान-प्रदान की व्यवस्था के द्वारा अपना समय व्यतीत कर लेते हैं। इस रूप में मस्तिष्क अतुलनीय संतोष का स्रोत है।"

"बिल्कुल सत्य।"

आन्द्रेई येफ़ीमिच साथी से आँख मिलाये और कोमल, हिचकती वाणी में समझदार लोगों और उनके साथ वार्तालाप के आनन्दों का वर्णन करते रहते। मिख़ाइल अवेर्यानिच बड़े ध्यानपूर्वक उनको

सुनता रहता और बीच में कभी-कभी अपनी ओर से "बिल्कुल सही" का वाक्यांश दुहरता रहता।

"लेकिन क्या तुम आत्मा के अमरत्व में विश्वास नहीं रखते?" सहसा पोस्टमास्टर कहते।

"मेरे प्रियवर मिख़ाइल अवेर्यानिच! नहीं भई! न तो मैं इसमें विश्वास करता हूँ, और न ऐसे विश्वास के लिए मेरे पास कोई कारण ही है।"

"सत्य कहूँ तो इस सम्बन्ध में मुझे स्वयं भी सन्देह है। दूसरी ओर तुम जानते हो, मुझे लगता है कि मैं कभी नहीं मरूँगा। अरे भले आदमी, मैं कभी-कभी अपने से कहता हूँ, अब मरने का समय है। लेकिन एक महीन आवाज़ तभी गुनगुना जाती है, 'इसका विश्वास मत करो, तुम कभी नहीं मरोगे!' "

नौ बजने के बाद शीघ्र मिख़ाइल अवेर्यानिच विदा हो जाते हैं। ड्योढ़ी में अपने भारी कोट को अपने ऊपर डालते हुए वह साँसें भरते हुए कहते– "भाग्य ने भी हमें किस कोने में पटक दिया है! और सबसे बुरा तो यह है कि मरना भी हमें यहीं होगा। आह, हाय!"

अपने दोस्त को बाहर तक पहुँचाने के बाद आन्द्रेई येफ़ीमिच अपनी मेज़ पर आकर बैठ जाते और फिर पढ़ने लग जाते। रात की निस्तब्धता को भंग करती हुई कोई भी आवाज़ नहीं होती, ऐसा प्रतीत होता जैसे समय की गति ही रुक गयी हो, तथा डाक्टर और उनकी पुस्तक को देख रही हो; मानों इस विश्व में सिवाय इस पुस्तक और हरे शेड वाले लैम्प के और कोई वस्तु ही नहीं हो। डाक्टर को कर्कश और ग्रामीण दिखाई देनेवाली आकृति शनैः शनैः मानव मस्तिष्क की अभिव्यक्तियों के प्रति स्नेह और आदर के लिए मुस्कान से प्रकाशमान हो जाती है। "क्यों नहीं, ओह क्यों नहीं, इंसान अमर होता?"—वह सोचते हैं। "मस्तिष्क के ये सब केन्द्र और उनकी प्रक्रियाएँ, दृष्टि, वाणी, चेतना, प्रतिभा क्या धूल में मिलने के लिए ही है? और यही नियति है? और फिर इसके बाद बिना किसी उद्देश्य या

कारण के अरबों वर्षों तक पृथ्वी की सतह के साथ निष्क्रिय होकर सूर्य के चारों ओर चक्कर काटने के लिए ही हैं? निश्चित रूप से ऐसा तो आवश्यक नहीं था, कि सिर्फ़ शीतल पड़ने और चक्कर काटते रहने के लिए ही मनुष्य को उसके ऊँचे, प्रायः दिव्य मस्तिष्क को विस्मृति के गर्भ से बुलाया जाए और फिर मानों निष्ठुर उपहास कर उसे मिट्टी में मिला दिया जाए।

"परिवर्तनवाद! एक कायर के सिवा दूसरा कौन इस तरह के अमरत्व के प्रतिरूप से सान्त्वना प्राप्त कर सकता है? अचेतन रूप से प्रकृति में जो क्रियाएँ होती रहती हैं वह मानव-मूर्खता के स्तर से भी निम्नतर है, क्योंकि मूर्खता में चेतनता तथा इच्छाशक्ति का कुछ न कुछ समावेश ही है, जबकि उन क्रियाओं में इस तरह की कुछ भी तो बात नही हैं। एक कायर ही, जिसके भय की भावना उसके आत्म-सम्मान की भावना से बढ़कर है, इस विचार से अपने को सान्त्वना दे सकता है कि उसका शरीर घास के तिनके के रूप में, पत्थर में मेढ़क के रूप में जीवित रहेगा...परिवर्तनवाद में अमरत्व को देखना ऐसा ही उपहासस्पद है जैसा कि वायलिन केस के सुन्दर भविष्य की भविष्यवाणी करना जबकि मूल्यवान वाद्य ही टूट गया हो और व्यर्थ पड़ा हो।"

घड़ी जब जब टन-टन कर घंटों के बीतने की सूचना देती है तो आन्द्रेई येफ़ीमिच अपनी आराम-कुर्सी पर पीछे की ओर टेक लगा देते हैं और थोड़ी देर के लिए अपने विचारों को केन्द्रित करने के लिए आँखें मूँद लेते हैं। अभी अभी जिस पुस्तक को वह पढ़ रहे थे उसमें लिखित भव्य विचारों के प्रभाव के अन्तर्गत वह अनजाने ही अपने बीते और वर्तमान जीवनक्रम का विश्लेषण करने लगते हैं। गुज़रा ज़माना उन्हें घृणित लगता है और वह यही चाहते हैं कि इसके सम्बन्ध में सोचा ही न जाए और वर्तमान भी ठीक भूतकाल की तरह ही है। वह जानते हैं कि जब उनके विचार सूर्य के चारों ओर पृथ्वी की ठंडी होती हुई सतह के साथ चक्कर काटते रहते हैं, तो उससे

कुछ ही दूरी पर डाक्टर के कमरों से हटकर उस बड़े भवन में लोग बीमारी और गन्दगी से लड़ता जग रहा होगा, दूसरे को अभी चर्मरोग की छूत लगी होगी, अथवा कसकर बँधी हुई पट्टी से घाव पर पीड़ा बढ़ रही होगी, शायद कुछ रोगी नर्सों के साथ ताश खेल रहे हों अथवा वोद्का पी रहे हों। बारह हज़ार स्त्री पुरुषों के साथ पिछले साल छल हुआ था; सम्पूर्ण अस्पताल का जीवन, चोरी, गप्पबाज़ी, झगड़ा, पक्षपात और लज्जाहीन पोंगापंथी पर आधारित है, ठीक उसी तरह जिस तरह कि वह आज से बीस वर्ष पूर्व था। और आज भी अस्पताल एक अत्यन्त अनैतिक संस्था है जिसका कि नागरिकों के स्वास्थ्य पर हानिप्रद प्रभाव पड़ रहा है। वे जानते हैं कि वार्ड नम्बर छः में निकीता रोगियों को पीटता रहता है और मोज़ेज़ बाज़ार की गलियों में भीख माँगने के लिए रोज़ निकल जाता है।

इसके साथ ही वह यह भी जानते हैं कि गत् पच्चीस वर्षों में चिकित्सा विज्ञान ने आश्चर्यजनक विकास किया है। विश्वविद्यालय में अध्ययन करते समय उन्हें ऐसा प्रतीत हुआ था कि शीघ्र चिकित्सा शास्त्र का भी वही भविष्य होनेवाला है जो कि कीमियागीरी या आध्यात्मवाद का हुआ। लेकिन अब रातों में पढ़ते हुए वही चिकित्सा शास्त्र उन पर गहरा प्रभाव डालता है और उनमें आह्लादपूर्ण आश्चर्य की भावना को जाग्रत करता है। कैसा दिव्य चमत्कार रहता है। कैसी क्रान्ति इस क्षेत्र में हुई है! महान पिरोगोव भी जिन आपरेशानों को भविष्य में भी असम्भव समझता था, वे आज कीटाणु निरोधात्मक प्रणाली के द्वारा सम्पन्न हो रहे हैं। ज़ेम्स्त्वों के साधारण डाक्टर भी घुटने के जोड़ों को ठीक से बैठाने में अब निर्भय रहते हैं। पेट की चीरफाड़ की क्रिया में सौ में एक बीमार की मृत्यु होती है। पथरी निकालना तो इतनी मामूली बात रह गयी है कि उसका कोई ज़िक्र तक नहीं करता है। आतशक तो पूर्णतया निर्मूल की जा सकती है। वंशानुक्रम सिद्धान्त, हिप्नोटिज़्म, पास्चर और कोह के आविष्कार, हाईजीन, आँकड़े और हमारे रूसी ज़ेस्त्वों का चिकित्सा-संगठन।

मनोरोग-चिकित्सा और इस रोग के आधुनिक वर्गीकरण, रोग पहिचानने के नये तरीक़े एवं उसकी चिकित्सा, यह सब उस गुज़रे हुए ज़माने की बातों से कितनी ऊँची उठ गयी है, बिल्कुल पहाड़ की तरह। मानसिक रोगियों का अब ठंडे पानी से नहलाते नहीं, बाँधकर रखना नहीं पड़ता। उनके साथ मानवों के सदृश्य ही व्यवहार किया जाता है। हम समाचार पत्रों में यह पढ़ते ही रहते हैं कि उनके मनोविनोद के लिए वास्तव में थियेटर और नाच-गानों की व्यवस्था की जा चुकी है। आन्द्रेई येफ़ीमिच जानते हैं कि आधुनिक दृष्टिकोण और रुचि के सामने वार्ड नम्बर छः की तरह के घृणित स्थान, रेल स्टेशन के सवा सौ मील की दूरी पर स्थित क़स्बे में ही सम्भव है, जहाँ कि वहाँ के मेयर और नगरपालिका के सदस्य अर्ध-शिक्षित आदमी हैं, यह डाक्टर को पुजारी के सदृश मानते हैं जिनका अन्धानुकरण ही किया जाना चाहिए चाहे वह किसी बीमार के मुँह में जलता हुआ सीसा क्यों न उँडेल दे। यही बात अगर किसी दूसरी जगह हुई होती तो वहाँ लोग और अख़बार कभी के इस छोटे-से बैस्टिली (कैदख़ाना) ज़मीन में मिलाकर ध्वस्त कर गये होंगे।

"लेकिन इससे क्या लाभ?" आन्द्रेई येफ़ीमिच आँखों को पूरा बोलते हुए अपने से ही यह प्रश्न कर बैठते हैं। "इस सबसे हुआ क्या? कीटाणुनिरोध, कोह और पास्चर के होने से भी तो कोई महत्त्वपूर्ण परिवर्तन नहीं आया। मृत्यु-संख्या और बीमारियाँ वैसी ही बनी हुई है जैसी कि पहले थीं। मानसिक रोगियों के लिए थियेटर और नाच गानों का प्रबन्ध तो हुआ है, लेकिन उन्हें बन्द चिकित्सालय से मुक्त तो नहीं किया गया है। अतएव यह सब मूर्खता और आडम्बर है और दियना के किसी सबसे अच्छे अस्पताल और मेरे इस अस्पताल में कोई खास अन्तर नहीं है।"

फिर भी, दुःख और ईर्ष्या से मिलती-जुलती भावना उन्हें उदासीन होने से रोकती है। लेकिन सम्भवतः यह भावना थकान से उत्पन्न हुई समझी जानी चाहिए। वह अपने भारी सिर को पुस्तक के पृष्ठ पर रख

देते हैं और अपने हाथों को अपने गालों के नीचे कर लेते हैं। इससे उन्हें अधिक आराम मिलता है और वह सोचना जारी रखते हैं– "मैं दुष्टता भरे काम में लगा हूँ और अपने इस काम के लिए उन्हीं लोगों से वेतन पाता हूँ जिनको मैं धोखा देता हूँ। मैं बेईमान हूँ। लेकिन अपने में मैं कुछ भी नहीं हूँ। मैं तो अनिवार्य सामाजिक बुराई का एक कण मात्र हूँ; सभी ज़िला अधिकारी बुरे हैं और कुछ-न-कुछ करने के लिए वेतन लेते रहते हैं...अतएव, मेरे बेईमान होने का दोष तो युग के ऊपर है, न कि मेरे ऊपर...अगर मैं आज से दो सौ साल बाद पैदा होऊँ तो निश्चय मैं एक भिन्न आदमी होऊँगी।"

घड़ी के तीन बजाने पर वह अपने लैम्प को बुझाकर अपने सोने के कमरे में चले जाते हैं। लेकिन वह ज़रा-सी भी नींद महसूस नहीं करते।

6

दो वर्ष पूर्व ज़ेंस्त्वों ने अपनी उदारता के आवेश में नागरिक अस्पताल में मेडिकल कर्मचारी बढ़ाने के लिए, जब तक कि ज़ेंस्त्वों का अस्पताल खुल सके, 300 रूबल प्रति वर्ष देने का निश्चय किया था। म्युनिसिपैलिटी ने ज़िला मेडिकल अधिकारी येवगेनी फ़ेदोरोविच ख़ोबोतोव को आन्द्रेई येफ़ीमिच को सहायता देने के लिए आमन्त्रित किया। नया डाक्टर तीस वर्ष से कम का नौजवान था। लम्बा और साँवला, गाल की चौड़ी हड्डियों और छोटी आँखों वाला व्यक्ति था। सम्भवतः मूलतः गैर रूसी जाति का था। हमारी बस्ती में वह अपनी जेब में बिना एक पैसा लिए एक छोटे ट्रंक और असुन्दर नवयुवती के साथ जिसकी गोद में बच्चा था, पहुँचा। उस नवयुवती को वह अपनी रसोईदारिन बताता था। वह फ़ुराश्का टोपी और ऊँचे जूते पहनता है और सर्दियों में भेड़ की खाल से बने कोट को पहनकर निकलता है। सेर्गेइ सेर्गेइच मेडिकल सहायक और ख़ज़ाँची से उसकी शीघ्र ही मित्रत हो गयी। बाक़ी अधिकारियों को वह किसी कारण रईसज़ादे

कहकर उनसे दूर ही रहता। पूरे घर भर में उसके पास एक ही किताब है–"वियना अस्पताल के सन् 1881 के नवीनतम नुस्ख़े।" अपनी इस किताब को साथ लिये बिना वह किसी भी रोगी को देखने नहीं जाता। शाम को वह क्लब में बिलियर्ड खेलता है, लेकिन ताश उसे पसन्द नहीं। "दीर्घसत्रता", "अरे आओ भाई", "सिरका लगा फटीचर", "मस्त रहो यही तो ज़िन्दगानी है"–ऐसे फ़िकरों को बड़े चाव से कहने का वह आदी है।

वह हफ़्ते में दो बार अस्पताल जाता है। वहाँ वार्डों का चक्कर लगाकर बाहरी बीमारों को देखता है। यह बात कि यहाँ कीटाणुनाशक दवाएँ तो कतई नहीं है और फ़स्द खोलने के गिलासों की भरमार है, उसे नाराज़ी से भर देती है। लेकिन आन्द्रेई येफ़ीमिच के बुरा मानने के भय से वह कोई भी नया तरीक़ा चालू नहीं करता। उसे इस बात का विश्वास है कि उसका सहयोगी आन्द्रेई येफ़ीमिच एक धूर्त हैं। उसको यह सन्देह बना हुआ है कि वह अत्यन्त धनी है और गुप्त रूप से उनसे ईर्ष्या करता है। वह खुशी से उनकी जगह लेने को तैयार है।

7

मार्च के अन्त में वसन्त की एक सन्ध्या को जब कि ज़मीन पर बर्फ़ पिघल चुकी थी और चिड़िया अस्पताल के बग़ीचे में चहचहा रही थीं, डॉक्टर अपने मित्र पोस्टमास्टर को छोड़ने फाटक तक गये। ठीक उसी वक़्त यहूदी मोज़ेज अहाते में दाखिल हुआ, वह अपने सामान्य चक्करों से लौट रहा था। उसके सिर पर टोपी न थी और नंगे पाँवों में उसने ऊपर के रबड़ के जूते चढ़ा रखे थे। अपने हाथ में वह एक छोटा-सा झोला लिए हुए था, जिसमें कि उसकी भीख से प्राप्त वस्तुएँ थीं।

"एक कोपेक दो!" ठंड के काँपते हुए, लेकिन मुस्कराते हुए उसने डाक्टर से आग्रह किया।

आन्द्रेई येफ़ीमिच ने, जो नहीं चाहता कि इंकार कैसे किया जाता है, उसे दस कोपेक का सिक्का दे दिया।

"कितना दारुण है!" भिखमंगे की नंगी टाँगों और पतले कमज़ोर टखनों पर देखते हुए उन्होंने विचार किया—"इस तरी के मौसम में..."

दया और घिन की मिली-जुली भावना से प्रेरित होकर उन्होंने उस छोटी इमारत तक उस यहूदी का अनुसरण किया। उसके गंजे सिर और उसके टखनों को वह निहारते जाते थे। डाक्टर के पदार्पण करने पर निकीता कूड़े-कबाड़ा के ढेर पर से कूदकर सीधा खड़ा हो गया।

"नमस्ते, निकीता," आन्द्रेई येफ़ीमिच ने अपनी कोमलवाणी में कहा, "उस यहूदी को एक जोड़ा जूता या इसी तरह कुछ दिये जाने की बात कैसी रहेगी? उसे जुकाम हो सकता है।"

"बहुत अच्छा, हुज़ूर। मैं सुपरिण्टेंडेंट से इस बात की रिपोर्ट कर दूँगा।"

"हाँ, ज़रूर, मेरे से उनसे कह देना। उन्हें कह देना कि यह मैंने कहा था।"

गलियारे से लगा वार्ड का दरवाज़ा खुला था। इवान दिमीत्रिच खाट में अपनी एक कुहनी पर ज़ोर दिये हुए बहुत उत्सुकता से अपरिचित वाणी को सुन रहा था। तभी सहसा उसने डाक्टर को पहचान लिया। गुस्से काँपता हुआ वह कूद पड़ा। उसका चेहरा क्रोध से लाल हो गया था और आँखें ऐसी हो गयी कि जैसे आगे निकल रही हों। वह भागता हुआ कमरे के मध्य में जाकर खड़ा हो गया।

"डाक्टर आ गये हैं!" वह चिल्लाया और ठहाका मारकर हँसने लगा। "सज्जनों, आख़िरकार! मैं आपको बधाई देता हूँ! अन्ततः डाक्टर तशरीफ़ ले आये! लुच्चा, बदमाश!" प्रायः पिपयाती हुई आवाज़ में और रोष में भरकर पैर पटकते हुए जैसा कि पहले वार्ड में कभी भी देखने को नहीं मिला था वह कहता गया, "इस बदमाश को मार डालो, नहीं, नहीं इसको मार डालना भी इसके लिए कम ही होगा। फैंक दो इसको किसी पाख़ाने में!"

यह सुनकर आन्द्रेई येफ़ीमिच ने दरवाज़े के भीतर झाँकते हुए शान्ति से पूछा :

"किसलिए?"

"किसलिए?" इवान दिमीत्रिच चिल्लाया। भयानक चेहरा बनाये हुए तथा अपने चोग़े के पल्लों को अपने चारों ओर समेटकर वह काँपता हुआ डाक्टर के पास गया। "किसलिए? तुम चोर हो!" घृणा से भरकर और अपने होठों को सिकोड़ते हुए, मानों वह थूकने जा रहा हो, उसने चिल्लाते हुए कहा, "ठग, जल्लाद!"

"आवेश में मत आओ" आन्द्रेई येफ़ीमिच ने झेंपकर मुस्कराते हुए कहा। "मैं तुम्हें विश्वास दिलाता हूँ कि अपने जीवन में मैंने कभी कोई चीज़ नहीं चुरायी और शेष बातों के लिए सम्भवतः तुम अतिशयोक्ति से काम ले रहे हो। मैं जानता हूँ तुम मुझसे नाराज़ हो। कोशिश करो और शान्त होकर तथा बिना उत्तेजित हुए मुझे बताओ कि क्या बात है जिससे तुम इतने क्रोधित हो गये हो?"

"तुम मुझे यहाँ क्यों रखे हो?"

"इसलिए कि तुम बीमार हो।"

"हाँ मैं बीमार हूँ। लेकिन बीसियों, सैकड़ों पागल अपनी स्वतन्त्रता का उपभोग कर रहे हैं, सिर्फ़ इसलिए कि तुम इतने नासमझ हो कि उनमें व स्वस्थ साधारण आदमियों में फ़र्क नहीं कर पाते। फिर मैं ही और यह अभागे ही क्यों औरों के पापों के लिए यहाँ पटक दिये गये है बलि के बकरों की भाँति? स्वयं तुम, तुम्हारा सहायक, इंस्पेक्टर और अस्पताल के तमाम लफ़ंगे—हम में से हर व्यक्ति के मुक़ाबले बहुत नीचे हैं, नैतिकता में भी। तब फिर हम ही क्यों यहाँ हों और तुम क्यों न रहो? यह किस प्रकार का तर्क है?"

"इस बात से नैतिक मान्यताओं और तर्क का कोई सम्बन्ध नहीं है। हर बात संयोग पर निर्भर करती है। जिनको यहाँ रखा जाता है वह यहाँ रहते हैं और जिनको नहीं रखा गया है वे अपनी स्वतन्त्रता का आनन्द लेते हैं। बस बात यही है। इस तथ्य में कि

तुम मानसिक रोगी हो और मैं एक डाक्टर हूँ न तो कोई नैतिकता है और न तर्क। यह तो सिर्फ़ एक आकस्मिक घटना भर है।"

"मैं ऐसी मूर्खता की बातें नहीं समझता"—इवान दिमीत्रिच ने अपने बिस्तर पर बैठते हुए खोखली आवाज़ में कहा।

मोज़ेज ने जिसकी तलाशी लेने का साहस निकीता डाक्टर की उपस्थिति में न कर सका था, भीख में पाये हुए टुकड़ो, काग़ज़ों और हड्डियों को बिस्तर पर फैलाकर रख दिया। अभी भी सर्दी से काँपते हुए वह अपनी भाषा में गुनगुनाती हुई ध्वनि में बोलते लगा। शायद वह सोच रहा था कि उसने एक दुकान खोल ली है।

"मुझे बाहर जाने दो।" इवान दिमीत्रिच ने टूटती आवाज़ में कहा।

"मैं ऐसा नहीं कर सकता।"

"लेकिन, तुम क्यों नहीं कर सकते? क्यों नहीं?"

"इसलिए कि यह मेरी शक्ति में नहीं है। स्वयं अपने से पूछो कि मेरे तुम्हें बाहर छोड़ देने से तुम्हारा क्या लाभ होगा? मान लो कि मैं ऐसा कर भी दूँ फिर भी बस्ती के लोग या पुलिस तुम्हें रोककर पकड़ लेगी और वहाँ लौटा लाएगी।"

"हाँ, हाँ! तुम ठीक कहते हो," अपने माथे को रगड़ते हुए इवान दिमीत्रिच ने कहा, "भयानक है यह! मैं क्या करू? क्या?" मुँह बनाने के बावजूद, उसकी वाणी और उसका नौजवान, बुद्धिमान चेहरा आन्द्रेई येफ़ीमिच का जँच गया। उस नौजवान से कुछ आशा भरी बात कहने और उसे शान्त करने को वह ललचा उठे। वह उसकी बगल में चारपाई पर बैठ गये और एक क्षण सोच लेने के बाद कहने लगे,

8

"तुम पूछते हो कि तुम क्या करो? तुम्हारे लिए सबसे अच्छी बात यह होती कि तुम यहाँ से भाग जाते। दुर्भाग्य से यह व्यर्थ होगा। तुम

पकड़ लिए जाओगे। समाज जब अपराधियों, मानसिक रोगियों और दूसरे अड़चन पैदा करनेवाले लोगों से अपने को सुरक्षित रखने का निश्चय कर लेता है, तो वह अजेय है। अब तुम्हारे लिए एक ही रास्ता है, तुम यह मान लो कि तुम्हारी उपस्थिति यहाँ आवश्यक है।"

"इससे किसी का भला नहीं होगा।"

"जेलख़ाने और पागलखाने जैसी चीज़ें हैं, इसलिए इनको भरने के लिए भी लोग चाहिए। तुम न सही, तो मैं सही, और अगर मैं नहीं तो कोई दूसरा होगा। प्रतीक्षा करो, उस सुदूर भविष्य की जब न तो जलख़ानों रहेंगे और न पागलख़ाने तब फिर न तो सीखचों से बन्द खिड़कियाँ होंगी और न अस्पताल के चोग़े। वह समय अवश्य आएगा, चाहे देर से आये चाहे जल्दी।"

इवान दिमीत्रिच व्यंगपूर्वक मुस्कराया—

"तुम्हारा यह मतलब तो है नहीं," अपनी आँखें सिकोड़ते हुए उसने कहा। "तुम और तुम्हारे सहायक निकीता जैसे सज्जनों के लिए भविष्य कैसा है? लेकिन तुम निश्चय जानो कि अच्छा समय आनेवाला है। मेरी बातें, घिसी पिटी मालूम हो सकती है और तुम हँस सकते हो, लेकिन जीवन का नया प्रभात अपनी सम्पूर्ण आभा के साथ फूटेगा, सत्य की विजय होगी और हम भी उस प्रकाश को देखेंगे। मैं नहीं देख सकूँगा तब तक मैं मर जाऊँगा, लेकिन और लोगों के नाती पोते उस प्रभात को देखेंगे। अपने हृदय के अन्तरतम से मैं उनका अभिनन्दन करता हूँ और खुशी मनाता हूँ, खुशी मनाता हूँ उनकी ख़ातिर! आगे बढ़ो, दोस्तो, भगवान तुम्हारी सहायता करे!"

अपनी चमकती हुई आँखों के साथ इवान दिमीत्रिच उठा और खिड़की की ओर हाथ बढ़ाया। भावावेश में वह कहता रहा—

"इन सीखचों के पीछे से मैं तुम्हें आशीष भेजता हूँ! सत्य चिरंजीवी हो! मैं खुशी मनाता हूँ!"

"मैं खुशी मनाने का कोई विशेष कारण नहीं देखता," आन्द्रेई येफ़ीमिच ने कहा। वह इवान दिमीत्रिच की घोषणाओं को कुछ कुछ

नाटकीय समझते रहने के बावजूद उन्हें पसन्द कर रहे थे। "तब तो जेलख़ाने और पागलख़ाने नहीं होंगे, और जैसा कि जनाब फ़रमाते हैं, सत्य विजयी होगा। लेकिन चीज़ों का तत्त्व नहीं बदलेगा और प्रकृति के नियम ऐसे ही बने रहेंगे। जिस तरह आज है उसी तरह तब भी लोग बीमार पड़ेंगे, बूढ़े होंगे और मर जाएँगे। प्रभात चाहे कितनी ही चमक से तुम्हारा जीवन आलोकित करे, अन्त में तुम्हें ताबूत में बन्द होना ही पड़ेगा और ज़मीन के भीतर एक गड्ढे में तुम डाल दिये जाओगे।"

"और अमरत्व?"

"व्यर्थ।"

"तुम इसमें विश्वास नहीं करते लेकिन मैं करता हूँ। दोस्तोवेयस्की या शायद वोल्तेयर की किसी रचना में एक पात्र ने कहा था कि यदि ईश्वर न होता तो भी इंसान उसका आविष्कार कर लेता और यह मेरा दृढ़तम विश्वास है कि अमरत्व के सदृश अगर कोई वस्तु नहीं है तो देर-सवेर से महान मानव मस्तिष्क उसका आविष्कार कर लेगा।"

"बहुत ख़ूब कहा," प्रसन्नता से मुस्कराते हुए आन्द्रेई येफ़ीमिच बोले, "तुमसे निष्ठा है, यह अच्छी बात है। तुम्हारी तरह विश्वास लेकर चहारदीवारियों से घिरकर भी कोई आनन्द से रह सकता है। लेकिन मैं समझता हूँ तुम शिक्षित आदमी हो?"

"हाँ! मैं विश्वविद्यालय में पढ़ता था तथापि मैंने पढ़ाई पूरी नहीं की।"

"मैं समझता हूँ तुम चिन्तनशील और समझदार व्यक्ति हो। किसी भी परिस्थिति में तुम अपने विचारों से सांत्वना प्राप्त कर सकते हो। जीवन के सम्पूर्ण बोध के लिए निर्बन्ध, गहन, प्रयत्नशील विचार और दुनिया के मूर्खतापूर्ण कोलाहल के लिए घृणा ये ऐसे वरदान हैं जो मानवता को प्राप्त हुए वरदानों में श्रेष्ठ हैं। दुनियाभर की सीख़चेदार खिड़कियों के बावजूद ये वरदान तुम्हारे हो सकते हैं। डायोजेनीज़ एक पीपे के अन्दर रहता हुआ भी राजाओं के मुक़ाबिले ज़्यादा खुश था।"

"तुम्हारा डायोजेनीज़ मूर्ख था," इवान दिमीत्रिच ने मुँह फुलाकर कहा। "तुम डायोजेनीज़ या उसके सदृश किसी न किसी चीज़ के बोध की बातें मुझसे क्यों करते हो?" एकाएक अपने पैरों पर क्रोध से खड़े होते हुए उसने कहा। "मैं जीवन को प्यार करता हूँ, मैं इससे प्रचण्ड रूप से प्रेम करता हूँ! मुझे वहम है कि मुझे सताया जा रहा है, मेरा पीछा किया जा रहा है। मैं निरन्तर दुखदायी भयों से पीड़ित हूँ, लेकिन जीवन में ऐसे भी क्षण आते हैं अब मैं उसकी प्यास से आकुल हो जाता हूँ और तभी मुझे भय होता है कि कहीं मैं पागल न हो जाऊँ। मैं जीवित रहना चाहता हूँ। ओह, मुझे ज़िन्दगी चाहिए।"

अपने आवेश में वह कमरे के एक छोर से दूसरे तक गया और फिर आवाज़ धीमी करते हुए कहने लगा—

"अपने सपनों में कभी-कभी मैं प्रेतों को देखता हूँ। लोग मेरे पास आते हैं, मैं उनकी वाणियों और संगीत को सुनता हूँ और मैं सोचने लगता हूँ कि मैं कहीं वनस्थली अथवा सागर तट पर हूँ और तभी मैं शोरगुल और चिन्ताओं की कामना करने लगता हूँ...मुझे बताओ, बस वहाँ क्या हो रहा है?" सहसा वह बातें बदलकर कहने लगा, "बाहर जगत में क्या हो रहा है?"

"तुम क्या जानना चाहते हो? बस्ती के बारे में या आमतौर पर दुनिया के सम्बन्ध में?"

"ठीक है, शुरू करने के लिए बस्ती को ले लें और फिर इसके बाद विश्व की आम रूप से चर्चा हो।"

"बहुत खूब! बस्ती में सिवाय नीरसता के और कुछ नहीं है...ऐसा एक भी व्यक्ति नहीं मिलेगा जिससे बात की जा सके और जिसे सुना जा सके। कोई नये लोग नहीं हैं। तथ्य की बात तो यह है कि अभी हाल ही में हमारे पास एक नया डाक्टर ख़ोबोंतोव भेजा गया है।"

"जब वह पहुँचा था मैं वहीं था। क्या वह कमीना है?"

"ख़ैर। वह कोई सभ्य आदमी नहीं है। यह बड़ी मज़ेदार बात है जानते हो?...जो कुछ सुनने में आता है उससे लगता है कि मास्को

व पीटर्सबर्ग में कोई गतिहीनता नहीं है, वहाँ बौद्धिक क्रियाशीलता है और इसका यह मतलब हुआ कि वहाँ सच्चे मनुष्य रहते हैं। लेकिन न जाने क्यों वे हमारे पास ऐसे लोगों को भेजते हैं। जिन्हें देखने को जी नहीं चाहता। बस्ती का दुर्भाग्य!''

''दुर्भाग्य! वास्तव में!'' इवान दिमीत्रिच ने साँस भरते हुए कहा और फिर हँसा। ''और दुनिया का क्या हाल है? पत्र-पत्रिकाओं तथा समाचारपत्रों में लोग क्या लिख रहे हैं?''

वार्ड में अब तक अन्धेरा हो गया था। डाक्टर उठ खड़ा हुआ और खड़े खड़े ही वह इवान दिमीत्रिच को बतलाता रहा वहाँ के विदेशों के और रूसी अख़बारों में चर्चा हो रही है और आधुनिक विचारधाराएँ किस ओर जा रही हैं। इवान दिमीत्रिच बहुत ध्यानपूर्वक उन्हें सुनता रहा। बीच-बीच में वह कभी-कभी एकाध सवाल भी कर लेता। फिर तभी सहसा जैसे उसे किसी भयानक बात की स्मृति हो आयी हो उसने अपने सिर को अपने हाथों में जकड़ लिया और डाक्टर की ओर पीठ कर अपनी चारपाई पर लेट गया।

''तुम्हें क्या हुआ?'' आन्द्रेई येफ़ीमिच ने पूछा।

''तुम मुझसे एक शब्द भी न सुनोगे,'' इवान दिमीत्रिच ने उजड्डता से कहा, ''मुझे अकेले रहने दो!''

''क्यों? क्या बात हुई?''

''मैं तुमसे कह रहा हूँ, तुम मुझे अकेला छोड़ दो। क्या आफ़त है!''

उसाँस लेते हुए तथा कन्धों को झटका देते हुए आन्द्रेई येफ़ीमिच वार्ड से विदा हुए। गलियारे से गुज़रते हुए उन्होंने कहा–

''निकीता! अच्छा होता यदि इस जगह को थोड़ा-सा साफ़ रखा जाता...यहाँ बहुत बुरी तरह से दुर्गन्ध आ रही है।''

''बहुत अच्छा, हुज़ूर!''

''एक बढ़िया नौजवान,'' आन्द्रेई येफ़ीमिच घर लौटते हुए मार्ग में सोचते रहे, ''इतने तमाम वर्षों के बाद मैं समझता हूँ यह पहला

व्यक्ति है जिससे मैं बातचीत कर सकता हूँ। वह बुद्धिमानों से बातें कर सकता है और केवल उन्हीं बातों में रुचि रखता है जो ध्यान देने योग्य है।''

उस रात पढ़ते हुए और बाद में चारपाई में लेटे हुए वह इवान दिमीत्रिच के सम्बन्ध में सोचते विचारते रहे। दूसरे दिन सुबह उठते ही उन्हें याद पड़ा कि एक समझदार और दिलचस्प व्यक्ति से परिचय हो गया और निश्चय किया कि मौक़ा पाते ही उससे दुबारा मिलने जाएँगे।

9

इवान दिमीत्रिच अपने बिस्तर पर उसी तरह से लेटा हुआ था जिस तरह कि वह कल लेटा हुआ था। उसके हाथ उसकी कनपट्टियों को ज़ोर से ढँपे हुए थे और घुटने सिकोड़कर वह पड़ा था। उसका मुँह दीवार की ओर था।

''तुम कैसे हो, मेरे दोस्त!'' आन्द्रेई येफ़ीमिच ने कहा, ''तुम सो तो नहीं रहे?''

''पहली बात तो यह है कि मैं तुम्हारा दोस्त नहीं हूँ,'' इवान दिमीत्रिच ने तकिये में पड़े पड़े कहा। ''और दूसरी बात यह है कि तुम्हें कष्ट करने की जरूरत नहीं है। तुम मुझसे एक भी शब्द नहीं सुन सकोगे।''

''विचित्र...'' कुछ हतप्रभ हुए आन्द्रेई येफ़ीमिच फुसफुसाये। ''कल हमारी बढ़िया बातें हुई थीं। तभी तुम सहसा रुष्ट हो गये और आगे बातें करना बन्द कर दिया...मैंने अच्छी तरह से अपनी बातों को व्यक्त नहीं किया होगा अथवा कुछ ऐसी बात कह दी होगी जो तुम्हारे विश्वासों के विपरीत रही हो...''

''क्या तुम वास्तव में ऐसी आशा करते हो कि तुम्हारा विश्वास किया जाए?'' इवान दिमीत्रिच ने बैठते हुए और तुरन्त डाक्टर की ओर व्यंग्य और व्यग्रता से देखते हुए कहा। उसकी आँखों की पुतलियाँ लाल थीं। ''अच्छा होता कि तुम खुफ़ियागिरी करने तथा जिरह करने के लिए

कहीं दूसरी जगह जाते। तुम मुझसे कुछ भी नहीं पा सकोगे। मुझे तो कल ही मालूम हो गया कि तुम यहाँ क्यों आये थे।"

"वाह क्या अजब ख्याल है!" मुस्कराते हुए डाक्टर ने कहा। "क्या तुम्हारे कहने का अभिप्राय यह है कि मैं कोई भेदिया हूँ?"

"हाँ, मैं यही समझता हूँ...या तो भेदिया, या मेरे ऊपर निगरानी रखने के लिए आये डाक्टर हो, बात एक ही है।"

"अच्छा! मुझे माफ़ करना पर तुम...लेकिन तुम बड़े मसखरे हो।"

बिस्तर के पास ही एक स्टूल पर डाक्टर बैठ गये और झिड़कने की मुद्रा में अपना सिर हिलाया।

"अच्छा, मान लो कि तुम सही हो," उन्होंने कहना शुरू किया, "मान लो जैसा कि तुम कहते हो, मैं तुमसे कुछ बात का पता लेना चाहता हूँ ताकि तुम्हें पुलिस के हवाले किया जा सके। तुम गिरफ़्तार किए जाओगे और तुम पर मुकदमा चलेगा। लेकिन क्या तुम समझते हो कि तुम्हारे लिए अदालत अथवा जेलख़ाना इस जगह से भी बुरा होगा? और यदि तुम्हें निर्वासित कर दिया गया या कड़ी कैद की सज़ा मिली तो क्या वह इस छोटी इमारत में पड़े रहने से भी अधिक दुखदायी होगा? मेरा विश्वास है, ऐसा नहीं होगा...तब तुम्हारे डरने की बात कहाँ रह जाती है?"

इन शब्दों ने स्पष्टतः इवान दिमीत्रिच को प्रभावित किया। वह आश्वस्त होकर उठ बैठा।

शाम को चार बजने के थोड़ी देर के बाद का वक़्त था जब प्रायः आन्द्रेई येफ़ीमिच रोज़ कमरों के इस सिरे से उस सिरे तक टहलते थे और दार्या आकर उनसे पूछती थी कि क्या वह अपने बीयर पीने के लिए तैयार है। शाम उजली और शान्त थी।

"मैं भोजनोपरान्त घूम रहा था और तभी मैंने यह सोचा कि मैं तुम्हें देखने चला जाऊँ," डाक्टर ने कहा। "वसन्त का बढ़िया दिन है।"

"यह कौन-सा महीना है? मार्च?"

"हाँ, मार्च का अन्त है।"

"क्या बाहर बहुत गन्दा है?"

"ज़्यादा तो नहीं। बग़ीचे के रास्ते सूख चुके हैं।"

"ऐसे दिन बस्ती से बाहर गाड़ी में घूमना कितना अच्छा हो," इवान दिमीत्रिच ने अपनी लाल आँखों को मलते हुए कहा, मानो वह अभी अभी जागा हो, "और फिर अपने घर लौट आना, ऐसे घर में जहाँ गर्म आरामदेह पढ़ाई का कमरा हो...ऐसा डाक्टर मिले जो मेरे सिरदर्द की दवा कर दे...मैं तो भूल गया हूँ कि इन्सान की तरह जीवन कैसे बिताया जाता है। यहाँ कितनी गन्दगी है! असह्य रूप से गन्दा है!"

वह कल के आवेश से क्लान्त और थका हुआ था ओर उसके शब्द अनिच्छापूर्वक निकल रहे थे। उसकी उँगलियाँ काँप रही थीं और उसके चेहरे पर देखने से ही मालूम हो जाता था कि उसका सिर भयानक रूप से दर्द कर रहा था।

"गर्म, आरामदेह अध्ययन-कक्ष और इस वार्ड में कोई अन्तर नहीं है," आन्द्रेई येफ़ीमिच ने कहा। "लोगों को चाहिए कि वे शान्ति और सन्तोष के लिए बाह्य जगत की ओर न मुड़ें, बल्कि अपने भीतर ही उन्हें प्राप्त करें।"

"क्या मतलब है तुम्हारा?"

"साधारण व्यक्ति अच्छाई-बुराई, कमरे या गाड़ी जैसी बाहर की चीज़ों की ओर देखता है, विचारशील व्यक्ति इनके लिए अपने अन्दर देखता है।"

"अपना ज्ञान का उपदेश यूनान में जाकर दो, जहाँ सदैव गर्मी रहती है और हवा नारंगियों के फूलों की महक से भरी रहती है। इस तरह की बातें हमारी जलवायु के लिए उपयुक्त नहीं है। डायोजेनीज़ के सम्बन्ध में बातें किससे कह रहा था? तुम से?"

"हाँ! कल!"

"डायोजेनीज को अध्ययन-कक्ष या गर्म कमरे की ज़रूरत ही नहीं थी। वहाँ हर तरह गर्मी तो थी ही। वह अपने पीपे में नारंगियाँ

और जैतून खाता हुआ अलसाता रह सकता था। अगर वह रूस में रहता होता तो न केवल दिसम्बर में ही बल्कि मई में भी किसी मकान में पहुँचाए जाने के लिए अनुरोध करने लगता, यहाँ सर्दी ने उसे जकड़ लिया होता।"

"बिल्कुल नहीं। सर्दी की भी, हर अन्य पीड़ा की तरह उपेक्षा की जा सकती है। मार्कस औरेलियस ने कहा–'पीड़ा की सजीव कल्पना ही पीड़ा है। अपनी इच्छा शक्ति की सहायता करना रोक सकते हो और अब पीड़ा ही दूर हो जाएगी।" वह सही कहता है। सन्त या सिर्फ़ विचारशील व्यक्ति भी पीड़ा के लिए उपेक्षा की भावना से ही जाना जाता है। वह सदैव सन्तुष्ट रहता है और कोई भी बात उसे आश्चर्यचकित नहीं करती है।"

"तब तो मैं मूर्ख ही हुआ क्योंकि मुझे कष्ट होता है, मैं असन्तुष्ट हूँ और मैं बराबर ही लोगों की नीचता पर अचम्भा करता रहता हूँ।"

"तुम यहाँ गलती कर रहे हो। अगर तुम चीज़ों की जड़ तक पहुँचने की कोशिश किया करो तो बहुधा तुम्हें मालूम होगा कि वास्तव में वह बाहर की चीज़ें कितनी छोटी और उपेक्षा योग्य हैं जो हमें परेशान किया करती हैं। जीवन को समझने के लिए प्रयास करने चाहिए। वही एकमात्र वरदान है।"

"समझाने के लिए..." इवान दिमीत्रिच ने पीड़ा-सी अनुभव करते हुए कहा। "बाह्य, आन्तरिक...मुझे क्षमा करना, लेकिन इस तरह की बातें मैं नहीं समझ पाता। जो कुछ मैं जानता हूँ," उसने उठकर और डाक्टर पर गुस्से से देखते हुए कहा, "यह सही है कि ईश्वर ने मुझे गर्म खून और स्नायुयों से निर्मित किया था। हाँ! और यदि प्राणितत्व की कोई सशक्त क्षमता है तो उसको छेड़ने पर उसकी प्रतिक्रिया होनी ही चाहिए! और मुझमें ज़रूर ही प्रतिक्रिया होती है! पीड़ा के प्रति मेरी प्रतिक्रिया आँसुओं और चीख़ों से प्रकट होता है; नीचता के प्रति क्रोध से और कुटिलता के प्रति घिन से। और वही

मेरी राय में जीवन है। प्राणी जगत में जितने ही नीचे स्तर का जीवन होगा उतने ही नीचे स्तर की उसकी चेतना होगी और उतनी ही निर्बल छेड़ के प्रति उसकी प्रतिक्रिया। प्राणी का स्तर जितना ही ऊँचा होगा उतनी ही अधिक वास्तविकता के प्रति सशक्त और सचेतन उसकी प्रतिक्रिया। यह क्या बात है कि तुम यह बात नहीं जानते? डाक्टर इतनी प्रारम्भिक बातों से भी अनभिज्ञ हो! किसी के लिए कष्टों के प्रति घृणा का भाव रखने के योग्य होने, सदैव सन्तुष्ट रहने और किसी बात पर आश्चर्य न करने के लिए उसे इस स्थिति पर पहुँचना होगा," इतना कहकर इवान दिमीत्रिच ने मोटे किसान की ओर संकेत किया। "या फिर कष्टों के कारण वह इतना मुरदा हो गया हो कि किसी तरह की चेतना का अनुभव ही न कर सके या दूसरे शब्दों में वह जीवित रहना समाप्त कर चुका हो। मुझे माफ़ करना," वह तीव्रता से कहता गया, "मैं न सन्त हूँ और न दार्शनिक। मैं ऐसी बातों के सम्बन्ध में कुछ नहीं जानता। तर्क करने की मेरी मानसिक स्थिति नहीं है।"

"उलटे, तुम तो बहुत अच्छी तरह तर्क करते हो।"

वैराग्य या तपस्या की सीख देनेवाले, जिनकी शिक्षा का तुम विकृत रूप प्रस्तुत कर रहे हो, वे निस्सन्देह उल्लेखनीय लोग थे, लेकिन इन दो हज़ार वर्षों के दौरान में उनका दर्शन जहाँ का तहाँ स्थिर रहा है और वह एक इंच भी आगे नहीं बढ़ पाया है और बढ़ भी नहीं सकता, क्योंकि यह एक अव्यावहारिक और अवास्तविक दर्शन है। यह उन अल्पसंख्यकों को प्रिय रहा है जिन्होंने अपना जीवन अध्ययन और विभिन्न उपदेशों को ग्रहण करने में ही व्यतीत किया, लेकिन बहुसंख्यक जनता इसको कभी भी नहीं समझ सकी। अधिकांश जनता के लिए ऐसा दर्शन बिलकुल दुरूह हो रहा है जो धन दौलत और आरामों के प्रति उदासीनता का उपदेश दे और कष्ट और मृत्यु को उपेक्षणीय बताए। क्योंकि बहुसंख्यकों को कभी भी धन दौलत अथवा आरामों का ज्ञान ही नहीं हो पाया, उनके लिए

कष्ट के प्रति घृणा का भाव रखना ऐसा है जैसे स्वयं जीवन से घृणा करना हो, क्योंकि मनुष्य का सम्पूर्ण अस्तित्व इसी बात में सीमित रहा है कि वह भूख, ठंड, अपमान, हानि और हेमलेट के सदृश मृत्यु के भय से भरा हो। सम्पूर्ण जीवन इन्हीं चेतनाओं से निर्मित है और जीवन बोझों से दबा हुआ तथा घृणित है, पर तब भी कभी कोई उसका तिरस्कार नहीं कर सकता। हाँ, इसीलिए मैं यह बात दोहराता हूँ कि वैराग्य के उपदेशकों का कोई भविष्य नहीं है; और विस्मृति के गर्भ में छिपे कल से लेकर आज तक केवल उन्हीं वस्तुओं में प्रगति दिखाई देती है, जिनमें संघर्ष की शक्ति, पीड़ा के प्रति चेतनता और छेड़ के प्रति प्रतिक्रिया करने की योग्यता होती है..."

एकाएक इवान दिमीत्रिच अपनी तर्क-शृंखला ही भूल गया और वह रुककर खीज में अपने माथे को रगड़ने लगा।

"मैं कुछ बहुत ही महत्त्वपूर्ण बात कहना चाहता था, लेकिन वह मेरी पकड़ से बाहर हो गयी है," उसने कहा। "मैं किस सम्बन्ध में बात कर रहा था? अरे हाँ! यही बात थी जा मैं कहना चाहता था : तपस्वियों में से किसी एक ने अपने पड़ोसी को छुड़ाने की ख़ातिर ग़ुलामी के लिए अपने को बेच दिया। अतएव, तुम समझ रहे हो न कि तपस्वी में भी किसी छेड़वाली बात की प्रतिक्रिया हुई, क्योंकि दूसरे को बचाने की ख़ातिर अपने को ही स्वयं नष्ट करने जैसी उदारता का चमत्कार करने के लिए आवश्यक है कि आत्मा ऐसी हो जिसमें घृणा और दया की भावना अनुभव करने की क्षमता हो। यहाँ, इस जेल में, मैं वह सब कुछ भूल गया हूँ जिसे मैं कभी जानता था, नहीं तो मैं अन्य उदाहरणों को याद भी कर पाता। चाहो तो ईशु का ही उदाहरण ले लो। वास्तविकता के प्रति ईशु रोने, हँसने, शोकाकुल होने, क्रोधातिरेक में होने तथा दुख मनाने के द्वारा अपनी प्रतिक्रिया प्रकट करते थे। हँसते हुए वह कष्ट को गले लगाने नहीं गये, उन्होंने मृत्यु की उपेक्षा नहीं की, लेकिन गेट्सैमैन के बग़ीचे में उन्होंने प्रार्थना की थी कि वह प्याला उनसे हटा लिया जाए।"

इतना कहकर इवान दिमीत्रिच हँसा और बैठ गया।

"मान लो, तुम सही भी हो और शान्ति एवं सन्तोष आदमी के भीतर ही होता है; बाहर नहीं," उसने कहा। "मान लो कि यह सही है कि कष्टों की उपेक्षा की जाए और किसी बात पर भी आश्चर्य न किया जाए। लेकिन ऐसी विचारधारा का उपदेश देने का तुम्हें क्या अधिकार? क्या तुम सन्त हो, दार्शनिक हो?"

"नहीं, मैं दार्शनिक नहीं हूँ, लेकिन हर एक को इसी विचारधारा की शिक्षा देनी चाहिए क्योंकि यही ठीक है।"

"यह बात? लेकिन मैं यह जानना चाहता हूँ कि बोध कष्टों की उपेक्षा रखने आदि पर तुम अपने को अधिकारी क्यों समझते हो? क्या तुमने कभी कष्ट उठाये हैं? क्या तुम्हें इस बात का ज़रा-सा भी आभास हुआ है कि कष्ट क्या होता है? मुझे माफ़ करना इस बात को पूछने के लिए लेकिन क्या कभी बचपन में तुम्हारे ऊपर बेंत पड़े थे?"

"नहीं। मेरे माता-पिता शारीरिक दंड देने से घृणा करते थे।"

"और मेरा बाप मुझे निर्दयता से पीटता था। वह क्रोधी स्वभाव के थे, अफ़सर थे। उनकी लम्बी नाक, पीली गरदन थी और बवासीर से पीड़ित रहते थे। लेकिन हम तुम्हारे ही बारे में बात करें। तुम्हारी सारी ज़िन्दगी में किसी ने तुम्हें उँगली उठाकर छुआ तक नहीं, किसी ने तुम्हें धमकाया नहीं, किसी ने सताया नहीं और तुम साँड़ की तरह मज़बूत भी हो। तुम अपने पिता की छत्रछाया में बढ़ते रहे, उन्हीं के पैसों पर तुम शिक्षा प्राप्त करते रहे और तब तुम्हें उत्तरदायित्वहीन तथा भारी वेतन वाला यह पद मिल गया। बीस वर्षों से भी अधिक समय से तुम गर्म, अच्छी तरह प्रकाशमान और निःशुल्क घर का उपभोग करते आये हो, तुम नौकर रखते हो और तुम्हें इस बात का पूरा अधिकार है कि जब तुम चाहो तभी काम करो या काम बिलकुल भी न करो। तुम स्वभाव से ही एक आलसी और निष्क्रिय व्यक्ति हो और इसीलिए तुमने अपने जीवन को ही इस तरह ढाल लिया है जिससे तुम अपने को कष्टों एवं फ़ालतू दौड़धूप से बचा सको। तुमने

अपने सब काम को अपने सहायक और दूसरे बदमाशों के हवाले कर रखा है और स्वयं शान्ति और आराम का आनन्द लेते हो; धन बचाते हुए, पढ़ते हुए और अपने मस्तिष्क को बड़ी दिखाई देनेवाली झकझक से बहलाते हुए और (इवान दिमीत्रिच ने डाक्टर की लाल नाक पर निग़ाह डाली) पीते हुए। एक शब्द में तुमने जीवन को कुछ भी नहीं देखा है, तुम इसके बारे में कुछ नहीं जानते हो और वास्तविकता के सम्बन्ध में तुम्हारे पास केवल सैद्धान्तिक ज्ञान है। और अगर तुम कष्ट की उपेक्षा करते हो और यह नहीं होने देते तो कोई चीज़ तुम्हें चकित कर दे, इसका सीधा-सादा कारण यह है कि तुम्हारा सब गर्व जीवन के प्रति बाह्य और आन्तरिक उपेक्षा की भावना, कष्ट और मृत्यु बोध, सच्चे वरदान—यह सब दार्शनिकता रूसी अकर्मण्य को औरों के मुक़ाबले ज़्यादा अच्छी तरह उपयुक्त पड़ती है। उदाहरण के लिए तुम किसी किसान को अपनी पत्नी पीटते हुए देखते हो। क्यों दख़ल किया जाए? उसको उसे पीटने दो, वे दोनों जल्दी या देर से मर ही जाएँगे। इसके अलावा आक्रामक स्वयं अपने को पतित बनाता है न कि उसे जो पीड़ित होता है। दरअसल शराब पीना मूर्खतापूर्ण और अभद्र है, लेकिन जो पीते हैं और जो नहीं भी पीते सभी को एक ही तरह मरना है। कोई स्त्री अपने दाँत का दर्द लेकर तुम्हारे पास आती है...अच्छा, तो इससे क्या हुआ? पीड़ा की धारणा कल्पना के सिवाय कुछ नहीं है। इसके अलावा हम कभी भी बीमार हुए बिना जीने की आशा नहीं कर सकते; हममें से सबको मरना होगा; इसलिए, अपनी राह लग छोकरी! और मुझे सोचते रहने दे और शान्ति के साथ वोद्का पीने दे। कोई नौजवान तुम्हारे पास राय लेने पहुँचता है; वह जानना चाहता है कि वह क्या करे, किस तरह रहे। कोई दूसरा व्यक्ति उसको उत्तर देने के पूर्व सोचने के लिए ठहरेगा, लेकिन तुम्हारे पास तो जवाब तैयार रखा है—जीवन के बोध या सच्चे वरदान के लिए प्रयास करते रहो। लेकिन यह रहस्यमय 'सच्चा वरदान' है क्या? यथार्थ में इसका कोई उत्तर है ही नहीं। यहाँ

हम सीख़चों के पीछे बन्द रखे जाते हैं, हमें पीटा जाता है, हमें सड़ने दिया जाता है लेकिन यह सब बहुत सुन्दर और तर्कसंगत है क्योंकि इस वार्ड और आरामदेह अध्ययन-कक्ष में कोई अन्तर नहीं है। सच ही, बहुत सुविधाजनक दर्शन है यह! इस सम्बन्ध में कुछ करने के लिए नहीं है, तुम्हारी अन्तरात्मा साफ़ है और सोचते हो कि तुम तो सन्त हो...नहीं, महाशय। यह दर्शन नहीं है, विचार नहीं है, वह कोई व्यापक दृष्टिकोण नहीं है, यह तो केवल अकर्मण्यता, नियतिवाद और मानसिक निद्रा है...हाँ, बात यही है।" इवान दिमीत्रिच फिर झुँझलाया। "तुम कष्ट को तो उपेक्षणीय समझते हो, लेकिन अगर दरवाज़े में तुम्हारी उँगली दब जाए तो ज़रूर तुम सबसे ऊँची आवाज़ में चिल्ला पड़ोगे!"

"सम्भवतः मैं नहीं चिल्लाऊँगा," आन्द्रेई येफ़ीमिच ने मधुरता से मुस्कराते हुए कहा।

"नहीं चिल्लाओगे? अब अगर कहीं तुम को सहसा लकवा मार गया या कोई मूर्ख या बदमाश अपने पद और सामाजिक स्थिति का लाभ उठाकर तुम्हें सार्वजनिक रूप से अपमानित करे और तुम्हें यह मालूम रहे कि वह दंड पाये बिना बच निकलेगा, तब तुम्हें मालूम होगा कि लोगों को जीवन के बोध व वरदानों की तलाश में भेजने का क्या मतलब होता है।"

"यह बात बिल्कुल अनोखी है," आन्द्रेई येफ़ीमिच ने प्रसन्नतापूर्वक हँसते और अपने हाथों को मलते हुए कहा। "जिस ढंग से तुम सामान्य सिद्धान्तों की बात करने लगते हो, उस पर मैं मुग्ध हूँ; जिस कुशलता से तुमने मेरे चरित्र का वर्णन किया है वह बहुत प्रतिभापूर्ण है। विश्वास मानो, तुमसे बात करने में अत्यधिक आनन्द प्राप्त होता है। अच्छा, मैंने तुम्हें सुना, अब मेहरबानी करके मेरी बात को भी सुनो..."

10

वे प्रायः एक घंटे तक बातें करते रहे और इस वार्ता ने आन्द्रेई येफ़ीमिच पर बड़ा प्रभाव डाला होगा। वह अब प्रतिदिन उस छोटी

इमारत में जाने लगे। वह वहाँ सुबह जाते थे, फिर दोपहर के भोजन के बाद जाते थे और प्रायः इवान दिमीत्रिच के साथ बातें करते करते अँधेरा हो जाता था। आरम्भ में इवान दिमीत्रिच उनसे दूर रहा, उसको उनकी नीयत बुरी होने का सन्देह था और खुले रूप से वह अपनी नापसन्दगी प्रकट करता था। लेकिन बाद में वह उनका अभ्यस्त हो गया और उसने अपने तीखे लहजे को सहिष्णुतापूर्ण व्यंग्य में बदल दिया।

शीघ्र ही अस्पताल में यह अफ़वाह फैल गयी कि डाक्टर आन्द्रेई येफ़ीमिच आदतन वार्ड नम्बर छः में आने-जाने लगे हैं। कोई भी न तो सहायक, न निकीता, न नर्स ही, यह समझ सके कि वह वहाँ क्यों जाते हैं, वह वहाँ घंटों तक क्यों रहते हैं, वहाँ बात करने के लिए वह क्या पाते हैं, और क्यों वह कभी भी कोई नुस्खा नहीं लिखते। उनका व्यवहार अनोखा मालूम देने लगा। वह अब प्रायः जब मिख़ाईल अवेर्यानिच भी आता था तो बाहर ही होते थे और दार्या को मालूम नहीं था कि इस सबका क्या अर्थ लगाया जाए, क्यों डाक्टर अपने बीयर के सम्बन्ध में अनियमित हो गये थे और कभी-कभी तो भोजन के लिए भी वह देर से ही पहुँचते थे।

जून के अन्त में, एक दिन डाक्टर खोबोतोव किसी सम्बन्ध में आन्द्रेई येफ़ीमिच से मिलने गया। अपने मकान में उन्हें न पाकर वह उन्हें देखने अहाते में गया। वहाँ उसे बताया कि बूढ़े डाक्टर मानसिक रोगियों के वार्ड में हैं। छोटी इमारत में पहुँचने पर और गलियारे में रुकते हुए खोबोतोव ने निम्नलिखित वार्ता सुनी—

"हम कभी भी एकमत नहीं होंगे और तुम कभी भी मुझे अपने विचार वाला न कर सकोगे," इवान दिमीत्रिच झगड़ते हुए कह रहा था। "तुम वास्तविकता के बारे में कुछ नहीं जानते; तुमने कभी कष्ट नहीं उठाया। एक जोंक की तरह तुम केवल दूसरों के कष्टों पर ही पलते रहे, जब कि मैं अपने जन्म के दिन से अब तक बराबर कष्ट ही कष्ट भोग रहा हूँ। अतएव, मैं तुमसे स्पष्ट रूप से बात करूँगा : मैं

महसूस करता हूँ कि मैं तुमसे ऊँचे दर्जे पर हूँ और अपने को सब तरह से तुमसे अधिक योग्य मानता हूँ। तुम मुझे नसीहत नहीं दे सकते।"

"मेरे मन में ज़रा भर भी इच्छा नहीं है कि मैं तुम्हें अपने विचारों में परिवर्तित करूँ," आन्द्रेई येफ़ीमिच ने शान्तिपूर्वक और दुख भरे शब्दों में कहा, जैसे कि वह ग़लत समझे जाने पर व्यथित हो गये हों। "और यह बात भी नहीं है, मेरे मित्र, कि मैंने कष्ट नहीं उठाया है और तुमने कष्ट उठाये हैं, प्रश्न यह नहीं है। कष्ट और आनन्द दोनों ही क्षणभंगुर, परिवर्तनशील हैं। हम उनकी उपेक्षा कर सकते हैं, उनकी कोई महत्ता नहीं है। महत्त्व की बात यह हे कि तुम और में सोच सकते हैं। हम एक दूसरे में ऐसे व्यक्तियों को देखते हैं जो विचार करने और तर्क करने की क्षमता रखते हैं और ये हमारे बीच, चाहे हमारे दृष्टिकोण कितने ही भिन्न क्यों न हों, सहानुभूति पैदा करते हैं। काश, तुम इस बात को मालूम कर सकते, मेरे दोस्त, कि मैं इस सार्वभौमिक पागलपन, मूर्खता और घटिया दिमाग़ से कितना ऊबा हुआ हूँ और तुम से हर बार बात करने में मुझे कितना आनन्द प्राप्त होता है! तुम बुद्धिमान हो और इसीलिए मुझे तुम्हारे साथ से आनन्द मिलता है।"

ख़ोबोतोव ने इंच भर दरवाज़े को खोलते हुए भीतर झाँका—इवान दिमीत्रिच अपनी रात की टोपी पहने अपनी चारपाई पर बैठा हुआ था और उसकी बगल में डाक्टर थे। पागल चेहरा बनाता और लगातार चौंकता, और घबरा-घबराकर अपने चोग़े को अपने चारों ओर लपेटता जाता जबकि डाक्टर चुपचाप बैठे थे। उनका सिर झुका हुआ, चेहरा लाल, असहाय दुखी और कातर था। ख़ोबोतोव ने अपने कन्धे को झँझोड़ा, हँसा और निकीता को आँख मारी। निकीता ने भी अपने कन्धे झँझोड़े।

दूसरे दिन ख़ोबोतोव अपने साथ मेडिकल सहायक को भी ले आया। वे दोनों गलियारे में खड़े हुए बातचीत सुनते रहे।

"मालूम होता है, हमारे बूढ़े के दिमाग़ की पेचें ढीली हो गयी

है।" ख़ोबोतोव ने छोटी इमारत से बाहर होते हुए कहा।

"ईश्वर हम जैसे पापियों को क्षमा करें!" पवित्रात्मा सेर्गेइ सेर्गेइच ने साँस भरते हुए और सावधानी के साथ अहाते के छोटे छोटे गड्ढों से बचते हुए जिससे कि उसके सुन्दर चमकते हुए जूते गन्दे न हो जाएँ, कहा। "प्रियवर येवगेनी फ़ेदोरोविच! तुमसे सच कहता हूँ, मैं बहुत पहले से ही इसकी आशंका कर रहा था।"

11

इसके बाद से आन्द्रेई येफ़ीमिच को अपने चारों ओर एक रहस्यमय वातावरण का आभास होने लग गया। अस्पताल के नौकर, नर्सें तथा रोगी उनको मतलब भरी दृष्टि से देखने लगे और जब वह उसके पास से गुज़र जाते तो आपस में कानाफूसी करने लगते थे। सुपरिण्टेंडेंट की छोटी लड़की माशा जिससे वह अस्पताल के बाग़ में बड़े उत्साह और स्नेह से मिलते थे, अब जैसे ही वह मुस्कराते हुए उसके बालों को सहलाने के लिए आगे बढ़ते, न जाने क्यों भाग जाती। पोस्टमास्टर मिख़ाईल अवेर्यानिच भी अब उसके व्याख्यानों के बीच में यथापूर्व 'बिलकुल सही' कहकर उत्तर नहीं देते थे, बल्कि अकारण घबराहट में बुदबुदाता, "हाँ, हाँ, हाँ..." और विचारमग्न और दुखी होकर उनकी ओर देखता रहता था। न जाने क्यों वह अपने मित्र को बीयर और वोद्का न पीने की सलाह देने लगा, यद्यपि वह इस बात को घुमा-फिराकर कहता था, जैसा कि उसकी भद्रता के अनुकूल था! वह संकेत में कहता और कभी एक बटालियन के कमांडर की जिसको वह बहुत अच्छा आदमी बतलाता था और कभी अपने रेजीमेंट के पादरी की चर्चा करता, जिसे वह बहुत खुशमिजाज़ बतलाता था कि दोनों ने पी-पीकर अपने को बीमार बना डाला था और जैसे ही उन्होंने पीना छोड़ दिया, वे चंगे हो गये। एक या दो बार उनका सहयोगी ख़ोबोतोव उनके पास आया। उसने भी आन्द्रेई येफ़ीमिच को यही सलाह दी कि शराब पीना छोड़ दें और बिना किसी स्पष्ट

कारण के सुझाव दिया कि वह पोटेशियम ब्रोमाइड इस्तेमाल करना शुरू कर दें।

अगस्त में आन्द्रेई येफ़ीमिच को मेयर की ओर से एक पत्र प्राप्त हुआ, जिसमें उन्हें किसी बहुत ही महत्त्वपूर्ण बात के लिए बुलाया गया था। जब वह नगर भवन पहुँचे तो फ़ौजी प्रधान, ज़िला शिक्षा निरीक्षक, परिषद् के एक सदस्य, खोबोतोव और एक सुनहरे बालों वाले मोटे भद्र पुरुष को जिनका उनसे डाक्टर कहकर परिचय कराया गया, वहाँ एकत्रित पाया। यह डाक्टर जिसका कोई कठिन पोलिश नाम था, 20 मील दूर एक अश्वपालन फ़ार्म में रहता था और इस नगर से होकर केवल गुज़र रहा था।

दुआ सलाम होने के बाद जब हर कोई मेज़ के चारों ओर अपने अपने स्थान पर बैठ चुका, परिषद् के सदस्य न आन्द्रेई येफ़ीमिच की ओर मुड़ते हुए कहा—"हमारे पास यहाँ एक आवेदनपत्र आया है जिसका आपसे सम्बन्ध है। इन येवगेनी फ़ेदोरोविच का कहना है कि मुख्य भवन में दवाख़ाने के लिए पर्याप्त स्थान नहीं है और इसको किसी छोटी इमारत में बदल देना चाहिए। इसको बदलने में वास्तव में हमारी कोई परेशानी नहीं है। लेकिन तथ्य यह है कि किसी इमारत में उसे ले जाने पर उसकी मरम्मत करनी होगी।"

"हाँ, मरम्मतों की बड़ी आवश्यकता है," आन्द्रेई येफ़ीमिच ने एक क्षण सोचने के लिए रुकने के बाद कहा। "उदाहरणस्वरूप यदि हम दवाख़ाने के लिए उस किनारे की इमारत को लेते हैं तो मैं समझता हूँ इसके लिए हमें 500 रूबल खर्च करने की आवश्यकता होगी। व्यर्थ का खर्च।"

कुछ देर तक हर कोई चुप रहा।

"दस वर्ष पूर्व मुझे आपको यह बताने का गौरव प्राप्त हुआ था," धीमे स्वर में आन्द्रेई येफ़ीमिच कहते रहे, "अपने वर्तमान स्वरूप में अस्पताल इस नगर के बूते के बाहर की एक विलासपूर्ण आवश्यकता है। यह 1841-1849 के आसपास बना था और तब

परिस्थिति भिन्न थी। नगर परिषद अनावश्यक भवनों और निरर्थक पदों में बहुत ज़्यादा खर्च करती है। अगर भिन्न ढंग से काम लिया जाए तो मुझे विश्वास है कि उतने ही धन से हम दो आदर्श अस्पताल चला सकते हैं।"

"अच्छा, तब फिर हम भिन्न तरीक़े से काम चलाएँ," सभा के सदस्य ने व्यग्रता से कहा।

"मुझे अपनी राय व्यक्त करने का गौरव पहले ही प्राप्त हो चुका है—ज़ेम्स्त्वो को मेडिकल संगठन का भार अपने ऊपर लेने दीजिए।"

"हाँ, ज़रूर, ज़ेम्स्त्वो को अपना कोष सौंप दीजिये, ताकि वह इस धन को चुरा सके," सुनहरे बालोंवाले डाक्टर ने हँसते हुए कहा।

"निस्सन्देह, निस्सन्देह," परिषद के सदस्य ने भी हँसते हुए अपनी सहमति प्रकट की।

आन्द्रेई येफ़ीमिच ने अपनी निस्तेज और पीलिया छायी आँखों से सुनहरे बालोंवाले डाक्टर की ओर देखते हुए कहा—

"हमें निष्पक्ष होना चाहिए।"

इसके बाद फिर निस्तब्धता छा गयी। चाय लायी गयी। फ़ौज के प्रधान ने किसी कारण से बहुत ही परेशान होते व शरमाते हुए अपनी बाँहें मेज़ पर फैलाते हुए आन्द्रेई येफ़ीमिच के हाथ को छुआ।

"ऐसा मालूम होता है, डाक्टर, तुम हमें बिलकुल भूल गये," उसने कहा। "लेकिन मैं जानता हूँ तुम तो संन्यासी हो। तुम ताश नहीं खेलते और स्त्रियों के प्रति उदासीन हो। हम तुम्हारे लिए ऊबा देनेवाले साथी हैं।"

हर कोई कहने लगा कि जो भी व्यक्ति ज़रा भी किसी क़ाबिल है, उसे यह कस्बा ऊबा देनेवाला ही लगेगा। यहाँ न थियेटर है, न संगीत और क्लब में हुए पिछले नाच के अवसर पर बीस महिलाएँ थीं जिनके साथ नाचने के लिए केवल दो ही संगी थे। युवक नाचना नहीं पसन्द करते, वे जलपानगृह में भीड़ लगाना अथवा ताश खेलना अधिक पसन्द करते हैं। बिना किसी की ओर देखे आन्द्रेई येफ़ीमिच

अपनी धीमी, शान्त वाणी में कहने लगे कितनी दुखद बात है कि नागरिक अपनी शक्तियों को, अपनी आत्माओं और अपने मस्तिष्क को ताश खेलने तथा गप लड़ाने में लगाते हैं और अपने समय को दिलचस्प वार्ता में अथवा पढ़ने में लगाने में असफल होने के कारण वे मानसिक आनन्द के अस्वीकार करते हैं। केवल मस्तिष्क ही दिलचस्प और उल्लेखनीय है, शेष सब बातें क्षुद्र और मामूली हैं। ख़ोबोतोव अपने सहयोगी की बातों को बड़े ध्यान से सुनता रहा और तब सहसा उसकी बात काटते हुए सवाल पूछ बैठा—

"आन्द्रेई येफ़ीमिच, आज कौन-सी तारीख है?"

उत्तर मिलने पर वह और सुनहरे बालों वाला डाक्टर आन्द्रेई येफ़ीमिच से पूछते रहे कि आज सप्ताह का कौन-सा दिन है, साल में कितने दिन होते हैं और क्या यह सही है कि वार्ड नम्बर छः में एक आश्चर्यजनक मसीहा पहुँचा हुआ है। उनकी ध्वनि ऐसे परीक्षकों की थी, जो स्वयं अपनी अयोग्यता के प्रति सजग हैं।

अन्तिम प्रश्न पर आन्द्रेई येफ़ीमिच का रंग कुछ लाल हो गया और उन्होंने कहा—

"हाँ, वह एक रोगी आदमी है, लेकिन बहुत दिलचस्प है।"

उसके बाद और कोई प्रश्न नहीं किया गया।

जिस वक़्त वह ड्योढ़ी में अपना कोट पहन रहे थे, फ़ौजी प्रधान उनके पास आया और पीठ थपथपाते हुए गहरी साँस भरकर उसने कहा— "समय आ गया है कि जब हम जैसे बूढ़े लोग आराम करने की सोचें।"

नगर भवन से रवाना होते ही आन्द्रेई येफ़ीमिच को लगा कि वह एक ऐसे कमीशन के सामने बुलाये गये थे जिसका काम उनकी मानसिक दशा की परीक्षा करना था। उन प्रश्नों की याद करते हुए जो उनसे पूछे गये थे वह लज्जा से लाल हो गये और जीवन में पहली बार चिकित्सा-विज्ञान के प्रति दया की तीव्र भावना महसूस करने लगे।

"हे भगवान!' जिस तरह से डाक्टरों ने उनकी परीक्षा की थी

उसको याद करते हुए उन्होंने सोचा, "मनोरोग-चिकित्सा की कक्षा में इन्होंने अभी हाल में हाज़िरी दी थी और अपनी परीक्षाएँ पास की थीं। क्यों, फिर क्यों, इतना घोर अज्ञान बना हुआ है? उन्हें ज़रा भर तो ज्ञान नहीं है कि मनोरोग-चिकित्सा क्या होती है।"

और जीवन में पहली बार उन्हें अपमानित और क्रोधित होने का आभास हुआ।

उस शाम को मिख़ाईल अवेर्यानिच उनसे मिलने आया। उनको अभिवादन करने के लिए रुके बिना ही वह उनके पास चला गया। उनके दोनों हाथ को अपने हाथों में लेकर वह बड़ी ही सहानुभूतिपूर्ण वाणी में कहने लगा–

"मेरे सबसे प्यारे दोस्त! विश्वास दिलाओ कि तुम मेरी भावनाओं की सच्चाई में विश्वास करते हो और मुझे अपना मित्र समझते हो। प्यारे दोस्त!" आन्द्रेई येफ़ीमिच को बोलने का कोई अवसर दिये बिना वह आवेशपूर्ण रूप से कहता गया–"मैं तुम्हें तुम्हारी विद्वता और आत्मा की उच्चता के लिए प्यार करता हूँ। अब मेरी बात सुनो मेरे दोस्त! पेशे की नैतिकता डाक्टरों को तुमसे सच बात करने से रोकती है। लेकिन मैं एक सिपाही हूँ और इसलिए स्पष्ट कहूँगा–तुम स्वस्थ नहीं हो। मुझे माफ़ करना, मेरे मित्र, लेकिन सत्यता यही है और इस बात का उन्हें काफ़ी समय से पता लग चुका था जो इतने समय से तुम्हारे चारों ओर रहते थे। येवगेनी फ़ेदोरोविच ने मुझ से अभी अभी कहा है कि तुम्हारे स्वास्थ्य के हित में तुम्हें आराम और मनबहलाव की आवश्यकता है। बहुत सही है! अति उत्तम! चन्द दिन में मैं छुट्टी पर जाना चाहता हूँ और कुछ ताज़ी हवा खाना चाहता हूँ। मुझे अपनी मित्रता का प्रमाण दो मेरे साथ चलो! आओ और हम अपने यौवन को लौटा लाएँ।"

"मैं बिलकुल स्वस्थ अनुभव कर रहा हूँ," आन्द्रेई येफ़ीमिच ने कुछ रुककर कहा। "और मैं तुम्हारे साथ नहीं चल सकता। मुझे किसी दूसरे तरीक़े से तुम्हारे प्रति अपनी मित्रता का प्रमाण देने दो।"

बिना किसी कारण के उठकर चला जाना, अपनी किताबों को और दार्या एवं बीयर छोड़ देना, पिछले बीस वर्षों से जीवन का जो क्रम बन गया था उसको छोड़ देना, पहले तो पागल और मूर्खतापूर्ण विचार मालूम हुआ। लेकिन तभी उन्हें टाउन हाल में उनसे क्या कहा गया था और घर लौटते समय रास्ते में वह कितने उदास हो गये थे, यह सब याद पड़ा। कुछ समय के लिए नगर से बाहर हो जाने का विचार उस नगर से जहाँ मूर्ख लोग उन्हें एक पागल आदमी समझ रहे थे, सहसा उन्हें भला लगने लगा।

"तुम कहाँ जाने का इरादा कर रहे हो?" उन्होंने पूछा।

"मास्को, पीटर्सबर्ग, वारसा...मैंने वारसा में पाँच वर्ष बिताये थे और वे मेरे जीवन के सबसे सुखद वर्ष थे। क्या ही अनोखा शहर है! प्रिय मित्र! चलो, चलें!"

12

एक सप्ताह बाद आन्द्रेई येफ़ीमिच को आराम करने का अवकाश दे दिया गया। दूसरे शब्दों में कहना चाहिए उनसे त्यागपत्र दिलवाया गया, जिसको उन्होंने बड़ी उपेक्षा की भावना से दे दिया। दूसरे सप्ताह वह सबसे निकअ के रेलवे स्टेशन जानेवाली घोड़ा गाड़ी में मिख़ाईल अवेर्यानिच के साथ बैठे हुए थे। मौसम ठंडा और शान्त था। आसमान नीला और हवा पारदर्शक थी। स्टेशन के 150 मील के रास्ते को उन्होंने दो दिनों में तय किया। रास्ते में उन्हें दो रातें गुजारनी पड़ीं।

रास्ते में घोड़े बदलने के स्टेशनों पर ठीक न धुले गिलासों में चाय मिलने पर या उसके घोड़ों को तुरन्त जोतने में देर होने पर मिखाईल अवेर्यानिच लाल हो जाता और सर से पाँव तक काँपते हुए वह चिल्लाता–"चुप रहो! बहस न करो!" गाड़ी में वह बराबर काकेशस और पोलैण्ड में अपनी यात्राओं का वर्णन करता रहता। क्या ही सुन्दर घटनाएँ घटी थीं उसके साथ। अहा, क्या लोग थे वे

जिनसे वह इस बीच मिला था! वह इतनी ज़ोर से बोलता था ओर उसकी आँखें आश्चर्य से इतनी गोल हो जाती थीं कि कोई भी यह सोच सकता था कि वह झूठ बोल रहा है। सबसे बढ़कर बात तो यह थी कि वह आन्द्रेई येफ़ीमिच के ठीक मुँह पर साँस छोड़ता और उनके कानों में हँसता। इससे डाक्टर परेशान हो गये और अपने विचारों को केन्द्रित करने में उन्हें बाधा पड़ने लगी।

बचत के ख़्याल से उन्होंने तीसरे दरजे के एक ऐसे डिब्बे में सफ़र किया, जिसमें धूम्रपान करने की इजाज़त नहीं थी। आधे मुसाफ़िर उन्हीं के वर्ग के थे। मिख़ाईल अवेर्यानिच की जल्दी ही सबसे दोस्ती हो गयी और वह एक बेंच से दूसरे बेंच पर जाते हुए सबको ऊँची आवाज़ में यह आश्वासन दिलाता फिरता था कि उन्हें ऐसी कष्टदायक रेलवे पर भ्रमण करने से इनकार कर देना चाहिए। चारों ओर धोखादेही! घुड़सवारी कितनी भिन्न है। इसमें एक ही दिन में 60 मील चलते थे और इसके बाद पड़ाव पर पहुँचने में कितनी ताज़गी और स्वस्थता का अनुभव होता था। पीस्क की दलदलों के सुखा दिये जाने से ही हमारी फ़सलें ख़राब होने लगी थीं। हर ओर अव्यवस्था थी। वह उत्तेजित हो जाता और ज़ोर से बोलने लगता और किसी को भी एक शब्द न बोलने देता। उसकी लगातार बातचीत ने, जिसके बीच-बीच में ज़ोर की हँसी गूँज उठती आन्द्रेई येफ़ीमिच को थका दिया।

झुँझलाते हुए वह सोचने लगे—"हममें से किसको पागल समझा जाना चाहिए? मुझको जो कि अपने साथी मुसाफ़िरों के लिए भार नहीं बनना चाहता या इस अहंकारी को जो समझता है कि इस रेलगाड़ी में वही सबसे अधिक दिलचस्प और समझदार आदमी है और यह किसी दूसरे को एक क्षण भी चैन नहीं लेने देगा।"

मास्को पहुँचने पर मिख़ाईल अवेर्यानिच ने बिना उपाधि-बिल्लों का एक फ़ौजी कोट और नीचे की सीवन पर लाल फ़ीते से सिली पतलून पहन ली। फ़ौजी टोपी व कोट पहने हुए वह घूमता और

सिपाही बाज़ारों में उसे सलामी देते। आन्द्रेई येफ़ीमिच को अब पता लगा कि इस आदमी ने अपनी कुलीन भद्रता की तमाम ख़ूबियाँ नष्ट कर दी हैं और अब सिर्फ़ उसकी बुराइयों को ही लिए हुए हैं। ज़रूरत न भी हो तब भी वह चाहता था कि कोई उसकी ख़िदमत करता रहे। दियासलाई की डिबिया मेज़ पर पड़ी होती और वह भी इस बात को जानता होता, फिर भी वह चिल्लाकर नौकर को आवाज़ देता कि वह उसे दियासलाई की डिब्बी दे दे। नौकरानी के सामने जाँघिया पहने ही निकल जाने में उसे किसी तरह लज्जा नहीं होती थी। सब नौकरों को वह तू कहकर पुकारता। जब वह गुस्से में होता तो चाहे नौकर बूढ़े ही क्यों न हों वह उन्हें बेवकूफ़ और छोकरा कहकर पुकारता था। आन्द्रेई येफ़ीमिच को लगा कि कुलीन भद्रजनों की यह विशेषता थी, लेकिन इससे उन्हें घृणा ही होती।

पहले पहल मिख़ाईल अवेर्यानिच ने अपने मित्र को 'ईवेरस्काय गिरजे' में प्रार्थना करने के लिए ले गया। वह बड़ी ही भावुकता से आँखों में आँसू भरकर बिलकुल ज़मीन तक सिर झुकाता हुआ प्रार्थना करता रहा और जब प्रार्थना कर चुका तो बहुत ही गहरी उसाँस भरता हुआ बोला—

"ईश्वर में चाहे कोई विश्वास न भी करे, लेकिन प्रार्थना से लाभ ही होता है। मूर्ति को चूमो, भले मानस!"

आन्द्रेई येफ़ीमिच ने भौंडे तरीक़े से मूर्ति को चूमा। लेकिन मिख़ाईल अवेर्यानिच ने अपने होंठ भींच लिए, अपने सिर को एक ओर से दूसरी ओर हिलाया और एक प्रार्थना आहिस्ते से कही, इस वक़्त फिर उसकी आँखों में आँसू भर आये। इसके बाद वे क्रेमलिन गये, जहाँ उन्होंने ज़ार-तोप और ज़ार-घंटा देखा। इनको उन्होंने वास्तव में अपनी उँगलियों से छुआ भी। नगर के दृश्य की प्रशंसा की और उद्धारक के गिरजाघर एवं रूम्यान्त्सेव के संग्रहालय को देखा।

तेस्तोव के रेस्तराँ में बैठकर उन्होंने भोजन किया। मिख़ाईल अवेर्यानिच अपनी गलमूछों को सहलाते हुए भोजन की लम्बी सूची

पढ़ता रहा और इसके बाद उसने नौकर से ऐसे पेटू के स्वर में जो रेस्तराँ से अभ्यस्त हो, कहा–

"यार! देखें, तुम आज क्या खिलाना चाहते हो।"

13

डाक्टर हर जगह जाते रहे, हर चीज़ देखते रहे, खाते-पीते रहे, लेकिन मिख़ाईल अवेर्यानिच के साथ उन्हें केवल खिजलाहट ही मालूम होती। वह अपने मित्र के सतत साथ से ऊब गये थे और चाहते थे कि उससे दूर भाग कर छिप जाएँ। लेकिन मिख़ाईल अवेर्यानिच इसको अपना कर्तव्य समझता था कि उनके साथ चिपका रहा जाए और उनका हर सम्भव तरीके से दिल बहलाव किया जाए। जब कोई चीज़ देखने को नहीं होती थी तो वह उन्हें बातचीत में लगाये रहना चाहता था। दो दिनों तक आन्द्रेई येफ़ीमिच इसको सहते रहे, लेकिन तीसरे दिन उन्होंने अपने मित्र से कहा कि वह स्वस्थ नहीं है और सारे दिन घर पर ही रहना चाहेंगे। उनके मित्र ने कहा कि उस दशा में वह भी घर पर ही रहेगा। उसने बिलकुल यही राय प्रकट की कि उन्हें आराम की आवश्यकता है, नहीं तो दोनों चलते-चलते पाँव घिस डालेंगें आन्द्रेई येफ़ीमिच अपनी पीठ को कमरे की ओर करके सोफ़े पर लेट गये और दाँतों को भींचकर अपने मित्र को सुनते रहे जो कि उन्हें ज़ोर से बता रहा था कि देर या सबेर फ्रांस जर्मनी को ध्वस्त कर देगा, मास्को धोखेबाज़ों से भरा है और घोड़े को केवल उसकी बाहरी ख़ूबियों से ही नहीं पहचाना जा सकता। डाक्टर अपनी धड़कन तेज़ होने और कानों में भनभनाहट की गूँजों से अवगत थे, लेकिन वह इतने नम्र थे कि अपने मित्र से जाने के लिए या बातें बन्द करने के लिए नहीं कह पा रहे थे। सौभाग्य से मिख़ाईल अवेर्यानिच घर में ही बैठे रहने से उकता गया और वह दोपहर को भोजन के बाद घूमने चला गया।

आन्द्रेई येफ़ीमिच ने एकाकी होकर अपने को शान्ति की अनुभूति

के हवाले कर दिया। कितना अच्छा था कि निष्पन्द होकर कमरे में एकाकी सोफ़े पर लेटे रहा जाए! बिना एकान्त के सच्चे आनन्द की कल्पना भी नहीं हो सकती। पतित देवदूत ने इसी एकान्त को कामना से ईश्वर से द्रोह किया होगा, एकान्त जो फ़रिश्तों को नसीब नहीं। आन्द्रेई येफ़ीमिच ने पिछले दिनों जो कुछ देखा और सुना था उस पर सोचना चाहते थे, लेकिन मिख़ाईल अवेर्यानिच को वह अपने मस्तिष्क से दूर न कर सके।

"और ज़रा सोचो कि उसने छुट्टी ली और मेरे साथ केवल मित्रता और उदारता के कारण चला आया है," डाक्टर ने चिड़चिड़ेपन से सोचा। "इस तरह के मित्रतापूर्ण संरक्षण से बढ़कर बुरी चीज़ क्या हो सकती है। वह दयालु और उदार और खुशमिज़ाज है, लेकिन असलियत यह है कि उसका साथ ऊबा डालनेवाला हैं वह बेहद ऊबानेवाला आदमी है। ऐसे लोग होते हैं जो विवेक और अच्छाई की बातों के अलावा कुछ भी नहीं बोलते और जो यह सब होते हुए भी तुम्हें यह महसूस करवाते हैं कि वे बड़े मूर्ख हैं।"

आनेवाले कई दिनों तक अस्वस्थता का बहाना बनाकर वह कमरे से बाहर नहीं निकले। उनका मित्र जब बातचीत से उनके मन को बहलाने का प्रयास करता तो उस वक़्त वह दीवाल की ओर मुँह करके चुपचाप व्यथा झेलते लेटे रहते और जब वह अनुपस्थित रहता तो आराम करते। वह इस यात्रा को ज़हमत मोल लेने के लिए अपने से और दिन-ब-दिन बातूनी और अन्तरंग बनते जाने के कारण अपने मित्र से कुपित थे। इसका नतीजा यह होता कि वह गम्भीर और महान् विचारों के लिए अपना मन एकाग्र न कर पाते।

साधारण परिस्थिति से ऊपर उठने की अपनी असमर्थता से नाराज़ होकर वह सोचते–"मैं उस यथार्थ से परेशान हूँ, जिसका ज़िक्र इवान दिमीत्रिच ने किया था। लेकिन यह सब बकवास है...में जैसे ही घर पहुँचूँगा, सब बातें पहले की तरह होने लगेंगी..."

पीटर्सबर्ग में भी यही क्रम रहा। कई दिनों तक वह होटल के कमरे

में सोफ़े पर लेटे रहे। केवल बीयर पीने के लिए ही वह उठते थे।

मिख़ाईल अवेर्यानिच बराबर यह कहता रहा कि वार्सा जाने के लिए जल्दी करनी चाहिए।

"मैं वारसा क्यों जाऊँ, मेरे दोस्त?" आन्द्रेई येफ़ीमिच ने अनुनय से कहा, "तुम मेरे बिना चले जाओ। और मुझे घर जाने दो। कृपा कर जाने दो!"

"सारी दुनिया मुझे दे डालो तो भी ऐसा नहीं हो सकता!" मिख़ाईल अवेर्यानिच ने विरोध में कहा। "वार्सा आश्चर्यजनक नगर है। मैंने अपने जीवन में पाँच सबसे सुखद वर्ष वहाँ बिताये हैं!"

आन्द्रेई येफ़ीमिच जिनमें इतनी शक्ति नहीं थी कि वह अपनी बात पर डटे रहते, मन मार कर अपने मित्र के साथ वार्सा गये। यहाँ वह कमरे में ही सोफ़े पर पड़े रहते। वह स्वयं अपने से, अपने दोस्त से और होटल के नौकरों से जिन्होंने रूसी न समझने की ज़िद्द कर रखी थी, क्रोधित थे। जबकि स्वस्थ प प्रसन्न मिख़ाईल अवेर्यानिच सदैव की तरह सुबह से लेकर रात तक अपने पुराने दोस्तों के घरों का चक्कर काटता फिरता था। कभी-कभी वह रात रात भी ग़ायब रहता। एक बार कहीं किसी अज्ञात स्थान पर रात गुज़ारने के बाद वह बहुत तड़के ही बड़ी उत्तेजित स्थिति में पहुँचा। उस वक़्त उसका मुँह लाल और तन-बदन अस्त-व्यस्त हो रहा था। बड़ी देर तक कमरे में वह अनमेल रूप से बड़बड़ाता रहा, फिर रुका और कहा– "इज़्ज़त बड़ी चीज़ है!"

कुछ देर तक टहलते रहने के बाद उसने अपने सिर को कसकर थामते हुए दुख भरे स्वर में कहा– "हाँ इज़्ज़त सबसे बड़ी बात है! इस बाबुल में आने का जिस घड़ी मैंने विचार किया, उस घड़ी का नाश हो। मेरे दोस्त," डाक्टर की ओर मुड़ते हुए उसने कहा, "तुम मुझसे घृणा करो। मैंने जुआ खेलने में अपने धन को लुटा दिया है। मुझे 500 रूबल दो।"

आन्द्रेई येफ़ीमिच ने 500 रूबल गिने और चुपचाप उन्हें अपने

दोस्त के सुपुर्द कर दिया। उनके मित्र ने जो अभी तक शर्म और गुस्से से लाल था, अनर्गल और व्यर्थ के वादे दोहराते हुए अपनी टोपी पहनी और कमरे से बाहर हो गया। दो घंटे बाद लौट कर आराम कुर्सी में पसरते हुए, गहरी साँस भरकर उसने कहा– "मेरी इज़्ज़त बच गयी। चलो, यहाँ से चलें, मित्र! अब इस शापित नगर में मैं एक क्षण भी ठहरना नहीं चाहता। ठग! आस्ट्रिया के भेदिये!"

नवम्बर का महीना था और जिस समय दोनों मित्र अपनी यात्राओं से लौटे सड़कों पर गहरी बर्फ़ जमी हुई थी। डाक्टर खोबोतोव ने उस स्थान की पूर्ति कर ली थी जिस स्थान पर इसके पूर्व आन्द्रेई येफ़ीमिच का अधिकार था। वह अभी तक पुराने कमरों में ही रह रहा था और प्रतीक्षा कर रहा था कि आन्द्रेई के आते ही अस्पताल का आवास ख़ाली हो जाएगा। वह असुन्दर औरत जिसको कि वह अपनी रसोईदारिन बतलाता था अभी अस्पताल के एक भाग में रह रही थी।

अस्पताल के सम्बन्ध में ताज़ी अफ़वाहों से नगर उत्तेजित हो रहा था। लोग कह रहे थे कि उस असुन्दर औरत का इंस्पेक्टर से झगड़ा हो गया था और इंस्पेक्टर को उसके सामने घुटने टेक कर माफ़ी माँगनी पड़ी थी।

पहुँचने के दिन ही आन्द्रेई येफ़ीमिच को कमरों की तलाश में घूमना पड़ा।

"प्रिय मित्र," पोस्टमास्टर ने डरते हुए उससे कहा, "मेरे अविवेक के लिए मुझे क्षमा करना, लेकिन यह बताओ तुम्हारे पास कितना धन है?"

आन्द्रेई येफ़ीमिच ने अपने रुपयों को गिनकर कहा–"86 रूबल।"

"मेरे कहने का तात्पर्य यह नहीं था," मिख़ाईल अवेर्यानिच ने डाक्टर के उत्तर से परेशान और संकोच में पड़कर कहा। "मैं जानता चाहता था तुम्हारे पास कुल मिलाकर कितना रुपया है?"

"और मैं कह तो रहा हूँ, 86 रूबल...बस यही रह गया है।"

यद्यपि मिख़ाईल अवेर्‌यानिच डाक्टर को ईमानदार और उच्च विचारक मानता था, फिर भी उसे इस बात का भरोसा था कि डाक्टर ने कम-से-कम बीस हज़ार रूबल बचाकर कहीं रख लिए होंगे। अब यह मालूम होने पर कि आन्द्रेई येफ़ीमिच बिलकुल निर्धन है और जीवित रहने के लिए उसके पास कोई साधन नहीं है, वह जाने क्यों एकाएक रो पड़ा और अपनी बाँहें अपने मित्र के गले में डाल दीं।

14

आन्द्रेई येफ़ीमिच निम्न मध्यम श्रेणी की एक औरत बेलोवा के घर रहने चले गये। रसोई छोड़कर उस छोटे मकान में कुल तीन कमरे थे। सड़क की ओर खुलनेवाले दो कमरों में डाक्टर का आधिपत्य था और दार्या, मकान-मालकिन और उसके तीन बच्चे तीसरे कमरे में तथा रसोई में रहते थे। कभी-कभी मकान मालिकिन का प्रेमी रात बिताने वहाँ आ पहुँचता। वह पियक्कड़ आदमी था, जो प्रायः बहुत उत्पाती हो जाता था जिससे दार्या और बच्चे भयभीत हो जाते थे। रसोई में कुर्सी पर बैठकर जिस वक़्त वह वोद्‌का माँगता था, वह स्थान बहुत छोटा मालूम पड़ने लगता था। डाक्टर चिल्लाते बच्चों को दयावश अपने कमरे में ले जाते और वहाँ फ़र्श पर उनके लिए बिस्तर बिछा देते। इससे उन्हें बड़ा सन्तोष मिलता था।

वह हमेशा की तरह आठ बजे उठते, चाय पीते और इसके बाद अपनी किताबों और पुरानी पत्र-पत्रिकाओं को पढ़ने बैठ जाते। उनके पास नये पत्र-पत्रिकाएँ खरीदने के लिए पैसे नहीं थे। या तो किताबों के पुराने होने के कारण या सम्भवतः परिवर्तित वातावरण के कारण पढ़ने में उन्हें अब शान्ति न मिलती बल्कि वास्तव में इससे उन्हें थकान हो जाती थी। बेकार न बैठने के उद्देश्य से उन्होंने अपनी किताबों की एक लम्बी सूची तैयार की, उनकी जिल्दों पर पर्चियाँ चिपकायी और इस तरह के यन्त्रवत् कार्य में पढ़ने की बनिस्बत उनका चित अधिक लगा। नीरस, शारीरिक श्रम, न जाने कैसे उनके

विचारों को शान्त करता लगता था। वह कार्य में लगे रहते, उनका मस्तिष्क शून्य होता और समय तेज़ी से गुज़रता जाता। रसोई में दार्या के साथ आलू के छिलके उतारने या अनाज को छानने का काम तक उन्हें अब रुचिकर प्रतीत होने लगा। शनिवार और इतवार को वह गिरजाघर जाते। आँखें बन्द कर दीवार के सहारे टेक लगाते, वह प्रार्थना-संगीत को सुनते रहते और अपने पिता, माता, विश्वविद्यालय तथा विभिन्न धर्मों की बातें सोचते रहते, इससे वह शान्ति व उदासी का अनुभव करते और जब वह गिरजाघर से बाहर जाते होते तो पछताते कि प्रार्थना इतनी जल्दी ही समाप्त हो गयी।

दो बार वह अस्पताल में इवान दिमीत्रिच को देखने और उससे बातें करने के लिए गये। लेकिन दोनों बार उन्होंने उसे असाधारण रूप से उत्तेजित और गुस्से में पाया, उसने यह कहते हुए ख़ाली बात से वह ऊब चुका है, अकेले छोड़ दिये जाने के लिए अनुरोध किया। वह कहता रहा कि वह जितने भी कष्टों से गुजर चुका है, उनके प्रायश्चित्त में बदमाश और नीच लोगों से एक ही बात यह चाहता है कि उसे तनहाई मिले, एकान्त में रहने दिया जाए, क्या उससे भी उसे वंचित किया जाएगा? दोनों बार उससे विदा लेने पर आन्द्रेई येफ़ीमिच ने जैसे ही उसे अभिवादन किया, इवान दिमीत्रिच ने चीखते हुए कहा—

"जहन्नुम में जाओ।"

आन्द्रेई येफ़ीमिच इस बात का निश्चय न कर सकें कि उन्हें उनके पास तीसरी बार भी जाना चाहिए या नहीं, यद्यपि ऐसा करने की उनकी बड़ी चाह थी।

पहले, भोजन के बाद का समय आन्द्रेई येफ़ीमिच फ़र्श पर टहलते हुए और सोचते हुए बिताते थे। अब वह दीवार की ओर मुँह कर सोफ़े पर पड़े रहते जब तक कि शाम की चाय का समय न आ जाता; अति साधारण विचारों से वह अपना पिंड नहीं छुड़ा पाते थे। उन्हें इस बात से बड़ी ग्लानि थी कि बीस वर्षों तक सेवा करने के बाद भी उन्हें कोई पेंशन या एक मुश्त रक़म नहीं दी गयी। यह सही

है कि वह नहीं समझते थे कि उन्होंने ईमानदारी से काम किया था लेकिन जिन्होंने भी नौकरी की हो, चाहे ईमानदार रहें हों या नहीं वे पेंशन के अधिकारी होते ही हैं। आधुनिक न्याय का यही सिद्धान्त है कि पद, सम्मान तथा पेंशन किन्हीं नैतिक गुणों अथवा योग्यताओं के लिए नहीं दी जातीं, बल्कि सर्विस के लिए, चाहे वह किसी भी तरह की क्यों न रही हो। तब फिर वही एकमात्र अपवाद क्यों बनाये जाएँ? उनके पास पैसा नहीं रह गया था। वह दूकान के सामने से गुज़रने में और दूकानदारिन से आँख मिलाने में शर्माते थे। बीयर के उन्हें बत्तीस रूबल देने थे। मकान मालिकिन बेलोवा का भी कर्ज़ा उनके सिर पर था। दार्या गुप्त रूप से उनके पुराने कपड़े और किताबें बेचती रहती और मकान-मालिकिन से कहती रहती कि डाक्टर एक बड़ी धनराशि की प्रतीक्षा में हैं।

वह इस बात से अपने ऊपर अत्यन्त कुपित थे कि उन्होंने उस यात्रा पर क्यों एक हजार रूबल खर्च कर दिये—अपनी बचत का सारा धन! इस वक़्त वह एक हज़ार रूबल उनके कितने काम आते। वह इस बात से भी परेशान थे कि उन्हें अकेले नहीं रहने दिया जाता था। ख़ोबोतोव इस बात को अपना कर्तव्य समझ रहा था कि अपने बीमार सहयोगी को देखने वह जब तब आ जाया करे। आन्द्रेई येफ़ीमिच को उसकी हर चीज़ से झल्लाहट हो गयी थी : उसका खूब खाया-पीया दिखाई देनेवाला चेहरा, उसका बेढंगा-तरीक़ा, दया दिखानेवाला स्वर, उसका 'सहयोगी' कहने का ढंग, उसके ऊँचे बूट; इस सबसे तो उन्हें नफ़रत थी ही, लेकिन इन सबसे बढ़कर क्रोधित करनेवाली बात तो यह थी कि ख़ोबोतोव इसको अपना कर्तव्य समझता था कि आन्द्रेई येफ़ीमिच की देखभाल की जाए और समझता था कि वह वास्तव में उनकी चिकित्सा कर रहा है। जब भी वह आता था वह अपने साथ पोटेशियम ब्रोमाइड की शीशी तथा जुलाब की दवा लेता आता था।

मिख़ाईल अवेर्यानिच भी इसको अपना कर्तव्य मानता था कि

अपने मित्र से मिलता रहे और उनके दिल बहलाने का प्रयास करता रहे। वह आन्द्रेई येफ़ीमिच के कमरे में बड़ी ही बेतकल्लुफ़ी की हवा बाँधते हुए तथा जबर्दस्ती की ख़ुशी दिखाते दाखिल होता था। वह उन्हें आश्वासन दिलाता कि वह अच्छे स्वस्थ दिखाई दे रहे हैं और ईश्वर को धन्यवाद है कि वह निश्चय ही सुधार की ओर प्रगति कर रहे हैं, जिसका अभिप्राय यही था कि वह उनके मामले को निराशाजनक समझता था। वार्सा में उधार लिए रूबलों को उसने लौटाया नहीं था और भारी शर्म और दबाव के बोझ से लदा हुआ वह जोर से हँसने की कोशिश करता और पहले से भी अधिक विचित्र कहानियाँ सुनाता रहता। उसकी विचित्र कहानियाँ और बातचीत अब अन्तहीन-सी लगतीं और आन्द्रेई येफ़ीमिच व खुद उसके लिए यन्त्रणा के समान थी।

उसके आगमन के दौरान में आन्द्रेई येफ़ीमिच प्रायः उसकी ओर पीठ करके सोफ़े पर लेटे रहते और दाँत भींचकर उसे सुनते रहते। उन्हें ऐसा लगता जैसे उनकी आत्मा पर मैल की सतह पर सतह जम रही है और हर बार जब भी उनका मित्र उनसे मिलने आता वह ऐसा समझते कि मैल की परतें ऊँची-से-ऊँची होती जा रही हैं, यहाँ तक कि उन्हें अपना दम घुटता हुआ मालूम होने लगा।

इन निम्न भावनाओं को दूर करने के लिए वह इस बात पर सोचा करते कि कभी-न-कभी उन्हें, ख़ोबोतोव और मिख़ाईल अवेर्यानिच को, बिना किसी तरह का निशान अपने पीछे छोड़े नष्ट होना ही पड़ेगा। यदि कोई कल्पना करे कि कोई आत्मा आज से दस लाख वर्ष बाद इस पृथ्वी के आकाश से गुज़रती है तो उसे सिवाय मिट्टी और चट्टानों के कुछ भी नहीं दिखाई देगा। संस्कृति, नैतिक क़ानून सब कुछ नष्ट हो चुकेंगे और एक घास का तिनका तक नहीं उगेगा। तब फिर उसकी ग्लानि, दूकानदार के सामने उसकी शर्म, तुच्छ ख़ोबोतोव, मिख़ाईल अवेर्यानिच की उत्पीड़क मित्रता का महत्त्व क्या? यह तो घटिया बात है। बिलकुल कूड़ा है।

लेकिन इस तरह का तर्क अब उन्हें किसी तरह की सान्त्वना नहीं

पहुँचा पाता था। दस लाख वर्ष बाद की पृथ्वी की कल्पना करते ही ख़ोबोतोव का चित्र उसके ऊँचे बूटों के साथ ही किसी नंगी चट्टान के पीछे से उभर उठता था या फिर बेतरह हँसता मिख़ाईल अवेर्यानिच उस काल्पनिक चित्र के साथ उपस्थित हो जाता था। यहाँ तक कि वह उस लज्जा भरी फुसफुसाहट को भी सुनने लगते कि "वार्सा में लिए ऋण का जहाँ तक सम्बन्ध है, मेरे मित्र, मैं कुछ ही दिन में लौटा दूँगा...मैं वास्तव में दे दूँगा।"

15

एक दिन मिख़ाईल अवेर्यानिच दोपहर के खाने के बाद आन्द्रेई येफ़ीमिच को देखने आया जबकि वह सोफ़े पर लेटे हुए थे। ख़ोबोतोव भी साथ-साथ ही पोटेशियम ब्रोमाइड लेकर पहुँचा। आन्द्रेई येफ़ीमिच बड़ी कोशिश से हाथों पर बोझ डालकर उठ बैठे।

"यार! कल से आज तुम कहीं ज्यादा स्वस्थ दिखाई दे रहे हो," मिख़ाईल अवेर्यानिच ने कहा, "तुम बहुत अच्छे, कसम से बहुत अच्छे दिखाई पड़ रहे हो।"

"बिलकुल ठीक, समय आ गया है, सहयोगी, कि तुम अपने स्वस्थ होने की बात सोचो," खोबोतोव ने भी जुमहाई लेते हुए बात जोड़ी। "तुम्हें ख़ुद ही अब बीमारी से ऊब चुकना चाहिए।"

"अरे, हम बहुत जल्दी ही चंगे हो जाएँगे!" मिख़ाईल अवेर्यानिच ने प्रसन्नतापूर्वक चिल्लाकर कहा। "हम सौ वर्ष और जीवित रहेंगे। बस, देखते रहो!"

"सौ वर्ष की बात तो मैं नहीं जानता लेकिन अगले बीस वर्षों के लिए निश्चय ही वह स्वस्थ हैं," ख़ोबोतोव ने पुनः आश्वस्त करते हुए कहा। "अरे, अरे, सहयोगी, माथा ऊँचा रखो—उदास मत होओ। मस्त रहो, यही तो ज़िन्दगानी है।"

"ही-ही," मिख़ाईल अवेर्यानिच ज़ोर-ज़ोर से हँसते हुए कहने लगा, "हम अभी बताएँगे कि हम क़िस धातु के बने हैं। ईश्वर ने

चाहा तो अगली गर्मी में हम काकेशस की ओर कूच करेंगे और उसके पर्वत-प्रदेश में घोड़े पर चढ़ते हुए फिरेंगे—खटाखट खटाखट। और जब हम काकेशस अवेर्यानिच ने धीमे से आँख मारते हुए कहा, "अरे भले आदमी, हम तुम्हारी शादी करवा देंगे। देखना अगर न करें तो..."

आन्द्रेई येफ़ीमिच ने सहसा अनुभव किया कि मैल की परत उठकर उनके गले तक आ गयी है, उनका दिल भयावह रूप से धड़कने लगा।

"यह सब कितनी बेहूदी बात है।" उन्होंने यकायक उठते हुए और खिड़की की ओर जाते हुए कहा, "क्या तुम यह नहीं देख सकते कि तुम कितनी बेहूदी बातें करते हो?"

वह नम्रता और भद्रता से कहना चाहते थे, लेकिन अपनी कोशिश के बावजूद उनकी दोनों मुट्ठियाँ उनके सिर से ऊपर उठ गयी।

"मुझे अकेले छोड़ दो।" वह चीख़े। इस वक़्त उनका चेहरा लाल हो गया था और सारा शरीर काँप रहा था। "निकल जाओ! तुम दोनों! बाहर! दोनों!"

मिख़ाईल अवेर्यानिच और ख़ोबोतोव दोनों उठ खड़े हुए और उनकी ओर घूर-घूरकर देखने लगे, पहले तो परेशानी में और फिर आतंकित होकर।

"निकलो, बाहर हो जाओ। तुम दोनों।" आन्द्रेई येफ़ीमिच चिल्लाते हुए कहते रहे। "बेहूदे लोग! बेवकूफ़! न तो मैं तुम्हारी मित्रता चाहता हूँ और न तुम्हारी दवा ही। बेवकूफ़! अभद्र! घृणास्पद!"

अचम्भे में एक-दूसरे को ताकते हुए ख़ोबोतोव और मिख़ाईल अवेर्यानिच दरवाज़े तक मुड़े बिना चले आये और गलियारे में निकल आये। आन्द्रेई येफ़ीमिच ने पोटेशियम ब्रोमाइड की बोतल खींचकर उसे उनके पीछे दे मारी। बोतल दरवाज़े से टकराकर टूट गयी।

"जहन्नुम में जाओ!" वह रुआँसी आवाज़ में चिल्लाते हुए गलियारे तक उनके पीछे दौड़े। "जहन्नुम में जाओ!"

जब उनके मिलनेवाले चले गये, जैसे ज्वर से काँपते हुए वह सोफ़े पर लेट गये। बार-बार वह कहते जाते थे– "उजड्ड लोग! मूर्ख।"

वह जब शान्त हो गये तो एकबारगी उन्होंने सोचा कि बेचारे मिख़ाईल अवेर्यानिच इस समय कितना बुरा मान रहा होगा। यह सब कितनी शर्मनाक और भद्दी बात थी। ऐसी घटना, इसके पूर्व, उनके साथ कभी नहीं हुई थी। उनकी बुद्धिमत्ता और निपुणता, उनकी समझदारी और दार्शनिक उदासीनता कहाँ गायब हो गयी थीं?

डाक्टर रात भर शर्म और अपने से खीज के मारे सो न सके। सुबह दस के लगभग वह डाकखाने में पोस्टमास्टर से क्षमायाचना करने चले गये।

"जो हो चुका है, उस पर ज़्यादा क्यों ध्यान दिया जाए," मिख़ाईल अवेर्यानिच ने अत्यन्त द्रवित होकर साँस भरते हुए और उनके हाथ को बड़े स्नेह से दबाते हुए कहा। "जो हो गया सो हो गया, उसके भूल जाओ। ल्यूबावकिन!" वह इतनी ज़ोर से चिल्लाया कि डाकख़ाने के तमाम क्लर्क और अपने काम से आये लोग स्तम्भित हो गये। "एक कुर्सी लाओ। तुम क्या ज़रा रुक नहीं सकतीं, तुम?" वह एक ग़रीब महिला पर जो कि एक रजिस्टरी-पत्र खिड़की की राह भीतर दे रही थी, झल्ला पड़ा। "क्या तुम देखती नहीं हो कि मैं व्यस्त हूँ? जो हो गया सो हो गया।" आन्द्रेई येफ़ीमिच की ओर मुड़ते हुए वह स्नेहपूर्ण ढंग से कहने लगा, "बैठ जाओ, प्रिय मित्र, मैं अनुरोध करता हूँ, बैठ जाओ!"

पूरे एक मिनट तक वह चुपचाप अपने घुटनों को रगड़ता रहा, फिर बोला– "मैंने इस बात का एक क्षण के लिए भी बुरा नहीं माना। मैं जानता हूँ बीमार होना क्या होता है। डाक्टर और मैं कल तुम्हारे दौरे से घबरा गये थे। हम बड़ी देर तक तुम्हारे बारे में बातें करते रहे। प्रिय मित्र, तुम अपनी बीमारी का गम्भीरतापूर्वक इलाज क्यों नहीं करते? तुम्हें इस तरह से उपेक्षा नहीं करनी चाहिए, हाँ सच! एक मित्र की हैसियत से मेरी स्पष्टवादिता क्षमा करना," मिख़ाईल अवेर्यानिच ने

आवाज़ धीमी करते हुए कहा, "लेकिन तुम बहुत ही अनुचित वातावरण में रहते हो : तंग जगह, चारों ओर गन्दगी, कोई परवाह करनेवाला नहीं, चिकित्सा का कोई साधन नहीं...मेरे प्यारे दोस्त! डॉक्टर और मैं दोनों तुमसे अनुरोध करते हैं कि तुम हमारी राय मान लो। अस्पताल चले जाओ। वहाँ खाना अच्छा मिलता है और तुम्हारी देखभाल की जाएगी और तुम्हारी बीमारी का इलाज होगा। येवगेनी फ़ेदोरोविच ग़लत ढंग का आदमी होने के बावजूद—और हम तुम यह बात जानते हैं—चतुर डाक्टर है और कोई भी उसका विश्वास कर सकता है। वह तुम्हारी देख-भाल करने का वचन देता है।"

आन्द्रेई येफ़ीमिच हार्दिक आशक्ति के स्वर में तथा उन आँसुओं से जो सहसा पोस्टमास्टर के गालों पर से लुढ़कने लगे द्रवित हो गये।

"मेरे बड़े प्यारे दोस्त! उनका विश्वास मत करो।" उन्होंने धीमे से, अपने हाथ को अपने दिल पर रखते हुए कहा। "उनका विश्वास मत करो! यह सब झूठ है। मेरी ग़लती यही है कि 20 वर्षों के दौरान में अपने नगर में मुझे केवल एक ही बुद्धिमान आदमी मिला और वह पागल है। मैं ज़रा भी बीमार नहीं हूँ। मैं एक कुचक्र में फँस गया हूँ जिससे बाहर होने का कोई रास्ता नहीं है। मुझे किसी चीज़ की चिन्ता नहीं है। जैसी तुम्हारी मर्जी हो, करो।"

"अस्पताल में जाओ, मेरे दोस्त।"

"मुझे इसकी परवाह ही नहीं है कि मुझे कहाँ जाना है। अगर तुम्हारी यही इच्छा हो तो मुझे जीवित भी गाड़ दे सकते हो।"

"मुझसे वादा करो कि तुम येवगेनी फ़ेदोरोविच की हर बात मानोगे, मेरे भले दोस्त!"

"अच्छी बात है, मैं वचन देता हूँ। लेकिन मैं तुमसे फिर कह रहा हूँ कि मैं कुचक्र में फँस गया हूँ। अब से हर चीज़ यहाँ तक कि शुभाकांक्षियों की हार्दिक सहानुभूति भी मुझे मेरी बरबादी की ओर ले जा रही है। मैं विनष्ट हो रहा हूँ और मुझमें इसको समझने का साहस है।"

"लेकिन, भाई। तुम तो अच्छे हो जाओगे।"

"इस तरह बात करने से क्या लाभ?" आन्द्रेई येफ़ीमिच ने तप कर कहा। "अपने जीवन के अन्तिम भाग में प्रायः हर एक को इस तरह की घटना से गुज़रना ही पड़ता है। चाहे यह कहा जाए कि तुम्हारा गुर्दा ख़राब है या तुम्हारे हृदय की गति ठीक नहीं है तो तुम्हें डाक्टरी इलाज करवाना चाहिए चाहे लोग यह कहें कि तुम पागल अथवा अपराधी हो—संक्षेप में लोगों का ध्यान जैसे ही तुम्हारी ओर आकर्षित हो तुम निश्चित समझ लो कि अब ऐसे कुचक्र में पड़ गये हो जिससे निकलना तुम्हारे लिए नामुमकिन है। जितना ही तुम इससे बाहर होने की कोशिश करोगे उतना ही तुम इसमें फँसते जाओगे। अच्छा यही है कि तुम कोशिश छोड़ दो क्योंकि कोई भी मानव प्रयास तुमको बचा नहीं सकता। कम-से-कम मेरी यही राय है।"

इस बीच डाकख़ाने की खिड़की के दूसरी ओर लोगों की भीड़ इकट्ठी हो चुकी थी। उनको ज़्यादा देर रोकना उचित न समझकर आन्द्रेई येफ़ीमिच उठ खड़े हुए और बिदाई का नमस्कार कहने लगे। मिख़ाईल अवेर्यानिच ने उनसे वादा फिर से दोहरवाया और उन्हें दरवाज़े तक पहुँचा दिया।

उसी रोज़ शाम को अचानक ख़ोबोतोव भी अपने भेड़ रोएँदार चमड़े के जैकट और ऊँचे बूटों को डाटे, जैसे कुछ हुआ ही न हो, उनके पास आया।

"मैं काम से तुम्हारे पास आया हूँ, सहयोगी! मैं चाहता हूँ कि तुम मेरे साथ मरीज़ को देखने चलो। क्या आना चाहोगे?"

यह सोचकर कि सम्भवतः ख़ोबोतोव घूमकर उनका मन बहलाना चाहता हो या उन्हें कुछ थोड़ा-सा धन कमाने का अवसर देना चाहता हो, वह अपना कोट और टोपी पहनकर उसके साथ बाहर निकल आये। वह अपने पिछले दिन की ग़लती पर अफ़सोस ज़ाहिर करने का मौक़ा मिलने पर प्रसन्न थे और ख़ोबोतोव के प्रति कृतज्ञता का अनुभव कर रहे थे। ख़ोबोतोव ने इस प्रसंग में एक भी शब्द नहीं कहा। वह आन्द्रेई येफ़ीमिच की भावनाओं पर आघात न पहुँचाने पर

तुला हुआ था। आन्द्रेई येफ़ीमिच इस तरह के बिलकुल असंस्कृत आदमी में इतनी निपुर्णता पाने पर आश्चर्यचकित थे।

"तुम्हारा मरीज़ कहाँ है?" आन्द्रेई येफ़ीमिच ने पूछा।

"मेरे अस्पताल में है। मैं कुछ समय से उसे तुम्हें दिखाना चाहता था...बड़ा अनोखा मामला है।"

वे अस्पताल के अहाते में दाखिल हुए और मुख्य भवन से होते हुए उस छोटी इमारत की ओर गये जहाँ मानसिक रोगी रखे जाते थे। इस बीच किसी कारणवश दोनों में से कोई भी नहीं बोला। जैसे ही वह उस कक्ष में पहुँचे, निकीता कूदकर खड़ा हो गया, और सलाम किया जैसा कि वह बराबर करता आया था।

"उनमें से एक के फेफड़ों में खराबी आ गयी है।" ख़ोबोतोव ने आन्द्रेई येफ़ीमिच के साथ वार्ड में प्रवेश करते समय गुनगुनाते हुए कहा। "तुम यहाँ मेरी प्रतीक्षा करो, मैं एक मिनट में लौट आऊँगा, मैं अपना स्टेथसकोप ले आऊँ।"

और वह बाहर हो गया।

16

अँधेरा बढ़ता जा रहा था। इवान दिमीत्रिच अपने बिस्तर में, अपना मुँह तकिये में आधा गाड़े हुए लेटा था। लकवे का रोगी निश्चेष्ट हो बैठा था, वह चुपचाप रो रहा था और अपने ओंठों को हिलाता जाता था। मोटा किसान और भूतपूर्व डाक छाँटनेवाला सो रहे थे। कमरे में निस्तब्धता छाई थी।

आन्द्रेई येफ़ीमिच प्रतीक्षा में इवान दिमीत्रिच की बग़ल में बैठ गये। लेकिन आधा घंटा गुज़र जाने के बाद भी ख़ोबोतोव न आया और उसकी जगह निकीता ने वार्ड में ड्रेसिंग गाउन, भीतर पहनने के कपड़े और स्लीपरों को अपनी बाँह में लिए प्रवेश किया।

"अपने कपड़े बदल लीजिए, हुज़ूर!" उसने शान्ति से कहा। "वह आपकी चारपाई है" उसने उस एक खाली चारपाई की ओर

जो कि अभी लायी गयी लगती थी, संकेत करते हुए आगे कहा, "ईश्वर ने चाहा तो स्वस्थ हो जाएँगे। चिन्ता न कीजिए।"

आन्द्रेई येफ़ीमिच यह सब कुछ समझ गये। बिना एक शब्द कहे वह निकीता द्वारा बतायी गयी चारपाई की ओर बढ़ गये और उस पर बैठ गये। यह महसूस करते हुए कि निकीता उनकी प्रतीक्षा में है, वह गहरी शर्म अनुभव करते हुए अपने कपड़े उतार नंगे हो गये फिर उन अस्पताली कपड़ों को पहनने लगे जाँघिया जो बहुत तंग था, कमीज़ जो बहुत लम्बी थी और ड्रेसिंग गाउन जिससे तली मछलियों की गन्ध आ रही थी।

"ईश्वर ने चाहा तो स्वस्थ हो जाएँगे," निकीता ने बात दोहराई।

आन्द्रेई येफ़ीमिच के कपड़ों को अपनी बाँह में टाँगे वह दरवाज़ों को बन्द करता हुआ बाहर हो गया।

"सब एक ही बात है," गाउन को अपनी कमर पर संकोच से लपेटते हुए और यह अनुभव करते हुए कि वह क़ैदी के समान हो गये हैं, उन्होंने सोचा। "सब एक ही बात है, चाहे फ़्राक कोट हो, वर्दी, यूनीफ़ॉर्म हो या यह गाउन हो..."

"लेकिन घड़ी? वह कॉपी जिसे वह अपनी बग़ल की जेब में लिये रहते थे? सिगरेट? निकीता उनके कपड़ों को कहाँ ले गया है? वह सम्भवतः अब अपने जीवन में कभी भी पतलून वास्कट और बूट न पहन सकेंगे। पहले तो यह सब उन्हें अनोखी और समझ में न आ सकनेवाली बात लगी। आन्द्रेई येफ़ीमिच अभी तक भी अपने इस विश्वास पर दृढ़ थे कि मकान-मालिकिन बेलोवा के घर और वार्ड नम्बर छः में कोई अन्तर नहीं है। संसार में हर बात व्यर्थ है, सब अहं है, फिर भी उनके हाथ काँपने लगे और पाँव ठंडे पड़ने लगे, इस विचार के आते ही कि इवान दिमीत्रिच जागते ही उन्हें अस्पताल के लिबास में देखेगा। उनका दिल डूबने लगा। वह उठ खड़े हुए, कमरे में कुछ देर चहलकदमी की और फिर बैठ गये।

आधा घंटा बीता, फिर एक घंटा और वह वहाँ बैठे रहने से

खिन्न हुए और थक गये। इन सब लोगों की तरह क्या यहाँ सारा दिन, हफ़्ता भर व वर्षों गुज़ारना सम्भव हो सकता था? खैर! वह कुछ देर तक बैठे रहे, फिर टहलते रहे और फिर बैठ गये। वह खिड़की तक जाकर बाहर देख सकते थे और फिर एक बार कमरे में चहल क़दमी कर सकते थे। और फिर इसके बाद क्या वहाँ सिर्फ़ पत्थर की मूर्ति की तरह सारे समय बैठा ही रहना था? नहीं, नहीं, यह बिलकुल असम्भव है।

आन्द्रेई येफ़ीमिच लेट गये, लेकिन तुरन्त ही उठ गये, अपने माथे पर गाउन की आस्तीन से ठंडा पसीना पोंछते ही उन्हें अपने चेहरे पर भुनी मछलियों की गन्ध मालूम हुई। उन्होंने कमरे का एक चक्कर लगाया।

"कोई ग़लतफ़हमी हो गयी है," उन्होंने अपनी बाँहों को विभ्रम में हिलाते हुए कहा। "मुझे उनसे कहना चाहिए यह एक ग़लतफ़हमी है..."

ठीक उसी वक़्त इवान दिमीत्रिच जाग पड़ा। वह अपने गालों को हथेलियों में लिये बैठ गया। उसने ज़मीन पर थूका। इसके बाद धीरे-धीरे उसने डाक्टर पर निगाह डाली। ज़ाहिर था कि वह पहले पहल कुछ नहीं समझ पा रहा था, लेकिन दूसरे ही क्षण उसके उनींदे चेहरे पर व्यंग्य और क्रूरता का भाव व्याप्त हो गया।

"अच्छा तो तुमको भी वह यहाँ ले आये हैं, दोस्त!" उसने एक आँख भींचते हुए नींद के कारण भारी आवाज़ में कहा। "तुम से मिलकर प्रसन्नता हुई। दूसरों का खून चूसने की जगह अब ख़ुद तुम्हारा ख़ून चूसा जाएगा। बहुत ख़ूब!"

"यह कुछ ग़लतफ़हमी मालूम होती है..." इवान दिमीत्रिच के शब्दों से भयाकुल होकर आन्द्रेई येफ़ीमिच ने गुनगुनाकर कहा। उन्होंने कन्धों को हिलाते हुए एक बार फिर बात दोहराई। "यह किसी तरह की ग़लतफ़हमी की बात ही होगी..."

इवान दिमीत्रिच ने फिर थूका और उसके बाद वह लेट गया।

"अभिशप्त जीवन!" वह गुनगुनाते हुए कहता रहा। "और व्यथापूर्ण एवं अपमानजनक बात यह है कि यह जीवन अपने कष्टों के बदले में किसी क्षतिपूर्ति या नाटकों की भाँति देवत्व प्राप्ति में अन्त नहीं होगा। बल्कि इसका अन्त मृत्यु में होगा। दो नौकर आकर मृत शरीर को उसकी बाँहों और टाँगों से उठाकर ले जाएँगे और तहखाने में पटक देंगे। ऊफ़-फ़-फ़। चिन्ता मत करो...दूसरी दुनिया में हमारा वक़्त आएगा...मेरा प्रेत लौटकर इन सूअरों को डराता रहेगा। मैं इनके बालों को भय से सफ़ेद कर दिया करूँगा।

तभी मोज़ेज़ लौटकर आ पहुँचा और डाक्टर को देखकर उसने अपना हाथ फैला दिया—

"मुझे एक कोपेक दो।"

17

आन्द्रेई येफ़ीमिच खिड़की तक गये और वहाँ से बाहर खेतों की ओर झाँकने लगे। काफ़ी अँधेरा घिरने लगा था और दाहिनी ओर से गहरे लाल रंग का वह ठंडा चाँद आसमान पर उदय हो रहा था। अस्पताल के अहाते से बहुत दूर नहीं, यही कोई 700 फ़ीट, इससे अधिक नहीं, एक ऊँची सफ़ेद इमारत खड़ी थी जो चारों ओर से दीवार से घिरी हुई थी। यह जेलखाना था।

"तो यही वास्तविकता है।" आन्द्रेई येफ़ीमिच ने सोचा और वह भयाकुल हो गये।

हर वस्तु भयानक थी—चाँद, जेलख़ाना, चहारदीवारी के ऊपर उलटी गड़ी हुई कीलें और दूर हड्डियों के भट्ठों से उठनेवाली लपटें। तभी पीछे से किसी से साँस भरने की आवाज़ आयी। आन्द्रेई येफ़ीमिच मुड़े और उन्होंने एक आदमी को अपने सीने पर ख़िताब के तमग़े और पदवियाँ धारण किये हुए खड़ा देखा। यह आदमी मुस्करा रहा था और शरारत से आँखें मार रहा था। यह भी भयानक था।

आन्द्रेई येफ़ीमिच ने अपने को यह समझाने की कोशिश की कि

चाँद या जेलखाने के भवन में कोई असाधारण बात नहीं और जिन लोगों के दिमाग़ दुरुस्त होते हैं वे तमग़े पहनते ही हैं तथा समय आने पर हर चीज़ नष्ट होकर धूल में मिल जाएगी, लेकिन वह सहसा निराशा से पराभूत हो गये और खिड़की के सीखचों को अपने दोनों हाथों से पकड़कर उन्हें हिलाने की कोशिश करने लगे। सीखचे अच्छी तरह गड़े हुए थे और वे तनिक भी न हिले।

तब अपने ऊपर छाये आतंक को दूर करने की गरज़ से वह उठकर इवान दिमीत्रिच की चारपाई के पास चले गये और उसकी बग़ल में बैठ गये।

"मैं निराश हो चुका हूँ, प्रिय मित्र," वह काँपते हुए और अपने माथे के ठंडे पसीने को पोंछते हुए कहते रहे। "मेरा दिल टूट चुका है।"

"दर्शन बघारो!" इवान दिमीत्रिच ने मज़ाक उड़ाते हुए कहा।

"हे ईश्वर, हे भगवान...हाँ...हाँ, तुमने एक बार कहा था कि रूस में किसी तरह की दर्शन-प्रणाली नहीं है, फिर भी यहाँ हर कोई दार्शनिकतापूर्ण बाते करता है, यहाँ तक कि सर्वसाधारण भी। लेकिन सर्वसाधारण का दर्शन किसी को क्या नुक़सान पहुँचाता है?" आन्द्रेई येफ़ीमिच की वाणी ऐसी मालूम होती थी जैसे वह रोने ही वाले हों अथवा दया जगाना चाहते हों। "तब फिर यह देषपूर्ण हँसी क्यों, प्रिय मित्र? और जब सर्वसाधारण सन्तुष्ट नहीं है, तब सिर्फ़ दार्शनिकता की बातें करने के अलावा उनके लिए रह ही क्या गया है? एक बुद्धिमान, सुशिक्षित, अभिमानी, स्वतन्त्र देवता-तुल्य व्यक्ति के लिए इसके अलावा कोई दूसरा चारा नहीं कि वह किसी बेहूदा गन्दे, छोटे नगर में डाक्टर बनकर आये और अपनी सारी ज़िन्दगी फ़स्द खोलने, जोंक लगाने और सरसों के पुलटिस चढ़ाने में उत्सर्ग कर दे। पाखंड, संकीर्णता, अभद्रता। ओह! मेरे भगवान!"

"तुम बेवकूफ़ी की बातें कर रहे हो। अगर तुम डाक्टर नहीं होना चाहते हो तो सरकार के मन्त्री क्यों नहीं बन जाते?"

"नहीं, नहीं, ऐसा कुछ भी नहीं है जो किया जा सके। हम निशक्त

हैं, मेरे मित्र...मैं उदासीन था। मैं प्रसन्नता से सुचित्त होकर सोचा-विचारा करता था। लेकिन जिस क्षण में जीवन की कठोरता मुझे स्पर्श करती है, मेरा दिल बैठ जाता है...हम धराशायी हो जाते हैं। हम कमज़ोर हैं, दयनीय हैं...तुम भी मेरे मित्र! तुम बुद्धिमान और उच्च विचारों के आदमी हो। अपनी माँ के दूध के साथ तुमने सुन्दर भावनाओं को ग्रहण किया था। लेकिन ज़िन्दगी को अभी मुश्किल से ही तुमने शुरू किया था कि तुम थक गये और बीमार हो गये...कमज़ोर, कमज़ोर।"

अपने भय और कलंक की भावनाओं के अतिरिक्त अँधेरा बढ़ने के साथ आन्द्रेई येफ़ीमिच को कोई और बात ज़ोर से खाए जाने लगी। आख़िर उन्हें ज्ञात हुआ कि वह उनकी बीयर और सिगरेट पीने की इच्छा ही थी।

"मैं एक मिनट के लिए जा रहा हूँ, मेरे मित्र," उन्होंने कहा। "मैं उनसे कहूँगा कि वह हमें रोशनी का प्रबन्ध करें...मैं इस तरह से नहीं रह सकता। मैं बिलकुल बरदाश्त नहीं कर सकता..."

आन्द्रेई येफ़ीमिच दरवाज़े तक गये और उसको जैसे ही खोला, निकीता कूद कर खड़ा हो गया और उनका रास्ता रोक दिया।

"तुम कहाँ जा रहे हो? यह सब कुछ नहीं चलेगा" उसने कहा। "अब सोने का समय हो चुका है।"

"मैं बाहर सिर्फ़ एक मिनट के लिए, यही ज़रा-सा अहाते में घूमने जाना चाहता हूँ।" आन्द्रेई येफ़ीमिच ने बिलकुल स्तम्भित होकर कहा।

"नहीं, नहीं, इसकी अनुमति नहीं है। तुम स्वयं इस बात को जानते हो।"

और निकीता दरवाज़ा बन्द कर उससे पीठ सटा कर खड़ा हो गया।

"लेकिन मेरा बाहर जाना किसी को भी किसी तरह नुक़सान नहीं पहुँचाएगा।" आन्द्रेई येफ़ीमिच ने अपने कन्धों को झटकते हुए कहा। "निकीता, मैं इस बात को नहीं समझ पा रहा हूँ। मुझे ज़रूर बाहर

जाना चाहिए।" उन्होंने टूटती आवाज़ में कहा। "मुझे जाना चाहिए।"

"अब तुम शान्ति को भंग करने की कोशिश मत करो।" निकीता ने डाँटा।

"यह शर्मनाक है!" इवान दिमीत्रिच ने एकाएक कूदकर चिल्लाते हुए कहा। "उसे क्या अधिकार है कि वह लोगों को बाहर जाने से रोके? क़ानून स्पष्ट कहता है, मैं दावे से कह सकता हूँ कि बिना मुक़दमा चलाये किसी की भी स्वतन्त्रता नहीं छीनी जा सकती। यह तो सरासर हिंसा है! बिलकुल स्वेच्छाचारिता है!"

"बेशक, यह स्वेच्छाचारिता है!" आन्द्रेई येफ़ीमिच ने सहसा इस आशातीत समर्थन से उत्साहित होकर कहा। "मैं बाहर जाना चाहता हूँ, मुझे जाना ही है। उसे मुझको रोकने का कोई अधिकार नहीं है। मैं तुमसे कहता हूँ मुझे बाहर आने दो! खोलो, तुम्हीं को कह रहा हूँ।"

"ए जानवर! तू सुन रहा है?" इवान दिमीत्रिच ने अपने मुक्के से दरवाजे को पीटते हुए कहा। "दरवाज़ा खोलो, वरना मैं इसे तोड़ दूँगा। ए बूचड़।"

"दरवाज़ा खोलो।" आन्द्रेई येफ़ीमिच ने काँपते हुए चिल्लाकर कहा, "मैं कह रहा हूँ।"

"कहते जाओ फिर।" दरवाज़े के दूसरी ओर से निकीता ने उत्तर दिया। "कहो जाओ।"

"कम-से-कम जाओ और येवगेनी फ़ेदोरोविच को बुलाकर ले आओ। उनसे कहो कि मैं चाहता हूँ वह एक मिनट भर के लिए इधर आये।"

"वह बिना बुलाये कल आ जाएँगे।"

"वे कभी भी हम को बाहर नहीं होने देंगे," इवान दिमीत्रिच ने कहा। "वे हम को यहीं रखेंगे जब तक हम सड़ने न लग जाएँ! ओह भगवान! क्या यह बात सच है कि दूसरी दुनिया में नरक नहीं है और इन दुष्टों को क्षमा मिल जाएगी? न्याय कहाँ है? ऐ दुष्ट, दरवाज़ा खोलो, मेरा दम घुट रहा है!" उसने भारी गले से चिल्लाते हुए कहा और अपने शरीर के सारे ज़ोर को दरवाज़े में लगा दिया। "मैं अपना

सर पटक दूँगा! हत्यारो!"

निकीता ने एकबारगी दरवाज़ा खोला और बाँहों और घुटने के धक्के से आन्द्रेई येफ़ीमिच को अशिष्टता से एक ओर धकेला और इसके बाद अपनी मुट्ठी तानकर आन्द्रेई येफ़ीमिच के मुँह पर घूँसा जमा दिया। आन्द्रेई येफ़ीमिच को लगा कि एक बहुत बड़ी खारे पानी की लहर उसके सिर से लेकर पाँव तक दौड़ गयी है जिसने उन्हें बिस्तर पर पहुँचा दिया है। वास्तव में उनके मुँह में नमकीन स्वाद आ गया था। स्पष्टतः उनके मसूड़ों से ख़ून बह रहा था। उन्होंने अपनी बाँहें उठाईं मानों तले से उबरने की कोशिश कर रहे हों और किसी के बिस्तर को पकड़ लिया। इसके साथ ही उन्हें यह भी महसूस हुआ कि निकीता ने उनकी पीठ पर दो बार प्रहार किया।

इवान दिमीत्रिच तेज़ी से चीखा। मतलब यह कि वह भी पीटा जा रहा था।

इसके उपरान्त सब शान्त हो गया। चाँद सीख़चों से होकर धुँधली रोशनी रहा था और फ़र्श पर एक परछाईं पड़ी जो देखने में जाल की तरह लगती थी। हर एक चीज़ आतंकित करनेवाली थी। आन्द्रेई येफ़ीमिच लेट गये और साँस न लेने का प्रयत्न करते रहे। वह भयाकुल हो दूसरे घूसे के पड़ने की प्रतीक्षा कर रहे थे। उन्हें ऐसा अनुभव हुआ जैसे किसी ने दराँती लेकर उनके शरीर में घुसेड़ दी हो और उनके सीने और पेट में उसे कई बार घुमाया हो। पीड़ा के कारण उन्होंने तकिये को दाँतों से काटा और अपने दाँत भींच लिये, तभी सहसा इस गड़बड़ी के बीच एक विचार भयानक और असह्य रूप से उनके मस्तिष्क में आया—जिस पीड़ा को वह इस वक्त महसूस कर रहे थे, उस पीड़ा को ये लोग, जो कि चाँद के प्रकाश में काली छायाओं की तरह दिखाई दे रहे थे, वर्षों से दिन पर दिन लगातार महसूस करते रहे होंगे। कैसे इन बीस वर्षों की अवधि में वह इस बात को नहीं जान पाये अथवा उन्होंने जानने की इच्छा ही नहीं की? उन्होंने यह नहीं जाना था, उन्हें इस पीड़ा का कोई

अनुमान भी नहीं था, अतएव दोष उन पर नहीं हो सकता था। लेकिन कठोर और दुर्दमनीय निकीता की तरह उनकी अन्तरात्मा ने उन्हें कँपा डाला। वह कूद कर खड़े हो गये और अपनी ऊँची आवाज़ में चिल्लाना, और दौड़कर बाहर हो निकीता, खोबोतोव, अस्पताल के सुपरिण्टेंडेंट व मेडिकल सहायक को और फिर अपने को भी मार डालना चाहा। लेकिन उनके मुँह से कोई आवाज़ नहीं निकली और उनकी टाँगें काबू से बाहर थीं; हवा के लिए हाँफते हुए उन्होंने अपने चोग़ा और कमीज़ को मरोड़कर, फाड़ना शुरू किया और इसके उपरान्त अचेतन होकर अपने बिस्तर में लुढ़क गये।

18

दूसरे रोज़ सुबह वह भारी सिर और कानों में झनझनाती हुई आवाज़ के साथ जगे। उनके शरीर की हर हड्डी में पीड़ा हो रही थी। कल रात की अपनी निशक्त अवस्था से उन्हें कोई लज्जा नहीं हुई। उन्होंने एक कायर की तरह आचरण किया था, यहाँ तक कि उन्होंने अपने को चाँद से भी भयभीत होने दिया था और पूरी ईमानदारी से उन विचारों और भावनाओं को प्रकट किया था जिनका कभी भी अपने भीतर होने का उन्हें अनुमान भी नहीं था। उदाहरण के लिए, उनका यह विचार कि असन्तोष साधारण जनों को दार्शनिक रूप से विचार करने की प्रेरणा देता है। लेकिन अब उन्हें किसी बात की परवाह नहीं थी।

न तो उन्होंने खाया और न पिया, केवल निश्चेष्ट और चुपचाप अपने बिस्तर पर पड़े रहे।

"मैं परवाह नहीं करता," उन्होंने सोचा लोगों के पूछने पर। "मैं उन्हें उत्तर नहीं दूँगा... मुझे कोई परवाह नहीं।"

दोपहर के भोजन के बाद मिख़ाईल अवेर्यानिच उनसे मिलने आया। वह अपने साथ चाय का एक पैकेट और खाने के लिए आध सेर मीठी टिकियाँ लाया था। दार्या भी उन्हें देखने आयी थी। वह घंटे भर तक उनकी चारपाई की बग़ल में खड़ी देखती रही। उसके चेहरे पर वही

अव्यक्त वेदना-झलक रही थी। डॉक्टर ख़ोबोतोव उन्हें देखने आया। वह अपने साथ पोटेशियम ब्रोमाइड की एक बोतल लेता आया था और उसने निकीता को वार्ड में किसी वस्तु से धुआँ देने के लिए कहा।

साँझ होते होते, आन्द्रेई येफ़ीमिच लकवे से मर गये। पहले उन्हें बुख़ार जैसी सर्दी और मतली लगी फिर कुछ ऐसा लगा कि जैसे उनके सारे शरीर में कोई घृणास्पद चीज़ फैलती जा रही है—उनकी उँगलियों की पोरों तक। उन्हें लगा जैसे यह उनके पेट से उठकर उनके सिर में पहुँच रही है और उनकी आँखों और कानों में घुस रही है। हर चीज़ उन्हें हरी नजर आने लगी। आन्द्रेई येफ़ीमिच जान गये कि यह उनका अन्त है और उन्हें याद आया कि इवान दिमीत्रिच, मिख़ाईल अवेर्यानिच तथा लाखों और लोग अमरत्व में विश्वास करते हैं। मान लो ऐसी भी कोई बात हो? लेकिन अमरत्व के लिए उन्हें कोई इच्छा मालूम नहीं हुई और उन्होंने इस मसले पर केवल एक सरसरी तौर से ही विचार किया। बारहसिंगों का एक झुंड जिसके सम्बन्ध में वह पिछले दिन पढ़ रहे थे, उनकी स्मृति से गुज़रा, यह उन्हें असाधारण रूप से सुन्दर और शोभामय मालूम हुआ। इसके बाद एक देहाती औरत ने एक रजिस्टर्ड-पत्र को लिए हुए अपना हाथ उनकी ओर बढ़ाया...मिख़ाईल अवेर्यानिच ने कुछ कहा। इसके बाद हर वस्तु अदृश्य हो गयी और आन्द्रेई येफ़ीमिच की चेतना सदैव के लिए समाप्त हो गयी।

दो चाकर आये जिन्होंने उनकी बाँहों और टाँगों से पकड़कर उन्हें प्रार्थनागृह में पहुँचा दिया। वहाँ वह मेज़ पर आँखें खोले पड़े हुए थे और रात में चाँद की रोशनी उनके शरीर पर पड़ रही थी। दूसरे दिन सुबह सेर्गेई सेर्गेइच पहुँचा। ईशु मसीह के सलीब के समक्ष उसने बड़ी कर्तव्यपरायणता से प्रार्थना की और अपने पहले के प्रधान की आँखें बन्द कर दीं।

इसके दो दिन बाद आन्द्रेई येफ़ीमिच दफ़नाये गये। सिर्फ़ मिख़ाईल अवेर्यानिच और दार्या अन्त्येष्टि संस्कार में उपस्थित थे।

□□